स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्री महन्त – उत्तम आश्रम, (आचार्यपीठ) नागौरी द्वार के बाहर, कागा तीर्थ मार्ग
जोधपुर – 342006 सम्पर्क सूत्र – फैक्स © 0291 - 2547024

श्री अचलोत्तम वार्षिक दीक्षा पर्वोत्सव स्मारिका

का विषयानुक्रमणिका दर्शन

सूचीपत्र

साहित्यक चेतावनी ! सावधान !!

पुस्तक	पंजीयन
१. हरि सागर (स्वामी हरिराम वैरागी कृत)	L 5590/71
२. वाणी प्रकाश (छः महात्मा का अनुभव)	L 5597/71
३. अचलराम भजन प्रकाश	L 5598/71
४. सत्यवादी वीर तेजपाल	L 5603/71
५. भारतीय समाज दर्शन	L 5604/71
६. उत्तमराम भजन प्रकाश	L 5605/71
७. नशा खण्डन दर्पण	L 5607/71
८. विश्वकर्मा कला दर्शन (तीन भाग)	L 6860/74
९. पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन)	L 6871/74
१०. आदर्श शिक्षा (एकांकी)	L 6984/75
११. राम रक्षा अनुष्ठान संग्रह	L 6985/75
१२. आचार्य सुबोध चरितामृत (स्मृति शोध)	L 7093/75
१३. अवधूत ज्ञान चिन्तामणि	L 9754/81
१४. रामप्रकाश शब्दावली	L 9755/81
१५. रामप्रकाश शब्द सुधाकर (दो भाग)	L 9756/81
१६. गूढार्थ भजन मंजरी	L 9764/81
१७. सुगम उपचार दर्शन	L 9765/81
१८. रत्नमाल चिन्तामणी	L 9789/81
१९. एक लाख वर्षीय कैलेण्डर	L 9757/81
२०. उम्मेद आनन्द बोध प्रकाश	L 10000/82
२१. उमाराम अनुभव प्रकाश (Assign)	L 321/60
२२. सन्तदास अनुभव विलास	L 13047/92
२३. उत्तम बाल योग रत्नावली	L 13048/92
२४. उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली	L 13049/92
२५. तिलक प्रबोध दर्शन (तीन भाग)	L 13706/93
२६. उत्तमराम अनुभव प्रकाश	L 14199/94
२७. अभिनव कृति दर्पण (चार भाग)	L 15216/95
२८. उत्तम वाणी प्रकाश (सुखराम दर्पण)	L 17180/98
२९. सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)	L 18653/99
३०. सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)	L 18654/99
३१. आ. संतवाणी शब्दकोष	ISBN-81-88138-00-2
३२. सुखराम साकेत श. स्मारिका	ISBN-81-88138-02-9
३३. दैनिक चिन्तन-दैनन्दिनी	ISBN-81-88138-03-7
३४. अचलोत्तम दीक्षा स्मारिका	ISBN-81-88138-04-5

श्री रामानन्दाय नमः

श्री हरिरामाय नमः

श्री वैष्णव गूदड़गद्दी आचार्यपीठ जोधपुर के चतुर्थ-पंचम पीठाधिश्वर

अनन्त श्री स्वामी अचलरामजी महाराज एवं श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज "वैरागी"

(आषाढ सुदि चतुदर्शी)

(ज्येष्ठ सुदि महेश नवमी)

का

दीक्षाशताब्दी वर्ष एवं वार्षिक दीक्षापर्व

अर्थात्

वि. सं. १९५८ (ईसवी १९०१) - से - वि.सं. २०५८ (२००१ ईसवी)

एवं

वि. सं. १९६४ (ईसवी १९०७) - से - वि. सं. २०६० (२००३ ईसवी)

की

दीक्षाशती के स्मृति वर्ष

में

आचार्यपीठ परिचय

श्री अचलोत्तम वार्षिक दीक्षा पर्वोत्सव स्मारिका
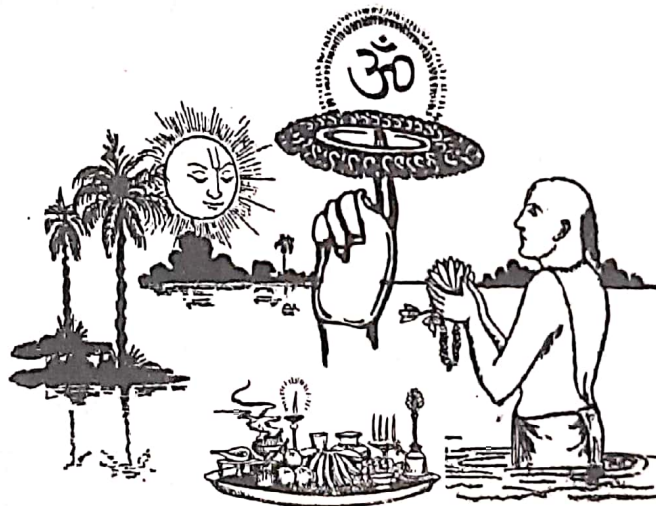
वर्तमान षष्ठम पीठाधिश्वर

दर्जनाधिक्य सन्त वाणी सत्साहित्यक ग्रन्थों के सृजेता एवं सम्पादक

ब्रह्मवेता अनन्त श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज "वैरागी" के परम कृपापात्र

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्री महन्त – उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ), कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर – 342006

श्री जानकी वल्लभो विजयतेतराम | आद्यजगद्गुरु रामानन्दाय नमः

संरक्षक / संस्थापक / सम्पादक

स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्री महन्त – उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) जोधपुर. सम्पर्क सूत्र – फैक्स ✆ 0291 - 2547024

संकलन / सम्पादन / सौजन्य / प्रकाशन / प्रसारित / उपलक्ष

वि.सं. २०६० ज्येष्ठ सुदि महेशनवमी, सोमवार दिनांक ९ जून २००३ ईसवी

ISBN - 81-88138-04-5 ©

●●●

श्री स्वामी अचलरामजी महाराज की भेषदीक्षा शती

वि.सं. १९५८ से वि.सं. २०५८ - सन् १९०१ से २००१ ईसवी

एवं

श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज का वार्षिक दीक्षा पर्वोत्सव

वि.सं. २०६० ज्येष्ठ शुक्ल महेशनवमी वो गंगादशमी दिनांक ९-१० जून २००३ ई.

हरिरामाब्द	जीयारामाब्द	सुखरामाब्द	अचलरामाब्द	उत्तमरामाब्द
२४८	२४६	१६२	१३२	१३४

❀ ❀ ❀

शब्दावरण चित्रण

पारा कम्प्यूटर्स, हाथीराम का ओडा, जोधपुर ✆ 0291 – 2543566

मुद्रक विष्णु आफसेट प्रिंटर्स, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 फोन 23268103, 23270561

सम्पादक की श्यामजन लेखनी द्वारा -

नमस्ते मन्त्र दात्रे च नमस्तेऽथ जगद्गुरो। नमस्ते ध्येय रूपाय, नमस्ते ज्ञेय रूपिणे ॥

मंगलमय जगत में आध्यात्मिक प्रणाली की पारम्परिक रचना में सर्वाधिक सतगुरु का महात्म्य है। जो **अचल** (परमात्मा) है, वही परम पावन **उत्तम** है, उन्हीं पराशक्ति का अपरा में अवतरण होना सहज शक्ति का प्रदर्शन है। वही परमगुरु श्री अचलरामजी एवं सतगुरु श्री उत्तमरामजी के स्वरूप में प्राक्ट्य हुए। उन्हीं की **श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय की सन्तदासोत गूदड़गद्दी जोधपुर** गुरु-शिष्य परम्परा में शिक्षित-दीक्षित होना अपने आपमें **अचलोत्तम** समैक्य विशेषण धारक सौभाग्यशील है। उन्हीं की **दीक्षा शताब्दी** की स्मृति संग **वार्षिक दीक्षा पर्वोत्सव** के पावन अवसर पर प्रस्तुत स्मारिका का **प्रकाशन** दिया जा रहा है।

पूर्वात्पर पद्धति के अनुसार सतगुरु शरणापन्न बिना व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक मर्यादित ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। प्रथमतया अपने आराध्य सतगुरु के माध्यम से पूर्वाचार्यों तक परिचय-पूजन किया जाना स्वाभाविक होगा। इसी कारण **प्रतिवर्ष ज्येष्ठ सुदि महेश नवमी** को **आत्म–परमात्म चर्चा** के समावेश में सतगुरु के परा-अपरा (निर्गुण-सगुण) स्वरूप के गुणगान भजन-सन्ध्या, सन्त वचनामृत/प्रवचनों में रात्रि सतसंग करते दूसरे दिन **ज्ञान–गंगा** के अवतरण स्रोत गंगादशमी को **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा)** में निराकार में विलय की याद में पूर्वाचार्य-समाधि पूजन पद्धति के अवान्तर साकार गद्दी-खड़ाऊ की पूजा की जाती है।

पूर्वाचार्यों की समाधियों में उपयुक्त कारण रूप प्रथमतया सतगुरु **श्री स्वामी उत्तमरामजी के स्मृति स्थल** क्रमोन्नत पूजनोपरांत आदि गद्याचार्य अनन्त **श्री स्वामी हरिरामजी, जीयारामजी, नेनुरामजी** का क्रमशः पूजन हरिराम उद्यान (शिष्य-परशिष्यों को याद) करते पांच समाधियाँ (जो नेनुरामजी के शिष्य-परशिष्य की हैं) का पूजन किया जाता है। आगे इसी शृंखला में **श्री जमनादास जी एवं स्वामी सुखरामजी महाराज** का समाधि पूजन, **अचलरामजी, अचलनारायण जी, साध्वी चतुरीबाई** के बाद **सुखराम वाटिका** में पंच पुष्प समाहित **जीयारामजी की साल के पीछे पांच समाधियों** की पूजा करते हुए नीचे **साकेत शताब्दी कीर्ति स्तम्भ** पर पुष्प वर्षाते **श्री रणछोड़दास जी, छोटे हरिरामजी** की छतरियों पर पुष्पार्चन करते अलविदा होते हैं। यह सारा पूजा क्रमबद्ध बांये से दाँये परिक्रमा रूप किये जाने से सहजतया सभी पूर्वाचार्यों की पूजा के साथ प्रदक्षिणा सम्पन्न हो जाती है।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे ॥

परम पावन कार्य प्रवाह में जिन भावुक भक्तों द्वारा ज्ञात-अज्ञात हाथ से हाथ मिलाकर सेवा का परिचय दिया गया है, वे सभी धन्यवाद के परमपात्र हैं। अतः असावधात् रही समस्त प्रकार से कर्णापाटव त्रुटियों/अशुद्धियों की शुद्धि कामना करते हैं और सर्व हितैषीजनों के लिये समृद्धिशील मंगलकामनाएं करते हुए साधुवाद देते हैं।

विश्व हितेच्छु

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ)
कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर
अक्षय तृतीया, रविवार, २०६० वि. सं.

सम्पर्क सूत्र एवं फैक्स
☎ २५४७०२४

स्वामी रामप्रकाशाचार्य "अच्युत"
श्रीमहन्त
(साहित्यान्वेषक)

दान करके उसे गुप्त रखना चाहिये और घर आये शत्रु का भी सत्कार करना चाहिये।

श्री सतगुरु वाणी मंगलाचरण

सांय - प्रार्थना

आचार्य पीठ की नित्य पाठ श्री आरती

निशि दिन सन्त परम पद जोई, आरती करे सो केवल होई ।।टेर।।

पहली आरती सतगुरु सेवा, तन मन भेंट धरूँ सिर देवा। दूजी आरती रसना गाया, जल पलटाय अमि रस पाया ।।१।।

तीजी आरती कण्ठ में वासा, भ्रम कर्म व्यापे नहीं आसा। चौथी आरती हिरदय हुलासा, रेण मिटी हुआ प्रकासा ।।२।।

पाँचवी आरती नाभि गुँजासा, अष्ठ कली पर भँवर विलासा। छठ्ठी आरती पश्चिम दिशासूँ, दे परिक्रमा शीश नमासूँ ।।३।।

सातवीं आरती त्रिकूटी वासा, झिलमिल ज्योति हुआ प्रकाशा। आठवीं आरती गगन घुराणा, अमी वर्षाय स्नान कराणा ।।४।।

नवमी आरती नौ दरवाजा, खिड़की बन्द करे सोई राजा। दशमी आरती दशवें द्वारे, अरस परस मिले राम पियारे ।।५।।

ग्यारवी आरती परम प्रकाशा, रूप-वर्ण बिन नाम निराशा। बारहवीं आरती ब्रह्म विलासा, संत निर्भय घर वासा ।।६।।

दोहा - मन पवना पहुँचे नहीं, सुरता करत हुलास। "हरिराम" कर वन्दना, ब्रह्म ज्योति प्रकाश ।।

अनन्त श्री रामजी महाराज की जय। चार सम्प्रदाय बावन द्वारा की जय। चार धाम सप्तपुरी की जय। अनन्त श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य भगवान की जय। सर्वश्री स्वामी अग्रदासजी महाराज की जय। श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज (गूदड़धाम) की जय। श्री स्वामी हरिरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी जीयारामजी महाराज की जय। श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी अचलरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज की जय।जागती ज्योति (वर्तमान गद्दीधर) श्री स्वामी रामप्रकाशजी महाराज की जय।

नित्य वन्दन-शायं सन्ध्या पाठ

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भव भय दारूणम् । नव कंज लोचन, कंज मुख कर, कंज पद कंजारूणम् ।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरद सुन्दरम् । पट पीत मानहु तड़ित रूचि शुचि, नौमि जनक सुता वरम् ।।१।।
भजु दीनबन्धु दिनेश, दानव-दैत्यवंश निकन्दनम् । रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ।।
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू, उदार अंग विभूषण । आजानु भुज शर चाप धर, संग्रामजित खर दूषणम् ।।२।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन रंजनम् । मम हृदयकंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनम् ।।
मन जाहि राचेऊ, मिलहि सो वर, सहज सुन्दर साँवरो । करूणा निधान सुजान शील, सनेहु जानत रावरो ।।३।।
एहि भाँति गौरि अशीश सुनि, सिय सहित हिय हर्षित अली । तुलसी भवानि हि पूजि पुनि पुनि, मुदित मन मन्दिर चली ।।
सोरठा–जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरष न जाय कहि । मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ।।४।।
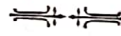
शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् । विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभागंम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम् । वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्व लोकैक नाथम् ।।
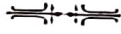
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।
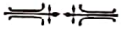
नीलाम्बुज श्यामल कोमलांग सीता समारोपित वाम भागम् । पाणौ महा सायक चारू चापं नमामि राम रघुवंश नाथम् ।।१।।
लोकाभिरामं रणरंग धीरं राजीव नैत्रं रघुवंश नाथम्। कारूण्य रूपं करूणा करन्तं रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।२।।
सीताकान्त समारम्भां रामानन्दाचार्य मध्यमाम् । अस्मदाचार्य पर्यन्ताम्, वन्देऽहं गुरु परम्पराम् ।।३।।

दोहा छन्द

लिव लागी परब्रह्म से, रति न खण्डे तार । रामानन्द आनन्द में, गुरु गोविन्द आधार ।।१।।
भक्ति भक्त भगवन्त गुरु, चतुर्नाम वपु एक । तिन के पद वन्दन किये, नासत विघ्न अनेक ।।२।।
अनुभव पद प्रकाश के, दायक सतगुरु राम । अनन्त कोटि जन साहि की, ताहि करूँ प्रणाम ।।३।।
हरि वन्दन गुरु वन्दना, वन्दन सब ही सन्त । "हरिराम" वन्दन कियों, दरसेगा निज तन्त ।।४।।

छप्पय छन्द

"जीयाराम" सतगुरु मिल्या, भिल्या सन्तन में जाय । सन्तन संग भक्ति मिली, भक्ति से हरि पाय ।।
भक्ति से हरि पाय, हरि की क्रान्ति कैसी । अनन्त सूर की ज्योति जो, नहीं चरणन नख जैसी ।।
"सुखराम" दास ता चरण में, निर्भय रह्या समाय । "जीयाराम" सतगुरु मिल्या, भिल्या सन्तन में जाय ।।५।।

कुण्डलिया छन्द

हरिराम ज्ञान गुरु गादि, सदा अखण्ड अभंग । तिन के शिष्य जीयारामजी, निश्चल मति अथंग ।।
निश्चल मति अथंग, तिन के शिष्य सुखरामा । जीवों तारण जहाज, महा निज सुख के धामा ।।
"अचलराम" सुख शरण में, सैलानी कही अद्वय खरि । "हरिराम" गूदड़ गुरु गादि, सदा अखण्ड रहे हरि ।।६।।

दोहा छन्द

वन्दन उत्तम वन्दना, वन्दन अनन्तों वार । सतगुरु स्वामी सन्त को, "उत्तमराम" बलिहार ।।७।।

कुण्डलिया छन्द

हरिराम गुरुदेव को, जीयाराम प्रणाम । सुख सागर सुखरामजी, अचलराम निष्काम ।।
अचलराम निष्काम, अद्वय अनन्त अपारा । उत्तमराम सोई तत्व लहि, भ्रान्ति भेद विडारा ।।
"रामप्रकाश" निष्ठा करी, गुरु गद्दी विश्राम । बारम्बार कर जोड़ के, नमो नमो हरिराम ।।८।।

दोहा छन्द

वार वार वर माँगहू, हर्ष देहु श्री रंग । पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ।।९।।
सिद्ध तारे तन आपणो, सन्त उधारे देश । भूमि पवित्तर "सन्तदास", सन्त चरण परवेश ।।१०।।

सतगुरु महाराज की जय
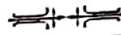
प्रातःकाल संध्या प्रार्थना नित्य पूजा-आरती

आरती ! गुरु की सदा सुखदाता, महिमा अगम वेद यों गाता ।।टेर।।
आपा मेट आप को लखता, सतगुरु सोई सत का वक्ता ।।१।।
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्म का वेता, ज्ञान विज्ञान दान नित देता ।।२।।
सतगुरु अगम निगम का ज्ञाता, भिन्न भिन्न अर्थ सेन समझाता ।।३।।
दे उपदेश रू भ्रम मिटाता, भवसागर से पार पठाता ।।४।।
"उत्तमराम" संत उलट समाता, उलट समाय परम पद पाता ।।५।।

दोहा – उत्तम जोगी ऊगतो, राम भजन भरपूर । "उत्तमराम" की एकता, हरदम राम हजूर ।।१।।
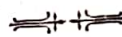
अनन्त श्री रामजी महाराज की जय। चार सम्प्रदाय बावन द्वारा की जय। चार धाम सप्तपुरी की जय। अनन्त श्री जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य भगवन की जय। सर्वश्री स्वामी अग्रदासजी महाराज की जय। श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज (गूदड़धाम) की जय। श्री स्वामी हरिरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी जीयारामजी महाराज की जय। श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी अचलरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज की जय। जागती ज्योति (वर्तमान गद्दीधर) श्री स्वामी रामप्रकाशजी महाराज की जय।

प्रातः कालीन प्रार्थना

भए प्रगट कृपाला, दीनदयाला, कौसल्या हितकारी । हरषित महतारी, मुनि मन हारी, अद्भुत रूप विचारी ।।
लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा, निज आयुध भुज चारी । भूषन बनमाला, नयन विसाला, सोभा सिंधु खरारी ।।२।।
कह दुई कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता । माया गुन ग्यानातीत अमाना, वेद पुराना भनन्ता ।।
करूणा सुख सागर, सब गुण आगर, जेहि गावहिं श्रुति सन्ता । सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयउ प्रगट श्री कन्ता ।।३।।

ब्रह्माण्ड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति वेद कहै। मम उर सो वासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसकाना, चरित बहुत विधि कीन्ह चहै। कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।४।।
माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा। कीजै सिसु लीला, अति प्रिय सीला, यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि वचन सुजाना, रोदन ठाना, होइ बालक सुरभूपा। यह चरित जो गावहि, हरिपद पावहि, ते न परहि भवकूपा ।।५।।
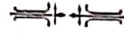
दोहा – विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार। निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार ।।६।।

– रामरचरितमानसं वाल काण्ड दोहा १६१ से १६२।।

छप्पय छन्द

जय जय मीन, वराह, कमठ, नरहरि, बलि वामन। परसुराम, रघुवीर, कृष्ण कीरति जग पावन ।।
बुद्ध, कल्कि अरू व्यास, पृथु, हरि, हंस, मन्वन्तरि। यज्ञ, ऋषभ, हयग्रीव, ध्रुव वर देन धन्वन्तरि ।।
बद्रीपति, दत्त, कपिलदेव, सनकादि करूणाकरो। चौबीस रूप लीला रूचिर, श्री अग्रदास उर पद धरो ।।१।।

दोहा छन्द

लिवलागी परब्रह्म से, रति न खण्डे तार। रामानन्द आनन्द में, गुरु गोविन्द आधार ।।२।।
भक्ति भक्त भगवन्त गुरु, चतुर्नाम वपु एक। तिनके पद वन्दन किये, नासत विघ्न अनेक ।।३।।
अनुभव पद प्रकाश के, दायक सतगुरु राम। अनन्त कोटि जन साहि की, ताहि करूँ प्रणाम ।।४।।
"हरिराम" गुरुदेव को, वन्दन वार हजार। नमो निरजंन रामजी, ब्रह्म बतावण हार ।।५।।

छप्पय छन्द

गुरु के चरणा वंदि, देव तिन सब ही वन्दे। विधि हरि हर है तुष्ट, जान निश्चय निर सन्दे ।।
गुरु मानुष तन जानि, असुया करे जु कोई। उभय लोक ते हीन, सुरनि को द्रोही सोई ।।
गुरु वंदिय परब्रह्म लखि, कहि सन्त निगम स्वछन्दनम्। सच्चिदानन्द पर ब्रह्मयं, श्री 'जीयाराम' गुरु वंदनम् ।।६।।

कवित छन्द

राम सुखरामजी को, दिन ज्यों प्रकाशी जान्यो। गुरु गम पाय परं, पदार्थ सो मान्यो है ।।
ताहि शरणागति भो, अचल आनन्दी रूप। भूपन को भूप ओ, अनूप रंग आन्यो है ।।
दिल में वैराग दौड़, काहू सों सनेह नाही। कुटुम्ब परिवार जग, मिथ्या कर जान्यो है ।।
थोड़े से दिनन माहि, संगत को सार लय। पाय प्रभुताई निज, ब्रह्म पहिचान्यो है ।।७।।
साधु संग आय करि, सत्याऽसत्य जान करि। जनम सफल करि, भव तर जाईये ।।
इन्द्रियों को घेरि करि, मनहि को फेरि करि। स्वरूप में जोरि करि, ध्यान को लगाईये ।।
ज्ञान को विचार करि, देह बुद्धि त्याग करि। आतमा को जान करि, मुक्त होय जाईये ।।
गुरु गम पाय करि, मन को ठैराय करि। अचल अचल होय, ब्रह्म में समाईये ।।८।।

दोहा – उत्तम योगी ऊगतो, राम भजन भरपूर। 'उत्तमराम' की एकता, हरदम राम हजूर ।।६।।

सन्तोषवान सदा सुखी है और तृष्णावान प्राणी अति दरिद्र एवं सदा दुःखी है।

कुण्डलिया छन्द

राम रूप सतगुरु सदा, निर्गुण ब्रह्म समान । गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु शिव, सर्गुण देव शुद्ध जान ।।
सर्गुण देव शुद्ध जान, करण कारण सब आपा । तरण तारण गुरु आप है, समर्थ सनातन व्यापा ।।
केवल हरि गुरु एक है, व्यापक आठोयाम । "रामप्रकाश" गुरुदेव को, है प्रणाम श्री राम ।।१।।

गुरु गुप्त अति गुप्त है, अति समीप पहिचान । ज्योतिर्मय चक्षु रमें, लखे नहीं अनजान ।।
लखे नहीं अनजान, तुरिय ब्रह्म अनुपा । रु कहता रुपातीत है, गुणातीत गुण गूपा ।।
परम प्रेरक साक्षी सदा, पय में घृत व्यापक हरु । "रामप्रकाश" वन्दन करे, बारम्बार सत सत गुरु ।।२।।

गुणातीत "गु" ज्ञान वत्, चिद् वपु स्वयं प्रकाश । रुपातीत "रू" तुरिय है, आनन्द सत्य विलास ।।
आनन्द सत्य विलास, खासा निगम कहावे । आगम सन्त जन कथन कर, विविध भांति से गावे ।।
गुण गोचर पावे नहीं, निष्प्रपंच अतीत । "रामप्रकाश" वन्दन करे, सो उत्तम गुणातीत ।।३।।

सनातन श्री वैष्णव सो, अच्युत इष्ट हनुमान । वशिष्ठ पाराशर व्यास सो, रामानन्द परमान ।।
रामानन्द परमान, अनन्तानन्द कृष्ण पयाहारी । अग्रदास अग्रद्वार के, सन्तदास दाँन्तड़ा सारी ।।
कृपाराम की परम्परा, गंगाराम हरिराम गन । उत्तम "रामप्रकाश" गुरु, पीढि नमों सनातन ।।४।।

दोहा – सिद्ध तारे तन आपनो, सन्त उधारे देश । भूमि पवित्र सन्तदास, सन्त चरण परवेश ।।
धर्म न अर्थ न काम रूचि, गति न चहों निर्वान । जनम जनम रति राम पद, यह वरदान, न आन ।।

श्री सतगुरु भगवान की जय ।

उत्तम गुरु परम्परा नित्य आरती

ॐ जय गुरुदेव हरे, स्वामी सत गुरु देव हरे । आर्त जिज्ञासु ध्यावे (हित से) संकट दूर करे ।।टेर।।
"**सन्तदास**" संशय को काटे, समता रूप धरे । "**कृपाराम**" कृपा के सागर, प्याला ज्ञान भरे ।।१।।
"**केवलराम**" केवल मत पूर्ण, भ्रान्ति भ्रम हरे । "**चतुरदास**" चतुर मति शोधन, निर्मल बोध झरे ।।२।।
"**दौलतराम**" विश्व की दौलत, अखण्ड भण्डार सरे । "**गंगाराम**" गंगवत निर्मल, पाप रू ताप वरे ।।३।।
"**हरिराम**" हरे अघ सारा, शिव के रूप खरे । "**जीयाराम**" जीवन गति मुक्ति, सांख्य वेदान्त तरे ।।४।।
सो "**सुखराम**" सर्व सुखसागर, सतचित आनन्द अरे । "**अचलराम**" अचल अज आतम, अनन्त अखण्ड छरे ।।५।।
"**उत्तमराम**" उत्तम सत केवल, अपना आप परे । गूदड़ ज्ञान वैराग्य साधना, भूमि अवतरे ।।६।।
रामानन्द स्वामी की गद्दी, सत अवधूत जरे । धीरज धारणा राघव प्रेम से, विशिष्ठाऽद्वैत करे ।।७।।
गुरु प्रणाली योग अनादि, जानत मुक्ति तरे । "**रामप्रकाश**" प्रणाम प्रेम से, हरदम ध्यान वरे ।।८।।

श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय का विशिष्टाऽद्वैत-सिद्धान्त

आद्य जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज स पूर्वापर परम्परा के पूर्वाचार्यों द्वारा प्रचल्लित शास्त्रीय विशुद्धता पूरक विशिष्ठाऽद्वैत सिद्धान्त की मान्यता है। विशिष्ठाऽद्वैत सिद्धान्त में ईश्वर, जीव और माया ये तीन तत्व माने जाते हैं। ये तीनों तत्व नित्य और सत्य हैं। निर्गुणमय विशेष गुण समूह की स्वामित्व सम्पन्नता से ब्रह्म सगुण और सविशेष है, समस्त हेय गुणों से सर्वथा रहित एवं अनन्त कल्याण गुणगण महार्णव है, ज्ञानानन्द स्वरूप है, सर्वज्ञ है, सर्व शक्तिमान और सर्वव्यापक है। (१) ब्रह्म ही जगत् का निमित कारण और उपादान कारण भी है। इसके प्रतिपादन के लिए मकड़ी से जाल की उत्पत्ति का दृष्टान्त दिया जाता है। (२) जीव चित् स्वरूप, सुखस्वरूप, निर्मल, निर्विकार अणु एवं अनन्त है। यह ईश्वर का नियम्य है, धार्य है, शेष है, सदा ईश्वर से परतन्त्र है तथा कर्मों का कर्ता-भोक्ता है। (३) माया त्रिगुणात्मिक अर्थात् सत्व-रज-तमोगुणमयी है। यह अनेक प्रकार के विकारों को उत्पन्न किया करती है। चिदचिदात्मक यावत् प्रपंच ब्रह्म के शरीर भूत है, ब्रह्म से पृथक् इनकी सिद्धि नहीं है। इनका ब्रह्म के साथ अपृथक् सिद्ध सम्बन्ध है। शरीर में जीव की सत्ता से जैसे शरीर की स्थिति है, वैसे ही १. परमात्मा की सत्ता से ही २. चित् (जीव) ३. अचित् (प्रकृति) की स्थिति है, ब्रह्म व्यापकत्व के कारण प्रकृति नित्य-सत्य है किन्तु परिवर्तनशील है।

परब्रह्म सब पदार्थो के अभ्यन्तर रहकर उनका नियमन करता है। ब्रह्म का शरीर होने से चिदाचिद् ब्रह्म के विशेषण हैं और ब्रह्म इनका विशेष्य है। इसी से ब्रह्म को चिदाचिद् विशिष्ठ भी कहते हैं। सृष्टि के पूर्व प्रलयकाल में चित् (जीव) और अचित् 'प्रकृति' दोनों ही सूक्ष्म अवस्था में रहते हैं। इसी सूक्ष्मावस्था को **कारणावस्था** कहते हैं। सृष्टिकाल में दोनों स्थूलावस्था को प्राप्त होते हैं। यही स्थूलावस्था **कार्यावस्था** भी कहलाती है। **कारणावस्थापन्न सूक्ष्म चिदाचिद् विशिष्ट ब्रह्म का कार्यावस्थापन्न स्थूल चिदाचिद् विशिष्ट ब्रह्म से अभेद है**, अद्वैत है। इसी से इस सिद्धान्त को '**विशिष्ठाऽद्वैत**' कहते हैं। इस सिद्धान्त में भगवत् प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट उपाय **भक्ति** है और भगवद्धाम में भगवान के चिरदास के रूप में अनन्त आनन्द की प्राप्ति ही परमश्रेय है। इस सिद्धान्त के प्रथम विवृत्तिकार भगवान बोधयनाचार्य जी हैं तथा प्रवर्तक आचार्यद्वय श्री रामानुजाचार्यजी एवं श्री रामानन्दाचार्य जी हैं। श्रीभाष्य एवं आनन्दभाष्य इनके भाष्य ग्रन्थ हैं। इन दोनों आचार्यो के सिद्धान्त एक होने से ही दोनों का एक ही सम्प्रदाय "लक्ष्मी सम्प्रदाय" तथा "श्रीसम्प्रदाय" है एवं एक ही सिद्धान्त 'विशिष्ठाऽद्वैत-सिद्धान्त' है। अन्तर केवल इतना है कि श्री स्वामी रामानुजाचार्य जी के रूप में श्री वैकुण्ठाधिपति श्रीपति भगवान श्रीमन्नारायण का प्रतिपादन किया है और श्रीस्वामी रामानन्दाचार्य जी ने श्रीसाकेताधिपति श्रीसीतापति भगवान श्रीरामचन्द्रजी का प्रतिपादन किया है, विद्वज्जगत् में दोनों की प्रतिष्ठा है। सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी में श्री रामानुज वेदान्त और श्री रामानन्द वेदान्त दोनों की परीक्षाऐं होती हैं। दोनों सम्प्रदायों के अनुयायी श्रीबाल्मीकि रामायण को गेय के रूप में स्वीकार करते हैं और विभीषण शरणागति को महत्व देकर भगवान श्रीराम -सतगुरु श्री की शरणागति करके परमानन्द को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मसूत्र के भाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्य का विशिष्ठाऽद्वैत-सिद्धान्त

शंकर से लगभग २५० वर्ष पश्चात् (जन्म विक्रम सं. १०७३ तदनुसार ई. सन् १०१६) श्रीरामानन्दाचार्य ने प्राचीन सिद्धान्त का मार्जित स्वरूप विशिष्ठाद्वैत सम्प्रदाय चलाया। इनका ब्रह्मसूत्र पर भाष्य 'आनन्दभाष्य' कहलाता है। प्रसिद्ध है कि ब्रह्मसूत्र पर एक अति प्राचीन व्याख्या 'वृत्ति' अथवा 'कृतकोटि' नाम से बौधायन ऋषि की बनायी हुई थी; किन्तु वह लुप्त हो चुकी थी; उसको टंकद्रमिड़, गुहदेव आदि पूर्व-आचार्यो ने संक्षेप किया था। उसके आधार पर श्रीरामानन्दाचार्य अपने आनन्दभाष्य को लिखा जाना अपने वेदार्थ-संग्रह में बतलाते हैं। "भगवान् बौधायन की विस्तीर्ण वृत्तिका जो पूर्व आचार्यो ने संक्षेप किया है, उनके मत-अनुसार सूत्रों का व्याख्यान किया जाता है।"

श्रीस्वामी रामानन्दाचार्य का विशिष्ठाऽद्वैत-सिद्धान्त - इस सम्प्रदाय का मत है कि शंकराचार्य का माया- मिथ्यात्ववाद और अद्वैत-सिद्धान्त दोनों झूठे हैं। (१) चित् अर्थात् जीव और (२) अचित् अर्थात् विषय, शरीर, इन्द्रियाँ आदि पाँचों स्थूल भूतों से बना हुआ भौतिक जगत् और (३) ब्रह्म, ये तीनो यद्यपि भिन्न है तथापि चित् अर्थात् जीव और अचित् अर्थात् जड़ जगत् ये दोनों एक ही ब्रह्म के शरीर हैं; जैसा कि अन्तर्यामी ब्राह्मण (बृह. उप. ३/७) में कहा है कि यह सारा बाह्य जगत् शरीर इत्यादि और जीवात्मा ब्रह्म का शरीर है और वह इनका अन्तर्यामी आत्मा है। इसलिये **चित्-अचित्-विशिष्ट ब्रह्म एक** ही है। इस प्रकार से विशिष्ट रूप से **ब्रह्म को अद्वैत प्राप्त होकर ब्रह्म के सदृश्य हो जाता है न कि ब्रह्मरूप**। पुरुषोत्तम, नारायण, वासुदेव और परमेश्वर ब्रह्म के पयार्यवाचक हैं। उपर्युक्त सारी बातों से सिद्ध होता है कि इस सम्प्रदाय में सगुण ब्रह्म अर्थात् अपर ब्रह्म=सबल ब्रह्म की प्राप्ति ही अपना लक्ष्य माना है, जो योग की सम्प्रज्ञात-समाधि का अन्तिम ध्येय हो सकता है।
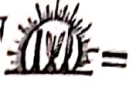
श्री वैष्णव सम्प्रदाय गुरु परम्परा परिचय

श्री रामानन्द सम्प्रदाय के महाविद्वान माहवैय्याकरण श्री पाणीनि मुनि द्वारा निर्मित अष्टाध्यायी के तृतीयाध्याय के तृतीय पाद के अट्ठारहवें (३/३/१८) "भावे" सूत्र से धञ् प्रत्यय करके "आतो युक चिणकृतोः" (७/३/३३) सूत्र द्वारा युगागम करने पर "सम्प्रदाय" सम और प्र उपसर्ग पूर्वक दा धातु से शब्द बनता है। अमरकोष के तृतीय काण्ड के "संकीर्ण वर्ग" के सातवें श्लोक में कहा है — आप्रच्छन्ननसथाम्राय सम्प्रदायः क्षयेक्षिया ११०३/७

विद्वद्वर श्री भानुदीक्षित ने उपयुक्त श्लोक की "रामश्रमी" व्याख्या में लिखा है — "द्वै गुरु परम्परागत सदुपदेशस्य" इसका अर्थ है — आम्नाय और सम्प्रदाय, इन दो शब्दों का अर्थ है — गुरु परम्परानुगतः सदुपदेशः। न्याय कोश में भी सम्प्रदाय शब्द का अर्थ लिखा है — "सम्प्रदायः गुरु परम्परागतः सदुपदेषः ।" अर्थात् एक से एक प्रत्येक को आगे से सत् शब्द ब्रह्म से नाद उपदेश दीक्षित परम्परानुगत चला आता समुवाय का धारा प्रवाह ज्ञान। मुख्यतः सम्प्रदाय का भावार्थ पर्याय है — कोई विशेष धार्मिक मत, किसी मत के अनुयायियों की मण्डली, देने वाला, दाता, मार्ग, परिपाटी, रीति, चाल, पथ प्रभृत्य। किसी की वस्तु उसे देना या उनके पास पहुँचाना। मूलतः जीव के बोध स्वरूप को जगाने हेतु जीव-ईश्वर प्रकृति का मूल तत्व "आध्यात्मिक ज्ञान" परम्परानुगत धारा से चलता आया - अनादिकाल का परम प्रवाह देने वाला श्री सम्प्रदाय।

कलौ खलु भविष्यन्ति चत्वारः सम्प्रदायिनः। श्री, ब्रह्मा, रुद्र, सनकादि वैष्णव क्षिति पावनः ॥

श्री जगज्जननी जानकीजी से परिवर्तित श्री वैष्णव सम्प्रदाय के उपास्य देव श्री सीतारामजी है। गेय ग्रन्थ श्रीमद्वाल्मीकि रामायण तथा श्रेय विशिष्ठाऽद्वैत मन्त्रवर मन्त्रराज षड्ाऽक्षर युक्त परात्पर ब्रह्म भगवान साकेत स्वामी श्रीरामजी ध्येय स्वरूप माने जाते हैं। यह परम्परा वर्तमान समय में मूलरूप श्री वैष्णव रामनन्दाचार्यजी के नाम से राम नामी जानी जाती है। इसका समुचित — परिचय शोध ''आचार्य सुबोध चरितामृत'' नामक ग्रन्थ में उपलब्ध है। जो सज्जन पढ़ना चाहे वह शाखोपशाखा सम्पन्न ज्ञान प्राप्त करने हेतु ''उत्तम आश्रम'' उत्तम प्रकाशन, जोधपुर-6 से नियमानुसार मंगवा ले। यहाँ केवल सामान्य एवं सर्वमान्य प्रसिद्ध रूप से प्रमुख श्री आचार्य नामावली मय संक्षिप्त साहित्यक कृति परिचय प्रस्तुत की जा रही है।

श्री सम्प्रदाय के कीर्ति ध्वज परम आचार्य श्री

सीताकान्त समारम्भां श्री रामानन्दाचार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य (उत्तमरामाचार्य) पर्यन्तां वन्देऽहं गुरु परम्पराम्

प्रधानाचार्य श्री गुरू परम्परा परिचय
संक्षिप्त संशोधित

१. श्री मर्यादा पुरुषोत्तम परात्पर सर्वज्ञ पूर्णब्रह्म श्रीरामजी

साकेत प्रधान लोकलीला सम्पादनार्थ त्रेतायुग रघु संवत् में चैत्र शुक्ल ९ श्री रामनवमी को अवतरण। श्री अयोध्याजी में प्रादुर्भाव। पिता — श्री दशरथजी, माता — श्रीमती कौशल्या देवी। उपदेश — (१) श्री रामगीता (२) श्री राजधर्म प्रश्नावली आदि। (स्कन्द पुराण श्री रामसीता नित्य स्वरूप) "ममैकंशा जगत्यस्मिन् प्रति लोकमवस्थिताः" तत्तद्गुणाधिपतयो ब्रह्म विष्णु कपर्दिनः।

नोट - पूर्वापर परम्परा के लिये दृष्टव्य *आचार्य सुबोध चरितामृत* शोध ग्रन्थ — *ले. स्वामी रामप्रकाशाचार्य "अच्युत"*

२. श्री जगज्जननी श्री जानकी (सीताजी)

लोकलीला सम्पादनार्थ प्रादुर्भाव - त्रेतायुगस्थ वैशाख शुक्ल नवमी, जनकपुर धर्मान्तर्गत सीतामही (वर्तमान सीतामढ़ी, बिहार)। पिता — मिथलापति श्री जनकराज, माता — श्रीमती सुनयनाजी। उपदेश — (१) मैथिलीमहोपनीषद् (२) श्री सीताराम्भेद (३) दीन वात्सल्य आदि।
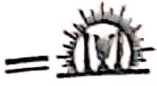
राम एवं परंब्रह्म राम एव परंतपः । राम एवं परं तत्वं श्री रामो ब्रह्म तारकम् ॥
सर्वेश्वरी यथा चाहं रामः सर्वेश्वरस्तथा । षड्गुणो भगवानरामः षड्गुणाढ्यं सनातनः ॥

३. विश्वगुरु परम प्रभु श्री हनुमन्तलालजी (वज्रांगी, बजरंग बली) महावीर हनुमान

आर्विभाव – कार्तिक कृष्णा १४ त्रेतायुगस्थ, मतान्तर में – चैत्रवदि १४ तिरोभाव – चिरंजीव, जन्मस्थल – कांचनगिरि, पिता – श्री केशरी जी, माता – श्री अंजनादेवी जी, सतगुरु – सर्वेश्वरी श्री जानकीजी, उपदेश – (१) श्री रामोपनिषद् (२) श्री सीताष्टाऽक्षर स्तोत्र (३) श्री रामतत्वम् (४) श्री रामसीतास्तवः । कृति – हनुमन्नाटक ।

४. विश्व रचयिता श्री जगद्गुरु ब्रह्माजी

सृष्टि के प्रारम्भकाल श्री विष्णु के नाभि कमलाग्रभाग में आविर्भाव, तिरोभाव - अतिमहाप्रलयान्त । पिता – श्री विष्णुजी का संकल्प, सतगुरु – हनुमानजी, उपदेश – (१) वृहद् ब्रह्म संहिता (२) आर्ष श्री रामस्तवः श्री रामगीता अर्थात् ब्रह्मकृत श्री रामस्तव (३) ब्रह्म सिद्धान्त संग्रह (४) अभ्युदायिकैर्ध्व देहिक स्तोत्र (५) गायत्री कवच (६) मारूति वन्दनम् (७) त्रैलोक्य मोहन श्री राम कवच (८) श्री सीतोपनिषदादि ।

५. जगद्गुरु श्रेष्ठ पद रत्नाकर महर्षि श्री वशिष्ठजी महाराज

आविर्भाव – ऋषि पंचमी (भाद्रपद शुक्ल) सत्ययुग, जन्मस्थान – ब्रह्मलोक, पिताश्री – ब्रह्माजी, तिरोभाव - महाप्रलय, सतगुरु – ब्रह्मदेव, कृतियाँ – (१) वशिष्ठ संहिता (पांचरात्र) (२) वशिष्ठ संहिता (ज्योतिष) (३) वशिष्ठ सिद्धान्त (ज्योतिष) (४) धनुर्वेद संहिता (नीति) (५) श्री सीतारामस्तव (६) आश्रम धर्म निरूपण (७) परात्पर श्री रामधाम वर्णन (८) सन्ध्योपासन विधि (९) वशिष्ठ हवन पद्धति (१०) वशिष्ठ स्मृति आदि ।

६. जगद्गुरु महर्षि पाराशरजी महाराज

आविर्भाव – आश्विन शुक्ल पूर्णिमा, वशिष्ठ काल (सत्ययुग), जन्मस्थल – वशिष्ठाश्रम, पिता – श्रीशक्तिदेव जी, माता – श्री अदृश्यन्तीजी, तिरोभाव – प्रलय, सतगुरु – वशिष्ठजी, कृतियाँ – वृहत् पाराशर होरा शास्त्र (२) वृहत् पाराशरीय धर्म संहिता (३) लघु पाराशरी (४) पाराशर स्मृति (५) पाराशरोदित वास्तु शास्त्र (६) पाराशरोदित नीतिशास्त्र (७) पाराशर संहिता (८) पाराशर पुराण (९) विष्णु महापुराण (पुराण रत्न) (१०) पाराशर गीता (११) ऋग्वेद के १०५ मन्त्रों के दृष्ठा ।

७. जगद्गुरु महर्षि वेद व्यासजी महाराज

आविर्भाव – त्रेतायुगस्थ आषाढ शुक्ल गुरु पूणिमा (व्यास पूर्णिमा), जन्म स्थल – कालपी (उ.प्र.), पिता – श्री पाराशर देव, माता – श्री सत्यवतीजी, सतगुरु – श्री पाराशरजी, तिरोहित – आषाढ सुदि १५, मतान्तर – चिरंजीव, रचित कृतियाँ – (१) ऋग यजु, साम, अथर के नामोचित वेद का वर्गीकरण (२) महाभारत नामक ऐतिहासिक महाकाव्य (३) भागवतादि अष्टादश पुराण (४) ब्रह्मसूत्र उत्तर मीमांसा (५) श्रीमद्भगवत् गीता का वर्गीकरण वृहदाकार (६) व्यास स्मृत्यादि ।

८. जगद्गुरु महर्षि विरक्तशिरोमणि श्री शुकदेवाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – द्वापुरयुगस्थ, श्रावण शुक्ल पूर्णिमा (रक्षा बन्धन), पिता – श्री व्यासदेव, माता – श्री पिंगलादेवी, सतगुरु – श्री वेदव्यासजी, तिरोभाव – चिरंजीव, कृतियाँ – (१) भागवत पुराण में द्वितीय स्कन्ध का पुरुष संस्थान वर्णनम् (२) स्कन्द पुराण में श्री रामगीता इत्यादि ।

९. जगद्गुरु श्री स्वामी पुरुषोत्तमाचार्यजी (महर्षि बोधायनजी)

आविर्भाव – विक्रम पूर्व ५६६ पौष कृष्णा १२, जन्मस्थल – बोधायन सर-मिथिला, पिता – श्री शंकरदत्तजी, माता – श्री चारूमतिजी, सतगुरु – शुकदेवाचार्यजी महाराज, तिरोभाव – विक्रम पूर्व ३२० पौष वदि १२, कृतियाँ – (१) वेदरहस्य (२) श्री पुरुषोत्तम प्रपत्ति (प्रपत्ति षट्कर्म) (३) श्री बोधायन गीता (४) श्री रामायण रहस्य (५) सप्तकाण्डार्थ सप्तकम् (६) श्री गायत्री रामायणम् (७) श्री रामायणसार (८) श्री बोधायन धर्म शास्त्र (९) गृह्यसूत्र (१०) धर्म सूत्र (११) सभी मीमांसा में श्री बोधायन वृत्ति आदि ।

१०. जगद्गुरु श्री स्वामी गंगाधराचार्य जी महाराज

आविर्भाव – विक्रम पूर्व ४८६ माघ कृष्णा ११, तिरोभाव – विक्रम पूर्व २८६, जन्मस्थल – प्रतिष्ठानपुर (प्रयाग),

पिता – श्री रामनारायण शुक्ल, माता – श्री कमलादेवी, सतगुरु – श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी, प्रबन्ध कृति – (१) साधन दीपिका (२) अनन्यता वेदनम् (३) श्री राम भगवत्यम् (४) स्वरूप सप्तकम् (५) रहस्यार्थ चतुष्ठयम् (६) श्री रामस्तव कलानिधि: (७) श्री बोधायन चतु: श्लोकी (८) श्री शुकार्य मतदीपिका प्रभृत्य ।

११. जगद्गुरु श्री स्वामी सदानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – विक्रम पूर्व ३३७ माघ शुक्ल ५ श्री पंचमी, तिरोभाव – विक्रम पूर्व ८० माघ सुदि ५ वसन्त पंचमी, जन्मस्थल – मयराष्ट्र (गढ मुक्तेश्वर), पिता – श्री दशरथरामजी, माता – श्री मरालिका देवीजी, सतगुरु – ज. गु. श्री गंगाधराचार्यजी, प्रबन्ध – (१) श्री राघवांघ्रि वर्णनम्, (२) वेदान्त सारस्तव:, (३) श्री बोधायन पंचकम् आदि, कृति (रचना) - श्री राम यज्ञ पद्धति: ।

१२. जगद्गुरु श्री स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. पूर्व ३६ वैशाख शुक्ल युगादि अक्षय तृतीया, तिरोभाव – वि. सं. २३६ ज्येष्ठ शुक्ल ११, जन्मस्थल – कामदगिरि परिक्रमा के निकट एक गाँव, पिता – श्री कल्पनाथ मिश्र, माता – पद्मजादेवीजी, सतगुरु – श्री सदानन्दाचार्यजी, प्रबन्ध – (१) श्री राम प्राप्ति पद्धति, (२) श्री सर्वेश्वर स्तव:, (३) सत्प्रबोधामृत, (४) प्रश्नोतरावलि आदि ।

१३. जगद्गुरु श्री स्वामी द्वारानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. १६६ फाल्गुण शुक्ल पूर्णिमा, तिरोभाव – वि. सं. ३७६ आषाढ शुक्ल ३, जन्मस्थल – सौराष्ट्र-द्वारिका, पिता – श्री हरिशंकरजी भट्ट, माता – श्री गोमतीदेवीजी, सतगुरु – ज. गु. श्री रामेश्वरानन्दाचार्यजी, प्रबन्ध – (१) प्रश्नोत्तरावली, (२) श्री रामचन्द्र दशक, (३) पाप वारक संग्रह, (४) परतत्व मीमांसा, (५) परिणाम विमर्श आदि ।

१४. जगद्गुरु श्री स्वामी देवानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. ३२६ वैशाख शुक्ल १०, तिरोभाव – वि. सं. ५२६ माघ पूर्णिमा, जन्मस्थल – प्रयाग, पिता – श्री मनमोहनजी तिवारी, माता – श्रीमती सरस्वतीदेवी जी, सतगुरु – ज. गु. श्री द्वारानन्दाचार्यजी महाराज, प्रबन्ध – (१) राघवाष्ठक (२) सदाचार प्रदीपिका (३) योग पंचक (४) ब्रह्म लक्षण संस्तव: (५) नमस्कार माला, कृति – श्री बोधायन वृत्तिसाद् (श्री प्रमिताक्षरावृत्ति) आदि ।

१५. जगद्गुरु श्री स्वामी श्यामानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. ४८६ आषाढ शुक्ल २, तिरोभाव – वि. सं. ६८६, जन्मस्थल – जगन्नाथपुरी, पिता – श्री दुर्गाचरणजी, माता – श्रीमती यशोदादेवीजी, सतगुरु – ज. गु. श्री देवानन्दाचार्य जी महाराज, प्रबन्ध – (१) श्री नवरत्नी, (२) रघुवर पंचक, (३) श्री सीतास्तव, (४) श्रुति तात्पर्य निर्णय, (५) परभक्ति निरूपण, (६) प्रभाकर मत निरास, (७) मन्त्रराज रामायण आदि ।

१६. जगद्गुरु श्री स्वामी श्रुतानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. ६३६ श्रावण शुक्ल सप्तमी, तिरोभाव – वि. सं. ८३६, जन्मस्थल – अहिल्या स्थान कमतौल दरभंगा (बिहार), पिता – श्री सीताकान्तजी, माता – श्रीमती कमलादेवीजी, सतगुरु – ज. गु. श्री श्यामानन्दाचार्य जी, प्रबन्ध – (१) श्रुति वेद्यस्तव, (२) श्रोतसिद्धान्त बिन्दु, (३) सर्व श्रुति समन्वय, (४) वेद विद्या समुच्य, (५) उपेयोपाय दर्पणादि ।

१७. जगद्गुरु श्री स्वामी चिदानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. ७४६ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, तिरोभाव – वि. सं. ८६६, जन्मस्थल – चित्रकूट, पिता – श्री सोमप्रदजी, माता – श्रीमती मालतीदेवी जी, सतगुरु – ज. गु. श्री श्रुतानन्दाचार्य जी, प्रबन्ध – (१) सच्चिदानन्द श्री रामष्ठकम्, (२) प्रतिबन्धक पंचकम्, (३) प्रमेयोद्देश भास्कर:, (४) चिदात्म प्रबोध आदि ।

कर्म पूर्तिर्भवेद् यस्य स्मरणात् कीर्तनात् तथा । वन्देऽहं सच्चिवानन्दं तं रामं सर्व सौख्यदम् ॥

१८. जगद्गुरु श्री स्वामी पूर्णानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. ८६६ वैशाख कृष्णा १३, तिरोभाव – वि. सं. २०६७ वैशाख शुक्ल १५ पूर्णिमा, जन्मस्थल – अवन्तिका (उज्जैन), पिता – श्री गोविन्ददेवजी, माता – श्रीमती नलिनीदेवी, सतगुरु – ज. गु. श्री चिदानन्दाचार्यजी, श्रीगठ पीठ, पंचगंगाघाट, काशी । प्रबन्धा – (१) श्रीराम पंचक, (२) बोध नक्षत्र माला, (३) श्री रामभक्ति विवेक, (४) मुक्ति मीमांसा, (५) मन्त्र रत्न रामायण, (६) श्री बोधायन मतदर्शादि ।

जो दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करता है, उसे देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर - सभी नमन करते हैं ।

१६. जगद्गुरु श्री स्वामी श्रियानन्दाचार्यजी महाराज

आविर्भाव – वि. सं. १०६६ वैशाख शुक्ल ६, **तिरोभाव** – वि. सं. १२०६, **जन्मस्थल** – जनकपुर, पिताश्री - पशुपति उपाध्यायजी, **माताश्री** – गंगादेवीजी, **सतगुरु** – ज. गु. श्री पूर्णानन्दाचार्यजी, **श्रीमठ पीठ**, पंचगंगा घाट, वाराणसी, **प्रबन्ध** – (१) भक्ति चिन्तामणि, (२) श्रिय श्रियः प्रपत्ति षट्कम्, (३) हनुमदष्टकम्, (४) सिद्धान्त विजय, (५) प्रमिताक्षरावृतिसार, (६) श्रौत प्रमेय चन्द्रिका आदि।

२०. जगद्गुरु श्री स्वामी हर्य्यानन्दाचार्यजी महाराज ''श्री वैष्णवाचार्य''

आविर्भाव – वि. सं. ११५६ आषाढ शुक्ल ११, **तिरोभाव** – वि. सं. १३५६, **जन्मस्थल** – कर्णपुर, **पिताश्री** – रामकुमार अवस्थी, **माताश्री** – सरस्वती देवीजी, **सतगुरु** – ज. गु. श्री श्रियानन्दाचार्यजी महाराज, आचार्य पीठ पंच गंगाघाट, श्रीमठ–काशी। **कृति** – (१) श्री सीताराम विंशति (२) भगवत्समाश्रय (३) प्रपत्र सर्वस्व (४) सिद्धान्त विंशति (५) श्री रामार्थ रत्न मंजुषा (श्री रामार्थ विंशति) (६) चरम मन्त्र रामायण (७) प्रमाण दीपिका आदि।

२१. जगद्गुरु श्री स्वामी राघवानन्दाचार्य जी महाराज ''श्री वैष्णवाचार्य''

आविर्भाव – वि. सं. १२०६ चैत्र शुक्ल ११, **तिरोभाव** – वि. सं. १३६६, **जन्मस्थल** – अयोध्याजी (वशिष्ठ कुण्ड), **पिताश्री** – अवधेश प्रसाद त्रिपाठी, **माताश्री** – अम्बिकादेवी जी, **सतगुरु** – ज. गु. श्री हर्य्यानन्दाचार्य जी, आचार्यपीठ पंचगंगा घाट श्रीमठ काशी **प्रबन्ध** – (१) श्री राघवेन्द्र मंगल माला, (२) श्री सीता मंगल माला, (३) श्रौत तत्व समुच्य, (४) श्री राघव प्राप्ति बोध, (५) वेद रहस्य भाष्य, (६) अनन्यता निवेदनम् आदि।

२२. जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज ''श्री परमाचार्य''

आविभाव – वि. सं. १३५६ माघ कृष्णा सप्तमी ७, **तिरोभाव** – वि. सं. १५३२ चैत्र शुक्ल रामनवमी ६, **जन्मस्थल** – प्रयागराज, **पिताश्री** – पुण्यसदनजी शर्मा, **माताश्री** – सुशीलादेवी जी, **सतगुरु** – ज. गु. श्री राघवानन्दाचार्य जी महाराज, आचार्य पीठ - श्री मठ, पंचगंगाघाट, काशी। **प्रबन्ध** – (१) आनन्द भाष्यकार, (२) त्रय भाष्यकर्ता, (३) रामानन्द दिग्विजय भास्कर। **शिष्य–प्रशिष्य** – **द्वादश भागवत** – १. अनन्तानन्द जी, २. सुखानन्दजी, ३. सुरसुरानन्दजी, ४. नरहरियानन्दजी, ५. पीपाजी ६. राम कबीरजी, ७. भावानन्दजी, ८. सेनाजी, ६. धनाजी, १०. रविदास (रमादास या रैदास) जी, ११. गालवानन्दजी, १२. योगानन्दजी, १३. साध्वी पदमावतीदेवी, १४. साध्वी सुरसरिदेवी। जिन्होंने भारतवर्ष मे मानवता के पाठ में श्री वैष्णव धर्म का सिद्ध प्रचार/प्रसार किया।

रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले।

२३. जगद्गुरु श्री स्वामी अनन्तानन्दाचार्यजी महाराज ''श्री वैष्णव''

अवतरण – वि. सं. १३६३, कार्तिक शुक्ला ११ देवोत्थानी, **जन्मस्थल** – महेशपुर (उत्तरप्रदेश) **पिता** – श्री विश्वनाथमणि त्रिपाठी, **माताश्री** – पार्वतीदेवी, **सतगुरु** – ज. गु. श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी, आचार्यपीठ **श्रीमठ** पंच गंगा घाट, काशी, **गद्दी** – वि. सं. १५३२, **साकेत धाम** – वि. सं. १५४० देवोत्थानी ११। **कृति** – (१) श्रीश्रुति सिद्धान्त भास्कर निर्णय, (२) सिद्धान्त दीपक, (३) सद्विद्यार्थ निर्णय, (४) अनन्त शिक्षामृत, (५) यतीन्द्राष्ठकादि।

२४. जगद्गुरु श्री स्वामी कृष्णपयाहारी (श्री कृष्णदासजी महाराज)

अवतरण – अज्ञात, गद्दी - वि. सं. १५४०, **साकेत** – वि. सं. १५४१, गलताधाम (जयपुर) पर अधिकार सिद्ध किया। **राजस्थान में श्री वैष्णव परम्परा का प्रचार–प्रसार।**

२५. जगद्गुरु श्री स्वामी अग्रदेवाचार्यजी महाराज

अवतरण – वि. सं. १५५३ फाल्गुन शुक्ल ५। श्री राम भक्ति परम्परा में मध्यकालीन मधुरोपासना के प्रवर्तकाचार्य एवं भक्त मालाकार नाभादासजी के प्रेरणा स्रोत, रामानन्दीय चतुर्दश द्वारा गद्दियो की मूल पीठ, रैवासा धाम के संस्थापक, श्री आपकी अनुभव गिरा (पद्यात्मक कुण्डलिया) मुख्य पीठ अग्रद्वार (रैवासा) से द्वाराचार्य **श्री स्वामी राघवाचार्य जी महाराज** द्वारा प्रकाशित है। अन्यान्य स्थानों से भी यत्र तत्र कई आवृतियाँ प्रकाशित/उपलब्ध है। **प्रमुख रचनाऐं** – (१) ध्यान मंजरी, (२) कुण्डलिया, (३) अग्रसागर, (४) अष्टयाम, (५) गुरु अष्टक, (६) प्रह्लाद चरित, (७) श्री सीताराम अष्टक, (८) श्रीमैथिली शरणाष्ठकम् (६) श्रीराम प्रपत्ति, (१०) रामजेवनार, (११) विश्व ब्रह्मज्ञान, (१२) हनुमानाष्ठक, (१३) हरिनाम माला, (१४) हरि प्रियानाम माला, (१५) हरिनाम प्रताप जस, (१६) रहस्यत्रय, (१७) रामसार संग्रह, (१८) श्रीराम मन्त्रराज परम्परा, (१६) चतुर्विशंव्य नामानि, (२०) ध्रुव चरित, (२१) श्री धरलीला आदि। साकेत धाम वि. सं. सहित सम्पूर्ण परिचय अज्ञात।

तन मन धन वाणी द्वारा निष्काम शुद्ध आचरण ही मन शुद्धि का हेतु है।

२६. श्री स्वामी नारायणदासजी (बड़े) महाराज (नाभादासजी) द्वाराचार्य "वैष्णव"

सतगुरु – श्री स्वामी अग्रदेवाचार्यजी महाराज, परिचय – अज्ञात, शिशु-शैशावस्था में नेत्रहीन दशा में अग्रदासजी महाराज को जंगल में मिले थे, गुरु कृपा से चक्षुदान जीवन मिला। आपका जीवन प्रवास गुरुधाम अग्रद्वारा में रहा। आपके द्वारा रचित ४२५ वर्षाधिक पूर्व रचना "भक्तमाल" का सटीक चार भाग श्री सुदामाकुट्टी वृन्दावन द्वारा तथा अन्यान्य कई सन्त-महन्तों से टीकाएँ व मूल ग्रन्थ यत्र तत्र से प्रकाशित हुए है। जो उपलब्ध एवं प्रसिद्ध है।

२७. श्री स्वामी प्रेम पठाजी महाराज "श्री वैष्णव" रमते राम

अवतरण – वि. सं. १५७५, दीक्षा – वि. सं. १५६५। सतगुरु – श्री स्वामी नाभादासजी महाराज, परिचय – अज्ञात।

२८. श्री स्वामी प्रेम मूराजी महाराज "रामावत" गिरनार में प्रवास

अवतरण – वि. सं. १५८५, दीक्षा – वि. सं. १६२०। सतगुरु – श्री स्वामी प्रेमपठाजी महाराज, परिचय – अज्ञात।

२९. श्री स्वामी रामदासजी महाराज "अग्रावत"

अवतरण – वि. सं. १६१०, दीक्षा – वि. सं. १६६५। सतगुरु – श्री स्वामी प्रेममूराजी महाराज, गिरनार निवासी परिचय – अज्ञात।

३०. श्री स्वामी नारायणदासजी महाराज (छोटे) "श्री वैष्णव"

अवतरण – वि. सं. १६५०, दीक्षा – वि. सं. १६६५। सतगुरु – श्री रामदासजी महाराज "वैरागी"। परिचय – अज्ञात, गिरिनार में स्थान।

३१. श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज "गूदड़"

आविर्भाव – योगसिद्ध देह पलट कर वि. सं. १६९६, दीक्षा – वि. सं. १७४२, तिरोभाव – वि. सं. १८०६, आचार्य पीठ – दान्तड़ा धाम प्रवास, आपकी रचना – सन्तदास अनुभव विलास नामक साखी ग्रन्थ का प्रकाशन, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री रामनरेशाचार्य जी महाराज "श्री मठ" वाराणसी के सान्निध्य में वि. सं. २०४८ माघ शुक्ला सप्तमी को उत्तम आश्रम जोधपुर उत्तम प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होकर श्री रामानन्द जयन्ति काशी समारोह के शुभ अवसर पर उत्तरप्रदेश राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी के करकमलों द्वारा विमोचन होकर लोकार्पण हुआ, जा उपलब्ध है। आपकी सिद्धियो के कारण "सन्तदासोत" आजीवन गुदड़ी धारण करने व गुदड़ी की सिद्धि से महाकुम्भ में भेष-भण्डारा देने के कारण "गूदड़" या "गुदड़िया" के नाम से सम्प्रदाय शाखा की पहिचान हुई।

३२. श्री स्वामी कृपारामजी महाराज (दॉन्तड़ा–पीठाधिश्वर – गद्दी व्यवस्थापक)

अवतरण – वि. सं. १७३५ अनुमानतः, साकेत – वि. सं. १८३२, भादव सुदि ७ शुक्रवारर, दॉन्तड़ा धाम सम्प्रदाय नियम संस्थापक (स्थापन कर्त्ता)।

३३. श्री स्वामी केवलरामजी महाराज "वैरागी" (दॉन्तड़ा)

अवतरण – परिचय अज्ञात, सतगुरु – श्री स्वामी कृपारामजी महाराज, गद्दीनशीनी – वि.सं. १८३२, साकेत – वि.सं. १८८७

३४. श्री स्वामी चतरदासजी (रामचतुरजी) महाराज "वैरागी" (दॉन्तड़ा)

परिचय – अवतरण अज्ञात, सतगुरु – श्री केवलराम जी महाराज "वैरागी", गद्दीनशीनी – वि. सं. १८८७, साकेत – वि. सं. १८९०

३५. श्री स्वामी दौलतरामजी महाराज "वैरागी" (दॉन्तड़ा)

परिचय – अज्ञात, सतगुरु – श्री चतुरदास जी महाराज "वैरागी", गद्दीनशीनी – १८९०, साकेत – वि. सं. १९४५

३६. श्री स्वामी गंगारामजी महाराज "वैरागी" (कोटा चम्बल घाटी)

अवतरण – वि. सं. १८१० अनुमानतः, जन्मस्थान – माण्डलगढ़, दीक्षा – १८३२, सतगुरु – श्री दौलतरामजी महाराज, वन विचरण – श्रीराम आश्रम, चम्बल घाटी (कोटा), जोधपुर गद्दी स्थापन – वि. सं. १९२६, गुरुधाम – दॉन्तड़ा।

३७. श्री स्वामी हरिरामजी महाराज "वैरागी" (जोधपुर गूदड़ गद्दी के प्रथम श्री महन्त)

अवतरण – वि. सं. १८१२, सतगुरु – श्री स्वामी गंगारामजी महाराज "वैरागी" दीक्षा – वि. सं. १८३७, साकेत – वि. सं. १९३३ चैत्र वदि २ सोमवार, हरिसागर एवं वाणी प्रकाश नामक ग्रन्थ में आपकी रचना उत्तम प्रकाशन द्वारा लोकार्पित एवं प्रसिद्ध उपलब्ध है।

३८. श्री स्वामी जीयारामजी महाराज ''वैरागी'' (जोधपुर गूदड़ गद्दी के द्वितीय पीठाधिश्वर)

अवतरण – वि. सं. १८१४, **सतगुरु** – श्री स्वामी हरिरामजी महाराज "वैरागी" **दीक्षा** – १८३८, **साकेत** – वि. सं. १६५४ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ रविवार, आपकी अनुभव वाणी पूर्व से लोकार्पित है। स्वामी रामप्रकाशाचार्य द्वारा **साकेत शताब्दी पर जीवन स्मारिका** में अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका प्रस्तुत की गई है।

३६. श्री स्वामी सुखरामजी महाराज ''वैरागी'' (जोधपुर गूदड़ गद्दी के तृतीय पीठाधिश्वर)

अवतरण – वि. सं. १८६८, **पिताश्री** – हरनारायण जी जलवाणिया, **माताश्री** – श्रीमती रूक्मादेवी, **जन्म स्थान** – रोल काजियान (नागौर), **सतगुरु** – श्री स्वामी जीयारामजी महाराज ''वैरागी'' **गुरु दीक्षा** – वि. सं. १८८६, **निर्वाण** – १६५६ फाल्गुन वदि ४ रविवार, **वाणी प्रकाश** *(छः महात्मा वाणी)* ग्रन्थ में आपकी वाणी पूर्व लोकार्पित प्रसिद्ध है। आपके मूल चौरासी पद की **अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका** का वृहद् ग्रन्थ **श्री उत्तमवाणी प्रकाश** अर्थात् **सुखराम दर्पण** एवं परिशिष्ठ भाग में **आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष** के साथ **सुखराम साकेत शताब्दी स्मारिका** आदि ग्रन्थों का साकेत शताब्दी समारोह पर श्री अग्रद्वाराचार्य **श्री स्वामी राघवाचार्यजी महाराज** के करकमलों से लोकार्पित है। टीकाकार - **स्वामी रामप्रकाशाचार्य ''अच्युत''**, उत्तम प्रकाशनाधिकार से उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) में उपलब्ध है।

४०. श्री स्वामी अचलरामजी महाराज ''वैरागी'' (जोधपुर गूदड़ गद्दी के चतुर्थ पीठाधिश्वर)

अवतरण – वि. सं. १६२८, **पिता** – श्री पोकररामजी कच्छवाह, **माता** – श्रीमती रामादेवी, **सतगुरु** – स्वामी सुखरामजी महाराज "गूदड़" **गुरुदीक्षा** – वि. सं. १६५८ आषाढ सुदि १४, **निर्वाण** – वि. सं. १६६६ द्वि. ज्येष्ठ वदि ७ शुक्र, आपके कई **रचना ग्रन्थ** अचलराम भजन प्रकाश, हिन्दुधर्म रहस्य, सन्ध्या विज्ञान, सुगम चिकित्सा आदि पूर्व लोकार्पित एवं उपलब्ध हैं।

४१. श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज ''वैरागी'' (पंचम पीठाधिश्वर गूदड़ गद्दी, जोधपुर)

अवतरण – वि. सं. १६२६ रामनवमी, **पिता** – श्री मीठारामजी गाडी, **माता** – श्रीमती खातुदेवी, **जन्मस्थली** – मदासर गाँव (जैसलमेर), **दीक्षा गुरु** – स्वामी हरिरामजी के शिष्य (श्री नेनूरामजी के शिष्य) श्री विश्वदेवजी से नामदान वि. सं. १६४५ **सतगुरु** – श्री स्वामी अचलरामजी महाराज, **गुरुदीक्षा** – वि. सं. १६५६, **मेष दीक्षा** – १६६४, ज्येष्ठ सुदि महेश नवमी, **निर्वाण** – वि. सं. २०३४, आषाढ सुदि, सूर्यनवमी। **कृति** – **उत्तमराम भजन प्रकाश** एवं **अवधूत ज्ञान चिन्तामणि** दो ग्रन्थों में आपकी रचना पूर्व लोकार्पित है।

४२. श्री स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज (जोधपुर गूदड़गद्दी के षष्ठम पीठाधिश्वर)

अवतरण – **जन्म स्थली** – मीरपुरखास सिन्ध, **देहिक जन्म** – वि. सं. १६८७, **सतगुरु** – श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज "वैरागी" **गुरुदीक्षा (आध्यात्मिक जन्म)** – वि. सं. १६६२, **गद्दीनशीनी** – वि. सं. २०३४। शताधिक्य सत्साहित्यक ग्रन्थों के रचयिता, कई ग्रन्थों के सम्पादक, टीकाकार एवं प्रकाशक-प्रचारक। कई ग्रन्थ लोकार्पित एवं शिक्षा विभाग राजस्थान शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त हैं।

भारतवर्ष के उत्कर्ष में प्राचीन से अर्वाचीन/अद्यतन समाज को धर्म आचार संहिता का विशाल सत्साहित्य भण्डार श्री वैष्णव सम्प्रदाय के महापुरुष आचार्यगण से मिला है। उतना किसी भी सक्षम परम्परा के महापुरुषों ने नहीं दिया। इसका परिचय दर्शन **पूर्वातपर गुरु प्रणाली** के इंगित से स्पष्टतः अवगत होता है। **श्री वैष्णव धर्म सम्प्रदाय** के वैराट स्वरूप में होने वाले सन्त निखिल में समय के युगपुरुष, त्रिकालदर्शी, साहित्यकार, वदान्त मार्तण्ड महापुरुष हुए हैं। उन्हीं की शिष्य शाखा परम्पराऐं अद्यावधि उनके सैद्धान्तिक पद चिन्हों का अनुकरण करते हुए जन-कल्याण भावनाऐं संजो रहे हैं।

सनातन धर्म के अनुयायी पिछड़े/दलित वर्ग के और कृषक/मजदूर इत्यादि ग्रामीण शिक्षित हो या अशिक्षित, किन्तु सभी के कण्ठाग्र विचारानुगत कर्तव्य पारायणता कर्म सात्विकता, योगमार्गीय उपासना, पूजा-पाठ अथवा गूढ़ उपनिषद् तत्व का परमार्थ बोध मुख से जो बोला जाता है। उनका सारा श्रेय सन्त महापुरुषों की सरस पद्यात्मक भाषानुवाद में कथित बोलचाल की भाषा का काव्य ही है, जो आज के शिक्षित वर्ग के समझने में सरल नहीं है। ऐसी सन्त वाणी में युग पुरुष स्वामी सुखरामजी महाराज कृत परम गूढ़ भाव से अनुभव स्रोत में चौरासी भजनों को **अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका** द्वारा समझाया गया है, जो अज्ञ तज्ञ वृतानुवृति के सभी प्रेमीजनों की सुलभता का विषय-वाद है। लाख वर्षीय कैलेण्डर एवं कई रचना ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

अपनी अक्षय शक्ति दो कौड़ी के कामों में खर्च कर नष्ट करना ही वज्रमूर्खता है।

उपदेश के अमृत बिन्दु

परिशुद्धामपि वृत्तिं समाश्रितो दुर्जनः परान् व्यथते । पवनाशिनोऽपि भुजगाः परोपतापं न मुंचन्ति ।।

दुर्जन व्यक्ति शुद्ध आचरण से रहते हुए भी दूसरों को कष्ट पहुँचाता है, जिस प्रकार सर्प वायुभोजी होकर भी दूसरों को सन्तप्त करने का स्वभाव नहीं छोड़ता ।

प्रायः खल प्रकृतयो नापरिभूता हिताय कल्पन्ते । पुष्यत्यधिकमशोको गणिका चरण प्रहारेण ।।

दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति प्रायः बिना पराजित हुए हितकर नहीं सिद्ध होते । वेश्या के चरण प्रहार से अशोक वृक्ष और भी अधिक खिलता है ।

परमर्मघट्टनादिषु खलस्य यत् कौशलं न तत् कृत्ये । यत् सामर्थ्यमुपहतौ विषस्य तन्नोपाकाराय ।।

दूसरे के रहस्यभेदन मे दुष्ट व्यक्ति की जो चातुर्य दृष्टिगोचर होती है, वह कार्यसाधन में नहीं होती, जिस प्रकार विष में जो मारने की सामर्थ्य है, वह किसी के उपकार या लाभ के लिए नहीं होती ।

वायुरिव खलजनोऽयं प्रायः पररूपमेति सम्पर्कात् । सन्तस्तु रविकरा इव सवसद्योगेऽप्यसंश्लिष्टाः ।।

दुष्ट व्यक्ति प्रायः वायु के समान दूसरे से सम्पर्क होने पर उसका रूप ग्रहण कर लेते हैं, किन्तु सत्पुरुष सूर्य की किरणों के समान अच्छी या बुरी वस्तु से सम्पर्क होने पर भी उसके गुणों से अछूते रहते हैं ।

अतिसत्कृता अपि शठाः सहभुवमुंझन्ति जातु न प्रकृतिम् । शिरसा महेश्वरेणापि ननु धृतो वक्र एव शशी ।।

अत्यन्त सत्कार पाने पर भी शठ (मूर्ख) अपनी जन्मजात प्रकृति को कदापि नहीं छोड़ते । जिस प्रकार भगवान् शंकर द्वारा शिरोधार्य किये जाने पर भी चन्द्रमा सदा टेढ़ा ही है ।

प्रेरयति परमनार्यः शक्तिदरिद्रोऽपि जगदभिद्रोही । तेजयति खड्गधारां स्वयमसमर्था शिला छेत्तुम ।।

दुष्ट या असभ्य व्यक्ति स्वयं शक्तिहीन होने पर भी संसार को द्रोह करने के लिए प्रेरित करता है, जिस प्रकार पत्थर की शिला, काटने में स्वयं असमर्थ होते हुए भी तलवार की धार को तेज करती है ।

दूरेऽपि परस्यागसि पटुर्जनो नात्मनः समीपेऽति । स्वं व्रणमक्षि न पश्यति शशिनि कलंक निरूपयति ।।

दूसरे का अपराध या दोष अदृश्य भी हो, तो लोग उसको खोज लेने में समर्थ होते हैं, किन्तु स्वयं के दोष सामने होने पर भी उसे देख नहीं पाते । अपने विकार (दोष) को आँख स्वयं नहीं देख पाती, किन्तु चन्द्रमा के कलंक को देख लेती है ।

कृत्वापि येन लज्जामुपैति साधुः परोदितेनापि । तदकृत्वैव खलजनः स्वयमुद्गिरतीति धिग् लघुताम् ।।

जिस सत्कार्य को करके दूसरों द्वारा भी उसकी प्रशंसा किये जाने पर साधु पुरुष लज्जा का अनुभव करते हैं, उस कार्य को बिना किये ही दुष्ट व्यक्ति स्वयं ही श्रेय लेता फिरता है । ऐसी क्षुद्रता को धिक्कार है ।

लब्धोच्छ्रायो नीचः प्रथमतरं स्वामिनं परा भवति । पथि धूलि रजो ह्यादावुत्थापकमेव संवृणुते ।।

उन्नति प्राप्त करके नीच (दुष्ट) व्यक्ति सर्वप्रथम अपने स्वामी को ही परास्त करता है, जिस प्रकार धूलिकण पहले धूल उड़ाने वाले को ही आच्छादित करती है ।

मृगमद कर्पूरागुरु चन्द नगन्धाधि वासितो लशुनः । न त्यजति गन्धमशुभं प्रकृतिमिव सहोत्थितां नीचः ।।

कस्तूरी, कपूर, अगरु और चन्दन की गन्ध से सुवासित किया गया लहसुन अपनी दुर्गन्ध को, नीच की सहजवृत्ति के समान नहीं छोड़ता है ।
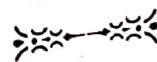
पुष्प और सुगन्ध की भान्ति सर्गुण तथा निर्गुण की एकता तादात्म्य भाव से है ।

श्रीश्री १०८ श्री स्वामी रामप्रकाशचार्यजी महाराज "वैरागी"
उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर
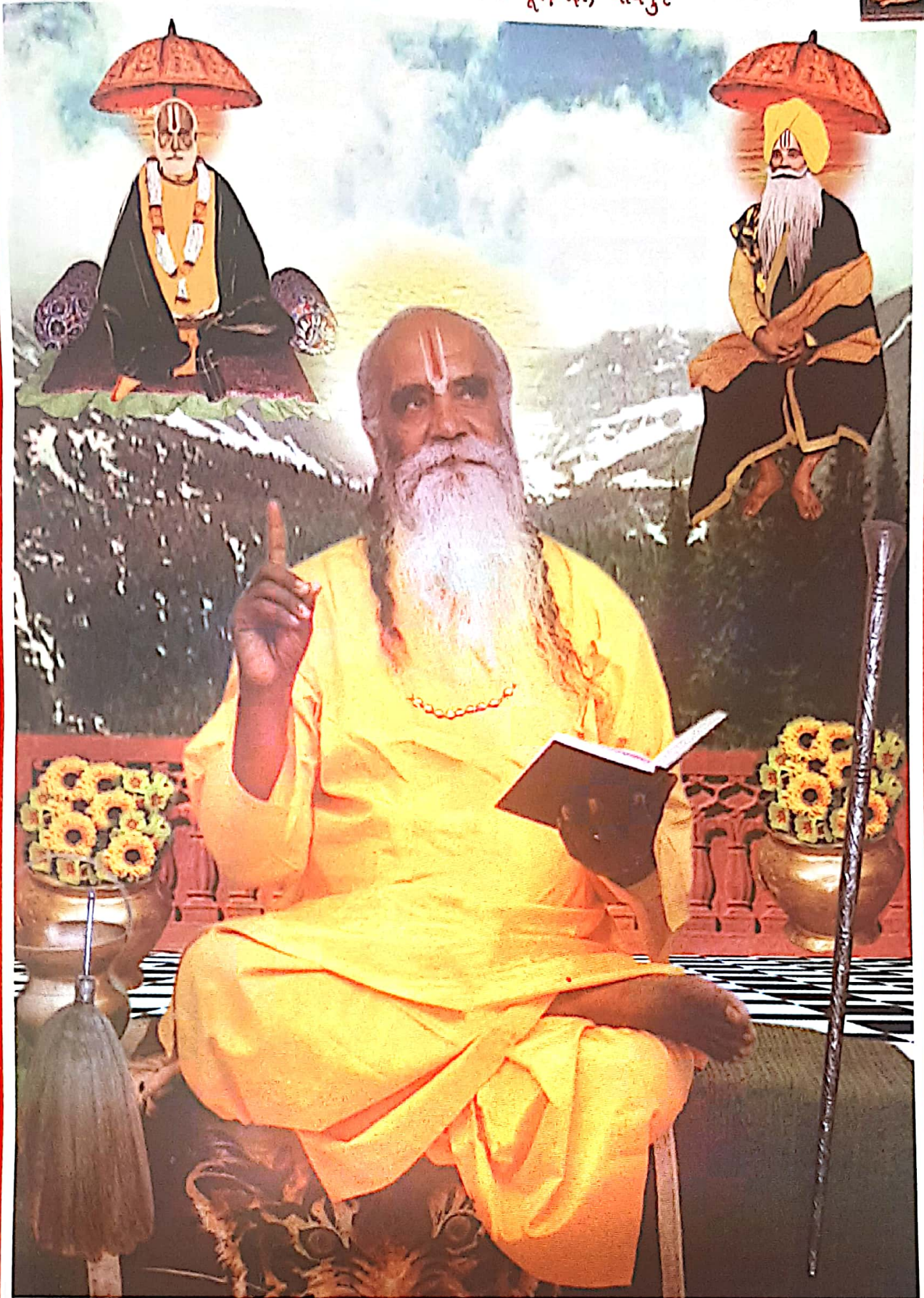
उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री सुखराम नगर की पहाडी एवं टांका से कागा मार्ग स्थित उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) में श्री अग्रद्वाराचार्यजी का सम्बोधन काल दर्शन

ऊँ प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म
एतरेयोपनिषद ५/३
ऋग्वेद
श्री वैष्णव गूदड़ परम्परा दर्शन
ऊँ अहंब्रह्मास्मि ब्रह्म
वृहद० उ०/१/४/१०
यजुर्वेद
समर्थ श्री स्वामी गंगारामजी
१
समर्थ श्री स्वामी जीयारामजी
३
समर्थ श्री स्वामी हरिरामजी
२
समर्थ श्री स्वामी सुखरामजी
४
समर्थ श्री स्वामी अचलरामजी
५
समर्थ श्री स्वामी उत्तमरामजी
६
समर्थ श्री स्वामी रामप्रकाशजी
७
ऊँ तत्वमशि ब्रह्म
छान्दोग्य उ०/६/८/७
सामवेद
श्री उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) दर्शन
कागा मार्ग, जोधपुर
ऊँ अयमात्मानन्द ब्रह्म
मांडूक्योपनिषद् /२
अथर्ववेद
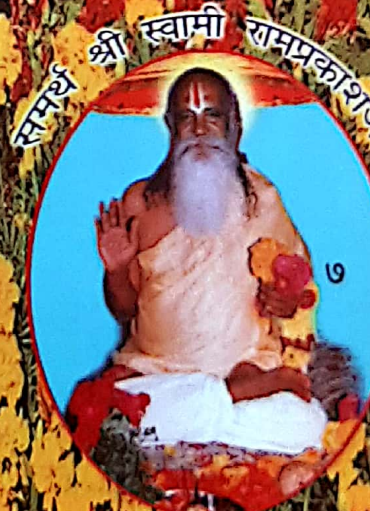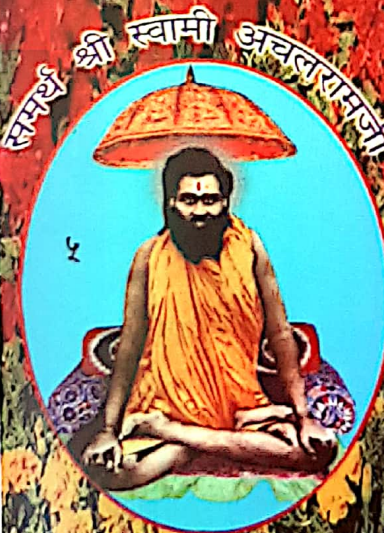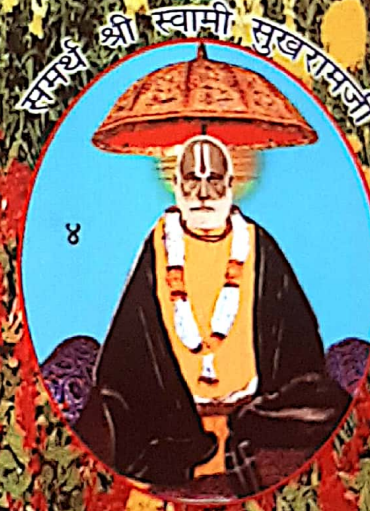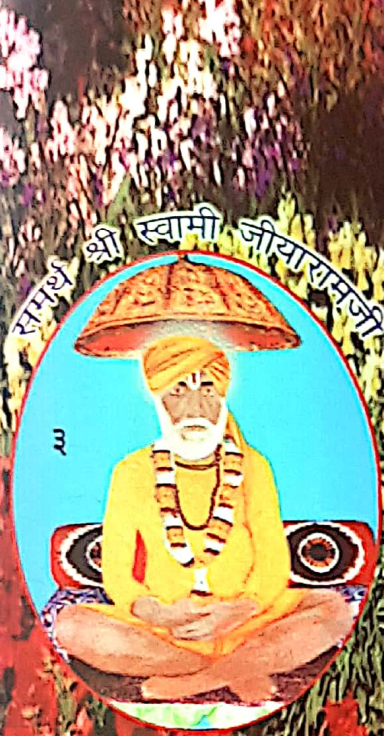
उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्रीश्री १०८ श्री स्वामी हरिरामजी महाराज "वैरागी" योगारूढावस्था

हरिराम विश्राम घाट बोरानाड़ा से उपलब्ध सुदुर्लभ दर्शन चित्र
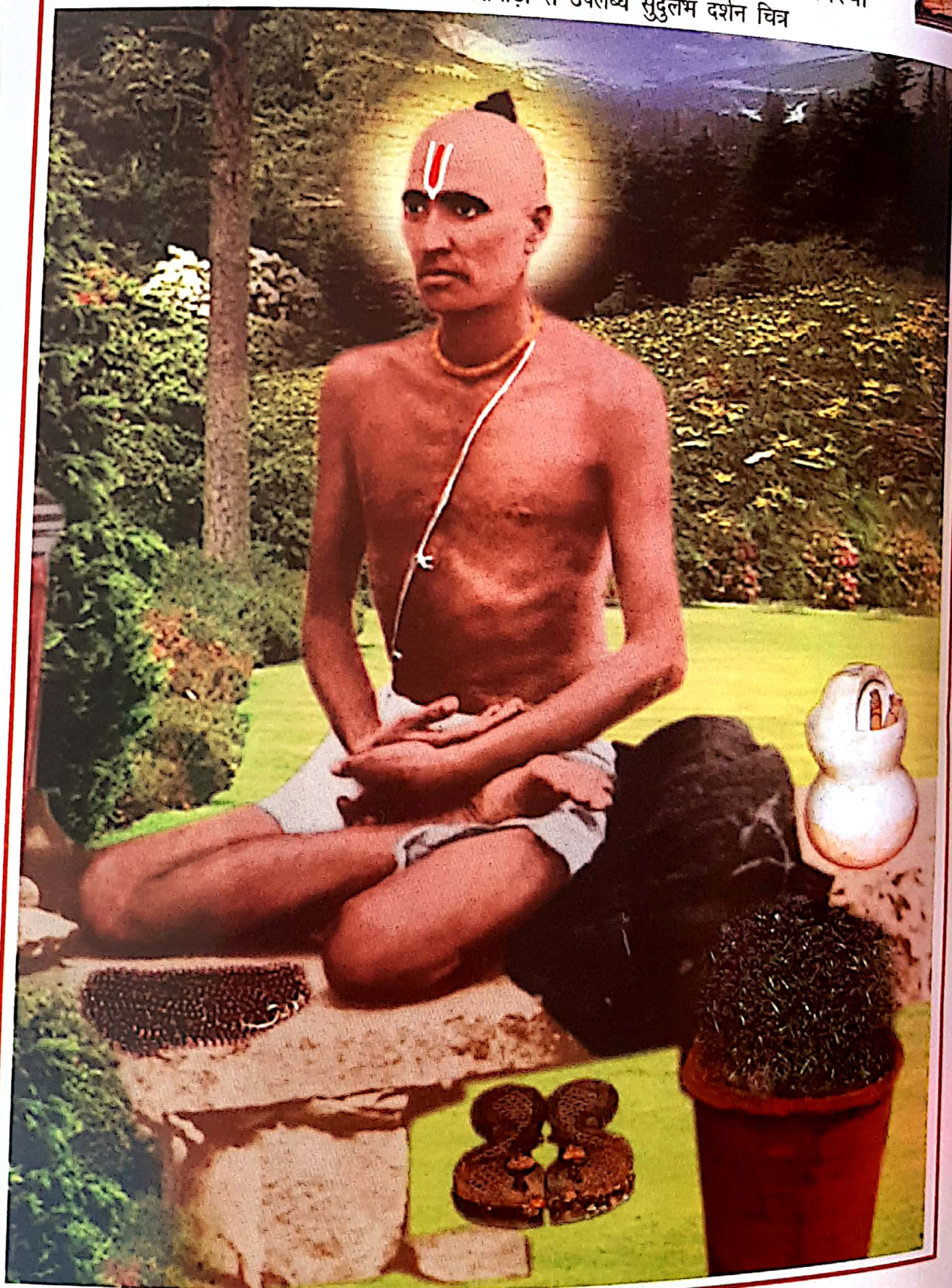
❊ प्रेम में उन्मत्त हुआ भक्त कभी तो हँसता है, कभी रोता है, कभी गाता है और कभी संसार की लोक-लाज को छोड़कर दिगम्बर वेश में ताण्डव नृत्य करने लगता है । उसका चलना विचित्र है, वह विलक्षण भाव से हँसता है, उसकी हर चेष्टा में उन्माद है । उसकी भाषा संसारी भाषा से भिन्न है । वह संसार के विधि निषेधों का गुलाम नहीं ।

❊ कलियुग में हरिनाम, हाँ केवल हरिनाम, एकमात्र हरिनाम ही संसार-सागर से पार होने का सर्वोत्तम साधन है । इसके अतिरिक्त इस काल में दूसरी कोई गति नहीं है, नहीं है, दूसरी कोई गति है ही नहीं ।

❊ जिस क्षण 'तेरा हूँ' कहकर भक्त भगवान् को पुकारता है, उसी क्षण प्रभु उसे अपना लेते हैं । वे तो भक्तों के लिए भूखे-से बैठे रहते हैं, लोगों के मुख की ओर ताकते रहते हैं कि अब कोई कहे कि 'मैं तुम्हारा हूँ'।

❊ जल को मथने पर घी भले ही निकले, बालू को पेरने से उससे तेल भले ही निकले, परन्तु भगवान् के भजन बिना इस संसार-सागर को तरना सर्वथा असम्भव है- यह अकाट्य सिद्धान्त है ।

❊ चारों वेद, छहों शास्त्र, अठारहों पुराण पढ़कर सारा ज्ञान प्राप्त कर और सभी सन्तों का सत्संग प्राप्त कर के अन्त में तुम 'राम-नाम' में ही लौटोगे । फिर अभी से उसी में क्यों नहीं लगते हो ?

❊ जिसमें द्युलोक, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और सम्पूर्ण प्राणों के सहित मन ओत-प्रोत है, उस एक आत्मा को ही जानो, अन्य सब बातों को छोड़ दो । यही अमृत का सेतु है ।

❊ प्रकृति और पुरुष का नियन्ता, सकल प्राणियों का अन्तर्यामी और षड्गुण-ऐश्वर्य युक्त परमात्मा के चरणों को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी संसार-भय दूर नहीं होता ।

❊ जिसने इच्छा का त्याग किया, उसको घर छोड़ने की क्या आवश्यकता और जो इच्छा का बँधुआ है, उसको वन में रहने से क्या लाभ हो सकता है ? सच्चा त्यागी जहाँ रहे, वही वन और वही कन्दरा है ।

✱ संसारी व्यक्ति में ज्ञानी पुरुषों के समान ज्ञान और बुद्धि हो सकती है, वह योगियों की तरह कष्ट-क्लेश सह सकता है और तपस्वियों की भान्ति त्याग कर सकता है, परन्तु उसके ये सारे श्रम व्यर्थ होते हैं, क्योंकि उसकी सारी शक्तियाँ गलत दिशा में प्रवाहित होती हैं, वह अपनी सारी शक्ति नाम, यश और धन कमाने में ही लगाता है, भगवान् के लिए नहीं ।

✱ मैले दर्पण में सूर्य का प्रकाश प्रतिबिम्बित नहीं होता, स्वच्छ दर्पण में ही वह प्रतिबिम्बित होता है । मायामुग्ध, अशुद्ध और अपवित्र हृदय वाले व्यक्ति ईश्वरीय महिमा का प्रकाश नहीं देख पाते, विशुद्ध हृदय व्यक्ति ही उसे देख पाते हैं । इसलिए निःछन्द निर्पक्ष मर्यादित गुरु भक्ति से विशुद्ध बनने का प्रयत्न करो ।

✱ दूध में अगर उसका दुगुना पानी मिला हुआ हो, तो उसकी खीर बनाने में बहुत समय और अत्यधिक श्रम लगता है । इसी प्रकार विषयी लोगों के मन में मलिन विषय-वासना और कुविचारों की अत्यधिक मिलावट होने के कारण उसे शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए दीर्घ समय तक कठिन परिश्रम करना पड़ता है ।

✱ क्या कोई नट रंगमंच पर उतरते ही अपना मुखौटा हटा देता है ? संसारियों को पहले नाटक में अपना काम पूरा कर लेने दो, उसके बाद ठीक समय पर वे अपना बनावटी साज उतारेंगे ।

✱ जो घोर (१) **विषयासक्त** जीव होता है, वह **विष्ठा के कीट** की तरह होता है । यह कीट सदा विष्ठा में ही रहता है, वहीं मरता है । विष्ठा के अलावा वह अन्य कुछ भी नहीं जानता । जिसकी (२) **विषयासक्ति** इतनी तीव्र नहीं, वह जीव मानों **मक्खी** की तरह होता है । मक्खी कभी विष्ठा पर तो कभी मिठाई पर बैठती है । (३) **मुक्त जीव** मधुमक्खी की तरह होता है । **मधुमक्खी** सदा मधु का ही स्वाद लेती है, अन्य वस्तु का नहीं ।

✱ बद्धजीव मगर की तरह होते हैं । मगर की देह पर शस्त्र द्वारा वार करने पर शस्त्र छिटक कर गिर पड़ता है, मगर को कुछ नहीं होता । सिर्फ पेट पर वार करने पर ही वह मरता है । इसी तरह, बद्धजीव को कितना भी धर्मोपदेश दो, कितनी भी ज्ञान-वैराग्य की बातें सुनाओ, उसके हृदय पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता । इसके लिए तो उसकी आसक्ति के विषयों पर ही प्रहार करना पड़ेगा ।
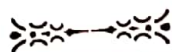
यह जीवात्मा परमात्मा का परम अंश एवं चेतन, निर्मल और अविनासी है ।

श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) परिचय

श्री उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) कागा तीर्थ मार्ग पर जोधपुर में स्थित है, यह रास्ता आगे प्राचीन काग ऋषि की तपस्थली में पहुँच कर वहीं ऐतिहासिक **शीतला माता मन्दिर** पर विराम करता है । कागा का भौगोलिक वर्णन पूर्व वि.सं. २०५४ सन् १९९७ ई. **जीवन स्मारिका** में विस्तृत दिशा दर्शन के रूप में हुआ है । आचार्य पीठ से आगे इसी मार्ग पर ६००० फुट दूरी पर **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल** अर्थात् **श्री वैष्णव गूदड़ गद्दी जोधपुर** के पूर्वाचार्यों की समाधियों का **धाम दर्शन** है । जहाँ वि. सं. १९०० से अद्यावधि पर्यन्त कुल ३० समाधियों में से कई भूमिगत गुप्त-लुप्त है, कई दर्शनीय पूजनीय हैं, जो सिद्ध स्वरूप है । बहुधा आस्तिक उपासक मनोकामना लेकर आते हैं और श्रद्धा संयुत विश्वास से निराशा में आशा की ज्योति जगा कर इच्छित फल पाते हैं । ऐसा प्रत्यक्ष देखा जाता रहा है और देखते हैं, वहाँ की ***प्रसिद्ध सिद्ध समाधियों*** में कई धराशायी या भूमिगत दब कर सुप्त/गुप्त प्रायः लुप्त थी, उनमें से १२ सन्त समाधियों का जीर्णोद्धार व्यवस्थित स्मृति चिन्ह चरण पादुका स्थापित सहित नामोल्लेखन करके वर्तमान **श्रीमहन्त रामप्रकाशाचार्य जी महाराज** द्वारा अथक प्रयास से उभारी गई है । कुछ समाधियाँ लुप्त प्रायः दब गई, जिनका कोई नामांकन लेखा उपलब्ध नहीं हो सका है । अभी २२ की सूचि सुरक्षित थी, उनका जीर्णोद्धार सहित दर्शनीय व्यवस्थापन हो गया है, जिनका **परिचय विवरण संक्षिप्त तालिका** द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है ।

श्री हरिराम वैरागी उद्यान में सन्त समाधियों का परिचय

श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) में गूदड़ भेष आचार्यपीठ जोधपुर गद्दी के समर्थ स्वामी हरिरामजी "वैरागी" की परम्परा में विरक्त शिष्य/परशिष्य वि. सं. १९०० के बाद समय-समय पर जो सन्त साकेत वासी हुए, उन सभी सन्त-समाधियों की संक्षिप्त नाम/सतगुरु श्री सहित परिचय/समाधिस्थ संवत्-सूची प्रस्तुत है ।

क्रमांक	सन्तनाम	शिष्य-परशिष्य/गुरु नाम	जन्म वर्ग	समाधि परिचय
१.	**श्री शिवाराम जी "वैरागी"**	श्री हरिराम जी के परपौत्र शिष्य श्री नैनूराम जी के पौत्र शिष्य श्री मगनीराम जी के शिष्य (परिचय अज्ञात)	चारण	वि. सं. १९०० आषाढ सुदि ९ सूर्यनवमी (सन् १८४३ ई.)
२.	**श्री मगनीराम जी "वैरागी"**	श्री नैनूराम जी के शिष्य (भवन के पास) अज्ञात परिचय	क्षत्रीय	वि. सं. १९०५ चैत्र सुदि ९ रामनवमी (सन् १८४८ ई.)
३.	**श्री नेनूराम जी "वैरागी"** (दर्शनीय छतरी है)	श्री स्वामी हरिराम जी के शिष्य श्री जीयाराम जी के गुरुवानुज	ब्राह्मण	वि. सं. १९२९ द्वि. भाद्रपद सुदि ४ रविवार (सन् १८७२ ई.)
४.	**श्री हरिराम जी महाराज "वैरागी"**	श्री स्वामी गंगारामजी महाराज के शिष्य (गद्दी स्थापन कर्ता), छतरी है	भाटी क्षत्रीय	वि. सं. १९३३ चैत्र वदि २ सोम (सन् १९७६ ई.)
५.	**श्री हीरालालजी "वैरागी"**	श्री स्वामी हरिराम जी महाराज गुप्त/लुप्त	वैश्य	वि. सं. १९३४ वैशाख सुदि १० शनि (सन् १८७७ ई.)
६.	**श्री छोटे हरिराम जी "वैरागी"**	श्री स्वामी नेनूराम जी महाराज (छोटी छतरी है)	राठौड़ क्षत्रीय	वि. सं. १९३६ चैत्र सुदि ११ (सन् १८७९ ई.)
७.	**श्री जीयाराम जी "वैरागी"**	श्री हरिराम जी महाराज "वैरागी" साल (बरसाली)	सुथार	वि.सं. १९५४ मार्गशीर्ष सुदि १२ रविवार (सन् १८९७ ई.)

अपने का अनुशासन में रखने वाला ही शासन करने का अधिकारी है ।

क्रमांक	सन्तनाम	शिष्य-परशिष्य/गुरु नाम	जन्म वर्ग	समाधि परिचय
८.	श्री गेनदास जी महाराज	श्री सुखराम जी महाराज (साल के पीछे)	ब्राह्मण	वि.सं. १९५६ आषाढ सुदि ५ (सन् १८९९ ई.)
९.	श्री सुखराम जी महाराज	श्री जीयाराम जी महाराज	जाट	वि.सं. १८५९ फाल्गुन वदि ४, रवि शताब्दी प्रतिष्ठा वि.सं. २०५९ फाल्गुन वदि ४ गुरु २० फरवरी (सन् २००३ ई.)
१०.	श्री हरलालरामजी "वैरागी"	श्री सुखरामजी महाराज	जाट	वि.सं. १९५९ फाल्गुन सुदि १४ मंगलवार (सन् १९०२ ई.)
११.	श्री सेवादास जी "वैरागी"	श्री नेनूराम जी महाराज (सतसंग भवन के पास)	जाट	वि.सं. १९६२ चैत्र सुदि १४ गुरु (सन् १९०५ ई.)
१२.	श्री विश्वेश्वरदास (दूधाधारी जी)	श्री नेनूराम जी महाराज के शिष्य (सतसंग भवन के पास)	जाट	वि.सं. १९६३ फाल्गुन वदि १४ महाशिवरात्री (सन् १९०६ ई.)
१३.	श्री किसनाराम जी "वैरागी"	श्री सुखराम जी महाराज (साल के पीछे)	राजपूत	वि.सं. १९६४ भाद्रपद पूर्णिमा (सन् १९०७ ई.)
१४.	श्री किसनदासजी महाराज	श्री नेनूराम जी महाराज	सुथार	वि.सं. १९६५ वैशाख सुदि ३
१५.	श्री भानूराम जी "वैरागी"	श्री सुखराम जी महाराज (साल के पीछे)	महेश्वरी वैश्य	वि.सं. १९६७ श्रावण सुदि ७ (सन् १९१० ई.)
१६.	श्री जमनादास जी	श्री नेनूराम जी महाराज (दीवार के पास)	कुमावत	वि. सं. १९८० पौष सुदि १४ (सन् १९२३)
१७.	श्री संत रणछोड़दासजी	श्री स्वामी विश्वदेवजी काली छतरी प्याऊ के सामने	कुमावत	वि.सं. १९५५ आषाढ वदि १३ (सन् १८९८ ई.)
१८.	श्री सेवाराम जी	श्री सुखरामजी महाराज	माली	वि. सं. १९९६ आषाढ सुदि १०
१९.	श्री अचलराम जी	श्री सुखराम जी "वैरागी" (मारबल चबूतरा)	सैनी कछवाह	वि.सं. १९९९ द्वि. ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रवार (सन् १९४३)
२०.	श्री साध्वी चतुरीबाई	श्री स्वामी सुखराम जी	माली	संवत् अज्ञात
२१.	श्री अचलनारायण जी	श्री अचलराम जी वैरागी (मारबल चबूतरा)	कछवाह	वि.सं. २०२४ माघ सुदि १४ बुध, (१४ फरवरी १९६८)
२२.	श्री उत्तमराम जी	श्री अचलराम जी महाराज (पीली छतरी)	सूत्रकार क्षत्रीय	वि.सं. २०३४ आषाढ सुदि ६ शनि (२५ जून १९७७ ई.)
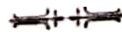
अन्य श्री हरिरामजी महाराज के शिष्यों में – (१) संन्त हीरादासजी, (२) साध्वी मीराबाईजी, (३) सन्त आतमारामजी की तीन समाधियाँ भी यहीं पर हैं, जिनके निर्वाण तिथि संवत् अज्ञात है।

श्री सुखरामजी के शिष्यों में – (४) सन्त भगवानदासजी की एक समाधि भी यहीं पर है, निर्वाण तिथि अज्ञात है। शेष दो समाधियों के नाम-परिचय अज्ञात हैं, सन् १९५५ में भी उन पर शिलालेख/चरण पादुका नहीं थी।

श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदायान्तर्गत अग्रद्वार स्तम्भ सन्तदासोत

गूदड़गद्दी, जोधपुर के पूर्वाचार्यों की शताब्दियाँ

वि. सं. १६२६ चैत्र सुदि प्रतिपदा नव वर्षारम्भ के पावन पर्व पर गूदड़ गद्दी दॉन्तड़ा धाम के तत्समय के परमाचार्य अनन्त श्रीयुत स्वामी दौलतराम जी महाराज को पधरावणी सहित स्वर्णपाद कड़ा भेंट करके श्री श्री १०८ **श्री स्वामी गंगारामजी** महाराज द्वारा सन्तदासोत परम्परा की शाखा-गूदड़गद्दी जोधपुर आचार्यपीठ की स्थापना करके अपने स्वनाम धन्य परम योग सिद्ध तत्वदर्शी अपने शिष्य **स्वामी हरिरामजी महाराज** को गद्दीनशीन श्रीमहन्त बना कर छड़ी, छत्र, चँवर की गरिमा दी और आप कोटा चम्बल नदी के तट स्थित तप-स्थली **श्री राम आश्रम** म पधार गये और वहीं पर साकेतवास हुआ, वह प्रमाणित रूप से आपका आश्रम और दर्शनीय समाधि स्थल अद्यावधि दर्शनीय है, जो इन पंक्तियों के लेखक द्वारा दर्शन-चित्र सहित **श्री राम आश्रम एवं समाधि का चित्र सुखराम साकेत स्मारिका** में पृष्ठ १४४ (५ व ६) पर दर्शनीय शोद्ध सामग्री है । यथा -

वहीं पर स्वामी हरिरामजी महाराज का वैराग्य पूर्वावस्था में सतगुरु के साक्षात् दर्शन मन्त्र-भेष दीक्षा सहित साधना का सूत्रपात हुआ था, जिनका उल्लेख **''हरिसागर''** ग्रन्थ में (२१/६६) किया गया है ।

सहजों ही सतगुरु मिले, कोटि चमल की तीर । फिरता को थिरता किया, धन गुरु गंग फकीर ।।

ऐसे ही श्री गूदड़ पूराण का अंग (२१) में अपनी श्री वैष्णव वैरागी परम्परा का काव्यांजलि में कथन करके स्पष्ट किया है। अभी हमारे शोद्ध प्रयास में साधनकाल में युवावस्था का दर्शनीय सिद्धावस्था चित्र प्राप्त हुआ है, जो प्रस्तुत स्मारिका की विशेष सामग्री है।

(१) गूदड़ गद्दी जोधपुर के प्रथम (आद्याचार्य) श्री स्वामी हरिरामजी महाराज -

आप के अपूर्व अनुभव वाणी ग्रन्थ (१) **वाणी प्रकाश** में पद्यात्मक संगीतमय ६५ भजन एवं **हरिसागर** ग्रन्थ में पच्चीस अंगों के माध्यम से विविध विषय प्रसंगों को ११६० दोहादि अनेक छन्द प्रजाति में कथन किया है । आप का सम्पन्न **जीवन परिचय** विस्तृत रूप से **आचार्य सुबोध चरितामृत** शोद्ध ग्रन्थ एवं **हरिसागर** में छपा है । हमने अपने शोद्ध कार्य में युवावस्था चित्र-दर्शन के साथ आपके विविध ग्रामीण प्रवास के धर्मस्थल आश्रमों में जो तथ्य आज तक प्रभावशील पाये हैं । उन के संस्मरण अपने आराध्य गुण-गान में अंकित करते हैं ।

कड़वड़ - जोधपुर से २४ किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में खीची क्षत्रिय शासित गाँव के बाहर एक अद्यावधि जीर्ण शीर्ण रूप में भूत बावड़ी दर्शनीय है । यहीं आपकी प्रारम्भिक तपस्थली है, जो समर्थ श्री सतगुरु की दीक्षा प्राप्ति के बाद -

''हरिराम'' सतगुरु मिल्या, दिया जु मस्तक हाथ । आठ मास रह शरण में, कही जु केवल बात ।।२१/६८।।
किया गुरु गंग का संग, रंग वैराग लगाया । भक्ति को दियो भेव, चरणों चित लाया ।।२१/७०।।

यहीं पर बारह वर्ष गुप्त (अज्ञात) वास में एकासन रह कर योग साधन सिद्धावस्था प्राप्त की और चमत्कृत हुए ।

इस गाँव के बाहर **तालावपाल** पर आप का **हरि आश्रम** अद्यावधि दर्शनीय है, यों कहा जाता है कि आपने आदेश देकर भूतों से वह तालाब खुदवाया था और इस सत्कार्य के वदले सभी को गति (कल्याण) प्रदान की । अन्तिम एक मोतीसिंह नाम भूतों का सरदार अकेला आया, जिसे शिला के नीचे दबाकर गति प्रदान की । उस शिला पर आज

भी गन्दी अवस्था में कोई भी स्त्री व बीड़ी-तम्बाकू आदि नशा सेवन करने वाला मानव नींद नहीं ले सकता ।

आपके प्रभाव के कारण इस गाँव में आज तक सर्प, बिच्छु, भूत नहीं होता । किसी के घर आग लग जाय तो उस घर के अतिरिक्त पड़ोस का एक कांटा भी नहीं जलता और गाँव की सीमा में टिड्डी का प्रवास-प्रभाव नहीं होता ।

आपके सेवक **श्रीं कूम्भारामजी**[१] गोदारा को दिया हाथ का घोटा जो आज तक उनकी वंशज **श्री राजूराम** गोदारा के पास है, उन्हीं की पूजा-प्रभाव गाँव भर में आज भी पूज्य अर्चनीय है । बच्चों के फोड़ा-फुन्सी होने पर घोटा-डुबोया जल चुपड़ने से स्वास्थ्य लाभ तथा भूतादि प्रभाव से मुक्ति दिलाता है, जिनका चित्र आचार्य सुबोध चरितामृत में छपा है ।

आपने यहाँ स्वामी जीयारामजी महाराज के गुरुवानुज **स्वामी आतमरामजी महाराज** नामक शिष्य को श्रीमहन्त बनाया था, नेनुरामजी भी यदा-कदा यहाँ प्रवास करते रहे थे । आज उनकी गद्दी परम्परा पर कोई संत नहीं है । गाँव के भक्त पूजा व्यवस्था को संभाल रहे हैं ।

जाजिवाल खीचिया – जोधपुर से २१ किलोमीटर पर आया हुआ गाँव है, यहाँ पर अपने शिष्य **स्वामी मुरलीधरजी महाराज** को श्रीमहन्त पद प्रदान किया । आप यदा कदा यहाँ पधारते रहते थे । यह गाँव खीची क्षत्रिय की जागीरदारी का था । जाट समुदाय की श्रद्धा-विश्वास भक्ति सेवा के कारण आपकी कृपा उन पर सदैव बरसती रही । आज भी आप पर जाट समुदाय का इन गाँवों में अटूट भरोसा है । यहाँ आपने एक पीलवान (जाल) की टहनी से दान्तुन करके रोपित की थी, जो विशाल पीलवान (जाल) के वृक्ष का ऐतिहासिक दर्शन आज भी क्षीणावस्था में है ।

यहाँ भी कड़वड़ गाँव की भान्ति वही आग जन्य उत्पात या विष जन्तु से रक्षण के चमत्कार आज भी दर्शनीय है । आप की सिद्ध शिष्य परम्परा में कई महात्मा पुरुष तपोमय समर्थ हुए हैं । वहीं पर अद्यतन वर्तमान संत धर्माराम वैरागी महन्त पद पर विराजमान हैं ।

डोली – जोधपुर से बाड़मेर रोड़ दक्षिण-पश्चिम दिशा में ३५ किलोमीटर दूरी पर डोली गाँव आया हुआ है । वहाँ हरि आश्रम पर अपने शिष्यों के साथ आप विराजते थे, जो आज भी दर्शनीय है । एक समय गाँव के ठाकुर आप के आश्रम के पास देवी मन्दिर की नींव डाल कर चबूतरा बनाने लगे । तब आपने कहा कि यहाँ मेरी बैठक के सामने यह देवी-स्थान मत बनाओ । बार-बार मना करने पर उन्होंने कहा - महाराज ! हम इसे मीठा चढ़ायेंगे । आपने कहा - हठ मत करो, मीठा चढ़ाओगे तो मीठे ही रहोगे । अन्ततोगत्वा ठाकुर के कोई सन्तान नहीं हुई और निःसन्तान कँवराज ठाकुर का वह गाँव जोधपुर जागीरी में विलय हो गया । इस गाँव में आप के वचनसिद्ध आशीर्वाद से भंगी, सोनार का निवास और तेल घाणी का सर्वथा अभाव है तथा गाँव में खेतलाजी की पूजा नहीं होती । **हरि आश्रम पर ही मालिया रहेगा** । इस वाक्य के कारण आज तक गाँव में कहीं किसी के दुमंज़िला भवन कोई नहीं बना सकता ।

आप की भक्ति में एक जाट महिला श्रीमती **रिदूमा** धर्मपत्नी श्री पूसाराम कुरड़ वृद्धा की अथाह श्रद्धा थी । जो नित्य प्रति स्वामीजी को छाछ-राबड़ी से बालभोग करवाती थी । आप कभी रमते राम उनके घर पधारते तो एक छोटा गौ वत्स था, उसे दुलारते, हाथ चुमाते । एक समय अचानक वह वत्स मर गया । वह समय गुरुदेव श्री के पधारने

१ - श्री कुम्भाराम के पुत्र सांवलजी के पुत्र मुकनाराम के पुत्र क्रमशः उत्तरोत्तर सन्तति में राजूराम गोदारा आज वर्तमान है, जिनके कर्णोपकर्ण साक्ष्य के साथ वह घोटा पूजा में है ।

का था, वृद्धा माता ने सोचा - बछड़ा मर गया है, इसके ऊपर स्वामीजी [illegible] नहीं [illegible], तब उसे [illegible] की बोरी से ढक दिया। कुछ देर बाद श्री स्वामीजी पधारे, विराजमान हुए और पूछा - आज माँ का [illegible] कहाँ है ? वृद्धा माता ने कहा - यहीं कहीं होगा। सहसा स्वामीजी के दृष्टिगोचर में बोरी से ढके बछड़े की पूँछ दिखने में आई और स्वामी जी बोले - अरे इस पर छाया नहीं है, धूप आ गई है। सूखी खेजड़ी की प्राचीन पुरातन दीवार पर रखी डाली को लेकर बोरी हटा कर वहाँ छाया के लिये रोप कर [illegible] से जल छिड़का और डाली से पत्ते फूटने लगे, जो आज तक वह विशाल वृक्ष के रूप में जाट श्री[1] धनाराम कुरड़ के घर के आँगन में [illegible] [illegible] पूजी जाती है। उस बछड़े पर वरद हस्त धरते ही वह बछड़ा जीवित हो गया। यह सारे सिद्ध वृत्तान्त गाँव डोली में जन-जन द्वारा प्रचारित हो रहे हैं।

बोरानाडा - आप एक बार रमण करते बोरानाडा गाँव में कई दिन विराजते रहे, वहीं पर **हरि आश्रम** [illegible] घाट का स्थान प्रसिद्ध हुआ। वहीं आपने धरातल के नीचे जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्दाचार्यजी के द्वादश भागवत शिष्यों में से एक **धनाभक्त** हुए हैं, जिनकी कथा भक्तमाल में प्रसिद्ध है। उन्हीं की मूर्ति जमीन से निकाल कर स्थापित की थी, वहीं पर अद्यतन आपकी पूजा होती है और विशाल **भक्तराज धनाजी का मन्दिर** दर्शनीय तीर्थ स्थल है। यह जोधपुर से २५ किलोमीटर पर आया है। आप (हरिराम जी) का जन्म क्षत्रिय कुल जैसलमेर के भाटी [illegible] राजघराने के परिवार से सम्बन्धित वि. सं. १८१२ तथा निर्वाण वि. सं. १९३३ चैत्र वदि ३ सोमवार को हुआ था। आपकी यादगार में **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा)** में विशाल छतरी बनी हुई है। आस-पास में आपके शिष्यों-प्रशिष्यों के स्मृति स्थल बने होने से वहाँ की क्षेत्रीय भूमि का नामकरण **श्री हरिराम उद्यान** के नाम से किया गया है।

आपकी प्रथम **साकेत शताब्दी पर्व** वि. सं. २०३३ चैत्र वदि एकम से शीतलाष्टमी (१९७७ ई.) तक अखण्ड खड़ी ताल सप्ताह में अखण्ड वैष्णवाराधान से श्री सद्गुरुदेव उत्तमरामजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। नगर परिक्रमा शोभायात्रा-अखाड़ों के साथ जन समूह द्वारा कीर्तन करते पूरी हुई। स्मारक नमूने के कई विभिन्न बेज तथा स्मारक नमूने के चित्र-दर्शन छपवा कर निःशुल्क बाँटे गये। भगवद्वान परम्परा के साधु सन्त महात्माओं के भक्ति ज्ञान वैराग्य संगम अखण्ड संकीर्तन में चार हजार जनता का योगदान रहा, किन्तु अभागे ईर्ष्यालु परान्नपोषी जन अपने अहं के कारण सम्मिलित नही हो पाये। जोधपुर नगर तो आपका लीलाभूमि का लावण्य क्षेत्र रहा है। कहा जाता है स्वामीजी के सात[2] विरक्त शिष्यों को अलग-अलग आश्रमों में महन्ताई से शोभित किये और आप भ्रमण करते जीवन्मुक्त अवस्था में सदा निर्लिप्त रहते। अपने गुरुदेव द्वारा स्थापित रातानाडा स्थित **हरि आश्रम** को अपने परम शिष्य **जीयारामजी** के हस्तगत करके आप विरक्त रूप से निश्छन्द रूप से विचरते रहते थे। अपने जीवन में अनेक सिद्धियों का चमत्कार दर्शन दिया। जिनका उल्लेख परमगुरु देव श्री द्वारा लेख बद्ध साहित्य एवं कर्णोत्कर्ण से श्रवणित कई गाथाएँ अद्यापि प्राप्त है, जिनका उल्लेख श्री मानसिंह शोध ग्रन्थालय मेहरानगढ़ की बहियों में शोध सामग्री है, पूरा विवरण लिखित करना असम्भव है।

(२) द्वितीय पीठाधिश्वर स्वामी जीयारामजी महाराज -

जोधपुर गूदड़ गद्दी के आप सर्व समर्थ, परम तत्त्वज्ञ, शान्तात्मा, जीवन्मुक्त सिद्ध पुरुष थे। जिनकी संयमित

१ - पूसाराम कुरड़ के पुत्र पीताराम के हमारी छट्ठी वंश में है। पुत्र आनन्दाराम के पुत्र तुलछाराम कुरड़ की धर्मपत्नी श्रीमती [illegible] (काग) द्वारा विवरण प्राप्त हुआ, जो जाट धनाराम कुरड़ की माताश्री है। शोध कार्य १/२ फरवरी, ०३ ई. का है।

२ - सात शिष्यों में श्री स्वामी जीयारामजी (जोधपुर), २. श्री स्वामी मुरलीधरजी (नागिवाल खोखिया), ३. श्री स्वामी रेनुरामजी की मातृवृषा मीराबाई, (जीयारामजी के साथ जोधपुर), श्री स्वामी [illegible]रामजी (कडवड़), श्री स्वामी [illegible]रामजी (डोली) में विराजते थे।

वाणी के प्रभाव सिद्ध औचित्य को पूर्व **वाणी प्रकाश**, **जीवन स्मारिका** एवं **आचार्य सुबोध चरितामृत** में विस्तृत रूप से कथन किया गया है । सदाव्रत, अन्नक्षेत्र, भण्डारे, वैष्णवाराधन, परोपकार कार्य में लगे रहते । आपके शिष्यों द्वारा श्रीवैष्णव कुल एवं शैवकुल दोनों गौरवान्वित हुए हैं । आप स्वामी हरिरामजी के परम कृपा पात्र थे । आप का जन्म सूत्रधार बरड़वा गौत्र में वि. सं. १८१४ में हुआ । आप की **साकेत (निर्वाण) शताब्दी** वि. सं. २०५४ मार्गशीर्ष सुदि १२ गुरुवार दिनांक ११.१२.१९९७ ई. को बड़ी शालीनता पूर्वक शोभायात्रा, नगर परिक्रमा के साथ मनाया गया । श्री अग्रद्वाराचार्य का आशीर्वचन मिला, कई दूर-दराज से पधारे सन्त भक्तों का परम योगदान रहा ।

(3) गूदड़ गद्दी जोधपुर के तृतीय पीठाधिष्वर स्वामी सुखरामजी महाराज –

परम विद्वान समर्थ तत्वदर्शी महापुरुष की सम्पन्न शोद्धमयी उपलब्ध जीवनी का **आचार्य सुबोध चरितामृत**, वाणी प्रकाश, **जीवन स्मारिका** तथा **मेहरानगढ़ जोधपुर किला के मानसिंह ग्रन्थागार की बहियों से उद्धृत सामग्री के आधार पर उत्तमवाणी प्रकाश** अर्थात् **सुखराम दर्पण (शताब्दी ग्रन्थ)** एवं **सुखराम स्मारिका** आदि ग्रन्थों में उल्लेख किया गया है ।

आप की परम कृपा के चमत्कार हमने गत वर्षों में प्रत्यक्ष अकथ कहानी से अनुभव किये है । छः वर्ष पूर्व **संकल्पित साकेत शताब्दी** की पूर्णता में अस्वस्थ स्वास्थ्य में एक सबल श्रद्धामय परिवर्तन, आर्थिक पूर्ति, कार्य योजनाओं का परिमार्जित स्वरूप सम्पन्न हुआ । **साकेत शताब्दी** के दो दिन पूर्व तारीख १८-१९ फरवरी, २००३ को सहसा मौसम घटा घनघोर गजना के साथ शीत लहर, वर्षा का होना और ठीक समय २० फरवरी, २००३ ई., संवत् २०५९ फाल्गुन वदि ४ गुरुवार को प्रातः से लेकर सारा कार्य सम्पन्न होने तक सुहाना समय कल्याणप्रद सफर रहा ।

कार्यक्रम – दिनांक १६ फरवरी, ०३ को प्रेसवार्ता हुई, उसके बाद जोधपुर शहर, प्रान्तीय एवं राजस्थान सहित सभी समाचार पत्रों ने लगातार तारीख २२.२.०३ तक दैनिक भास्कर, दैनिक राजस्थान पत्रिका, जनगण, नवज्योति, जलते-दीप, तीसरा प्रहर, दैनिक प्रसन्न टाईम्स इत्यादि ने अच्छे समाचारों से पाठकों को अवगत करवाया, तारीख १७.२.०३ को रात ७, ९, १० बजे के समाचारों में दूरदर्शन का भी सहयोग रहा । १९.२.०३ ई. को प्रातः यज्ञ-वेदी के मन्त्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ । उसी दिन और रात भर बसों, जीपों और रेल यात्राओं से भक्तों की उपस्थिति होती रही जो २१.२.०३ ई. के समापन समारोह तक दार्शनिक उत्साह का वातावरण शान्तिमय रहा । सती-सेवक गुरु भक्तों का तन मन धन से पूरा जन सहयोग रहा और सम्प्रदाय परम्परा के साधु जनों में जाजीवाल, नागौर, बालोतरा, मेड़तारोड़ एवं सोजतसिटी आश्रमों का श्रद्धानुसार आंशिक योगदान रहा, इसलिये वे सभी पारम्परिक धन्य है ।

साकेत शताब्दी पर्वोत्सव में भाग लेने हेतु हरियाणा, पंजाब, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के प्रतिष्ठित ग्रामीण क्षेत्रों एवं नगर भू-खण्डों के साथ राजस्थान प्रदेश के सीकर, चुरू, झुंझुनू, बून्दी, कोटा, अलवर, भरतपुर, उदयपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, जैसलमेर, बाड़मेर, पाली, सिरोही, जालोर, बीकानेर इत्यादि अनेक जिलों से बहुतायत भक्त श्रद्धालुओं का सैलाब लगभग सात हजार की गणना में उपस्थिति रही । कार्यालय अपर कलेक्टर एवं अपर जिला मजिस्ट्रेट (शहर) जोधपुर के पत्रांक/विविध/२००३/दि. १९ फरवरी, ०३ के आदेशानुसार ठीक फाल्गुन चतुर्थी (२०.२.०३ ई.)को प्रातः ९ बजे **स्वामी सुखराम टाँका सूरसागर**, मन्दिर-समाधि पूजनोपरान्त अग्रद्वाराचार्य **सर्वश्री स्वामी राघवाचार्य जी महाराज** (रेवासा धाम) के संग सन्तदासोत गूदड़ गद्दी मुख्यालय के

पीठाधीश्वर श्री श्री १०८ **श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज** (दाँन्तड़ा धाम) एवं तत्वदर्शी स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज के कृपापात्र श्री स्वामी मुखिया बाबाजी (शक्तेषगढ़, उ.प्र.) श्रीमहन्त **स्वामी सर्वेश्वरदास जी** (काशी), श्री **स्वामी लक्ष्मणदास जी** श्रीमहन्त डांडिया मन्दिर अयोध्या आदि के साथ अन्यान्य २३ महन्तों एवं ८५ सन्तों के साथ शोभायात्रा प्रारम्भ हुई । एक सौ एक मंगल कलश लिये महिलाऐं, कई भक्तों द्वारा बाजार में लगे २१ तोरण द्वारों से विभिन्न कारों, जीपों, ट्रेक्टर आदि ३५ वाहनों के साथ महाराजा बैण्ड, जगदीश बैण्ड, सात घोड़े, कई दर्शनीय झाँकियों के साथ पूर्व **सन् १९९० ई. के दीक्षा पर्वोत्सव की भान्ति** मंगलमय नगर परिक्रमा करते सूरसागर, आखलिया चौराहा, बॉम्बे मोटर्स, शनि मन्दिर, जालोरी गेट, सोजती गेट, हाईकोर्ट, पावटा होते - शिप हाउस, नागौरी गेट होकर उत्तम आश्रम पहुँचे । दोनों वरिष्ठ आचार्यों की पधरावणी **जानकी सतसंग भवन एवं अग्रावत पुस्तकालय** का **लोकार्पण** होने के अवान्तर **सन्तों की प्रसादी के साथ भक्तों के लिये आश्रम के आगे राजपथ-प्रांगण में विशाल बन्द टेण्ट में भोजन-शाला का प्रबन्ध हुआ**, भाग्यशाली श्रद्धालु भक्तों ने प्रेम-प्रसाद लिया, भाग्यहीन देखते ही रह गये । जाजीवाल खीचियां, कड़वड़, डोली से स्वामी हरिरामजी वैरागी के आस्थावान भक्तों की बाहुल्य उपस्थिति रही ।

श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) प्रांगण को दर्शनार्थ खुला रखते हुए मुख्य राजपथ पर विशाल तम्बू-कनातों की सजावट छड्डा के साथ रौशनी की जगमगाहट में भजन सन्ध्या, आरती, सन्त स्वागत के अवान्तर (1) **सुखराम दर्पण**, (2) **आध्यात्मिक सन्तवाणी शब्द कोष**, (3) **भारतीय सौर वर्ष दैनिक चिन्तन दैनन्दिनी**, (4) **सुखराम स्मारिका** एवं तीन 1. **गूदड़ गद्दी जोधपुर परम्परा** 2. **श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय के शाखोपशाखा का मूल दर्शन** एवं 3. **वर्तमान षष्ठम पीठाधिश्वर गूदड़ गदी जोधपुर के दर्शन कैलेण्डरों का लोकार्पण** हुआ । दिनांक २१ फरवरी, २००३ को प्रातः **उत्तम आश्रम** से भव्य शोभा-यात्रा आचार्यगण के साथ **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा)** स्थित पूर्वाचार्य समूह समाधियों का माल्यार्पण आरती से पूजन अर्चन हुआ । **महाप्रसादी वैष्णवाराधन का विशाल खुला आयोजन हुआ, नगरवासियों के साथ आगन्तुकों ने प्रसादी ग्रहण की** । अन्ध-विद्यालय छात्रावास, कोढीखाना (कुष्ट रोग निवारण केन्द्र) एवं रेलवे स्टेशन, सोजती गेट के अभ्यागतों को खुले भण्डार से प्रसादी/वस्त्र वितरण हुआ । कोई ईर्षाग्नि से तपित या नास्तिक माने या ना माने किन्तु आयोजनकर्ता समिति को पूर्णतः विश्वास हुआ कि हजारों लोगों को हलवाई की सीमा से बाहर लोगों के भोजन करने पर भी अखूट भण्डार द्रोपदी का अक्षय पात्र बना रहा । पन्द्रह दिन बाद जब गुरु-गणपति का प्रसाद नहीं उठाया - तब तक उठाओ-बाँटो की झड़ी लगी रही, यही तो गुरु कृपा से सिद्धि सम्पन्न ऋद्धि का निधित्व है, जो कच्चा-पक्का सभी तरह का भण्डार भरा रहा । **सभी आश्रमधारी विरक्त महन्तों एवं समर्पित सेवादारों को साकेत शताब्दी अंकित चाँदी सिक्का** एवं नियमानुसार भेंट तथा साधारण साधु-सन्तों को यथावत संतुष्ठि भेंट दी गई, प्रशासन का प्रशंसनीय सहयोग रहा ।

विभिन्न जिलों प्रदेशों से आये लोग भी अपने यहाँ गाँव वितरण करने हेतु प्रसादी लेते गये । सभी को आश्रम की दर्शनीय निधि लॉकिट, पेन, बासठ वर्षीय एवं ११२ वर्षीय कैलेण्डर, समुचित साहित्यक सामग्री का खुले दरबार से वितरण हुआ ।

(४) गूदड़गद्दी जोधपुर के चतुर्थ पीठाधिष्वर स्वामी अचलराम जी महाराज -

आत्म परिचय, **आचार्य सुबोध चरितामृत**, **वाणी प्रकाश**, **जीवन स्मारिका** इत्यादि ग्रन्थों में पूर्व प्रकाशित है । आप का परिचय आप का प्रसिद्ध साहित्य दर्शाता है । श्री स्वामी अचलराम जी महाराज का जन्म वि.सं. १९२८ और

मन्त्र दीक्षा वि.सं. १६४०, भेष दीक्षा वि.सं. १६५८ आषाढ सुदि चतुर्दशी शुभवार तथा महाप्रयाण वि.सं. १६६६ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्र ७ शुक्रवार को हुआ। इस तारतम्य में **दीक्षा शताब्दी वि.सं. २०५८ गुरु पूर्णिमा गुरुवार तदानु दिनांक ५-७-२००१ ई. को सम्पन्न होती है।** हमारे आचार्यपीठ की गरिमा स्वरूप सं. २०५८ आषाढ गुरु पूर्णिमा दिनांक ५ जुलाई ०१ से वि.सं. २०५६ आषाढ गुरु पूर्णिमा दिनांक २४ जुलाई २००२ ई. बुधवार को **दीक्षा शताब्दी** वर्ष के नाम से घोषित करते हुए **पूर्वाचार्य स्मृति स्थल के पावनधाम की रूपरेखा निर्माण** में लगाया तथा आगामी **स्वामी सुखराम साकेत शताब्दी पर्वोत्सव** की सामीप्यता के कारण दोनों का **दीक्षा-साकेत संगम शतक** मनाया गया। इस **दीक्षा शताब्दी को उत्तम आश्रम प्रांगण में वि.सं. २०५८ आषाढ सुदि चतुर्दशी गुरु पूर्णिमा को** सदा की भान्ति **सामुहिक अखण्ड रामायण** पाठ, रामनवमी उत्सव, **वार्षिक दीक्षा पर्वोत्सव महेश नवमी** तथा वि.सं. २०५६ **आषाढ सुदि चतुर्दशी मंगल को अखण्ड रामचरितमानस** एवं **गुरु पूर्णिमा हर्षोत्सव** मनाया गया। श्री **वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा)** में वि.सं. २०५६ आश्विन वदि १३ शुक्रवार, दिनांक ४.१०.०२ को **विश्व शान्ति** यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। वर्ष भर अन्यान्य **श्री वैष्णव धर्म सम्प्रदाय के नियमानुसार धार्मिक कार्यक्रम** संयोजन होते रहे तथा दिनांक **१६ फरवरी २००३ फाल्गुन वदि ३ बुधवार को विश्व आपदा निवारण** हेतु **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) में गायत्री महायज्ञानुष्ठान** एवं **जानकी सतसंग भवन (उत्तम आश्रम)** में **हरिसागर, वाणी प्रकाश आदि ग्रन्थों से गुरु वाणी पाठ का आयोजन सम्पन्न हुआ।** दूसरे दिन नियोजित आयोजनानुसार **सुखराम साकेत शताब्दी** के तहत कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

(५) गूदड़ गद्दी जोधपुर के पंचम पीठाधिष्वर सतगुरुदेव स्वामी उत्तमराम जी महाराज -

आप का परिचय **आचार्य सुबोध चरितामृत** में सविस्तृत एवं अन्यान्य आप की रचना कृति ग्रन्थों में लिखा गया है, किन्तु मुख्यतः यहाँ हम संक्षिप्त दर्शन करवाते हैं। **स्वामी उत्तमराम जी महाराज** का जन्म वि. सं. १६२६ रामनवमी, मन्त्रोपदेश सेन दीक्षा १६५६, एवं १६६० में भेष दीक्षा वि. सं. १६६४ ज्येष्ठ सुदि महेश नवमी, महाप्रयाण (ब्रह्मलीन) वि. सं. २०३४ आषाढ सुदि सूर्यनवमी शनिवार। इनकी **दीक्षा स्मृति पर्वोत्सव प्रतिवर्ष ज्येष्ठ सुदि महेश नवमी** को सर्व सन्त स्मृति के रूप में मनाया जाता है। इस समय भारत के कई प्रान्तों एवं राजस्थान के विभिन्न जिलों से हरि गुरु भक्त आस्थावान श्रद्धालुजन आकर नित्य निमन्त्रण, घोषित आमन्त्रण से श्रद्धा पुष्प चढ़ाते हैं।

- "चैत्र शुक्ल नवमी सुखदायक, तिहि दिन जन्म लियो रघुनायक ।।" (तु.रा. वनवास ति.प. १/१)
- "जे नवमी के होय उपासी । ते सब हों बैकुंठ निवासी ।।"
- "नवमी व्रत अतिसै सुखदाई । यहि सम सुलभ न व्रत जगभाई ।।"
- "जो दरसै प्रभु जन्म स्थाना । सो यम लोक न जावै प्राना ।।" (बि.सा.अ. ४/२६)

वि. सं. २०४७ ज्येष्ठ सुदि ६ शुक्रवार दिनांक १ जून १६६० ई. को **"श्री आदर्श उत्तम राम गुरु मन्दिर"** में संगमरमर आदमकद विराजमान मूर्ति का आचार्यगण के कर-कमलों से अनावरण किया गया। तत्समय भी विशाल शोभायात्रा में नगर के प्रसिद्ध सात व्यायाम शालाओं के साथ पाँच घोड़े, कई दर्जानाधिक्य चौचक्र वाहन, जनसमूह के साथ १०१ मंगल कलश लिये सौहागिन महिलाओं के साथ दो बैण्ड बाजे हरिकीर्तन ध्वनि प्रसारण से करते नगर परिक्रमा में सम्मिलित हुए थे। आपका **अष्ठोत्तर जयन्ति वर्ष** वि. सं. २०३३ चैत्र वदि २ से सुदि २ में मनाया गया था।

महेश नवमी को रात्रि भर सतसंग प्रतिवर्ष **उत्तम आश्रम के प्रांगण** में मनाते रहे हैं। दूसरे दिन गंगादशमी के प्रातः **उत्तम आश्रम से श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा)** समाधियों पर पुष्पांजलि प्रसाद चढ़ा कर धूप-दीप सम्पन्न आरती पूजा की जाती है। वापिस भक्तगण बैण्ड ध्वनि, जय ध्वनि संग अनुराग नृत्य से आश्रम पहुँच कर गुरु गद्दी, पूर्वाचार्य चरण पादुका, वस्त्र संग आचार्य पीठ गरिमा छड़ी, छत्र, चँवर के पूजनोपरान्त **श्री सन्त वैश्णवाराधन** प्रसादी का आयोजन किया जाता रहा है।

अब वि. सं. **2060 ज्येष्ठ सुदि नवमी से उत्तम आश्रम प्रांगण संकुचित एवं कई असुविधाओं के होने** से क्रम में परिवर्तन किया जाता है कि आगे **प्रतिवर्ष रात्रि सतसंग हरिकीर्तन (जागरण) श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) प्रांगण** में ही किया जायेगा और शेष सभी प्रक्रियाऐं पूर्ववत ही संचालित होती रहेगी।

अद्यावधि सदैवतः **प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल महेश नवमी** की रात्रि भव्य संत समागम, हरिसंकीर्तन, भजन सन्ध्या, प्रवचन उपदेश तथा दूसरे दिन **गंगादशमी** को **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल** (कागा) म शोभायात्रा सहित पूर्वाचार्यो की समाधियों का पूजन अर्चन एवं गुरुगद्दी, खड़ाऊ सहित आचार्यपीठ गरिमा छड़ी, छत्र, चँवर की पूजा आरती की जाती है।

आपके जीवन की नवमी का अटल अंक अपने इष्ट म समैक्यता का महत्व दर्शन करवाता है, जो **सुखराम दर्पण** के (पृष्ठ ५४९ से ५६६) ८१/१० पद्यांश की व्याख्या एवं **विश्वकर्मा कला दर्शन** इत्यादि पूर्व रचनाओं में कथन हुआ है। यथा - स्वर = १८ + व्यंजन = ३६ - दोनों का योग = ५४ (चौवन) हुआ। अर्थात् ५४ = ५+४ का योग करने पर ९ का अंक भी पूर्णांक है, जिन के विना भाषा-भाव भरा सारा संसार-शास्त्र शुन्य है।

- राम = र + आ + म

  २७ + २ + २५ = ५४ अर्थात् ५+४ = ९ भी पूर्णांक है।

- सीता = स + ई + त + आ

  ३२ + ४ + १६ + २ = ५४ अर्थात् ५+४ = ९ भी पूर्णांक है।

- सीताराम = स + ई + त + आ + र + आ + म

  ३२ + ४ , १६ + २ , २७ + २ २५

  ३६ + १८ + २९ + २५ = १०८ = १+८ = ९ यह भी पूर्णांक है।

- ब्रह्म= ब + र + ह + म

  २३ + २७ + ३३ + २५ = १०८ = १ + ० + ८ = ९ यहाँ यह भी पूर्णांक है।

इस प्रकार एक से नव तक के अंकों में नव का अंक पूर्णांक ब्रह्म स्वरूप तत्वदर्शन का है तथा नव का अंक - अंकों की सीमा है। इसके आगे कोई अंक नहीं होता, वैसे ही श्रीराम सब (जीवात्मा) की सीमा है, सबसे परे हैं। प्रभु श्रीराम के परे कोई नहीं है। इस अंक में जन्मे प्रभु श्रीराम पूर्ण परब्रह्म हैं, जो सबको आनन्द देने वाले भक्तों की रक्षा एवं कामना पूर्ण करने वाले हैं, इसी प्रकार श्री सतगुरु देव उत्तमरामजी का जीवन भी अद्भुत चमत्कारी तपोमय तत्वदर्शी, अनुभव वेता के सामर्थ्य में भक्त मन रंजन, सब दुःख भंजन, भव भय अंजन जैसा रहा है और है।

मनमुखी जनों का शास्त्र अध्ययन एवं अल्पज्ञ वृति से प्राप्त अल्प बोध ही विवाद का कारण होता है।

"ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।" (श्रुति)

यह ब्रह्म तत्व पूर्ण है, यह विश्व पूर्ण है, पूर्ण में से पूर्ण का प्रादुर्भाव होता है (पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण लेकर इस पूर्ण सृष्टि का निर्माण हुआ है) पूर्ण में से पूर्ण घटाने के पश्चात् भी अवशेष पूर्ण ही शेष रहता है ।

अतः आप प्रतिवर्ष ज्येष्ठ सुदि ९-१० दो दिन के लिये सदा आमन्त्रित हैं, अपना समय सद्भाव से निकालिये और तन मन धन को सार्थक करके जीवन को कल्याणमय बनाने में गुरुजनों का वरद आशिर्वचन प्राप्त कीजिये ।

श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वारस्थ सन्तदासोत गूदड़ गद्दी आचार्यपीठ जोधपुर द्वारा सम्प्रदायोत्थान के सक्षम प्रयास में अद्भुत उपलब्धि

१ - सम्प्रदायोत्थान के संकल्पित कार्य प्रगति में (१) अनन्त **श्री स्वामी हरिरामजी महाराज** (वि.सं. २०३३) (२) **श्री स्वामी जीयाराम जी महाराज** (वि.सं. २०५४) स्मारिका (३) **श्री स्वामी सुखराम जी महाराज** की (वि. सं. २०५९) की स्मारिका से **तीन शताब्दी** काल के पर्वोत्सवों के साथ **स्वामी उत्तमराम जी महाराज के अष्ठोत्तर** जयन्ति वर्षान्तर (वि.सं. २०३३) तथा **श्री स्वामी अचलराम जी महाराज की दीक्षा शती** में वर्ष भर के कार्य संयोजित होते प्रस्तुत **अचलोत्तम दीक्षा पर्वोत्सव स्मारिका** का प्रकाशन दिया जा रहा है ।

२ - श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वार स्थल सन्तदासोत गूदड़गद्दी की मूल धारा के संग रामस्नेही परम्पराओं में ११८ गुरु-शिष्य पीढ़ी का शोद्धपूर्ण ऐतिहासिक दर्शन ग्रन्थ **आचार्य सुबोध चरितामृत** का वि.सं. २०४७ सन् १९९० में लोकार्पण

३ - अपने शोद्ध कार्य में (१) **स्वामी गंगारामजी के साथ हरिरामजी** - दोनों का दर्शन चित्र (२) **श्री गंगारामजी, हरिरामजी, नेनूरामजी** तीनों गुरु शिष्यों का चित्र दर्शन (३) **श्री गंगारामजी महाराज का चम्बल नदी घाट स्थित श्रीराम आश्रम एवं समाधि दर्शन चित्र** (४) **श्री हरिरामजी महाराज के साथ पूर्व जोधपुर नरेश तखतसिंह** जी दोनों का चित्र (५) **श्री हरिराम जी की युवावस्था साधन काल** का दर्शन चित्र, उपयुक्त **दुर्लभ दर्शन चित्रों** के साथ विभिन्न परम्पराओं में **स्वामी हरिराम जी वैरागी** के **आश्रमों/शिष्यों, स्वामी सुखरामजी के अनेक शिष्यों के ऐतिहासिक नामों की खोज के कार्य** हुए हैं । **अतिरिक्त गुरु पीढी पूर्वाचार्यों की अनुभव वाणी, गुरु साहित्य के 13 अपूर्व ग्रन्थों के साथ स्वरचना के ३२ ग्रन्थ** और बाहरी इष्ट-मित्र **सन्त रचना के ५५ ग्रन्थों** के साथ **एक लाख विविध चित्रों का वितरण** होना, **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) का जीर्णोद्धार/ समाधियों का पुनरूद्धार** एवं **आचार्य सुबोध चरितामृत** श्री वैष्णव सन्तदासोत गूदड़ गद्दी के पूर्वाचार्यों सहित ११८ गुरु-शिष्य परम्परा पीढि दर्शन ग्रन्थ का लोकार्पण सहित **खोई हुई जोधपुर गूदड़ गद्दी की गरिमा** के उत्थान दर्शन प्राप्ति में विसर्जित **कण्ठी-तिलकादि** का **वैधानिक पुनरूत्थान**, हरिरामजी कृत आरती से पूजा-अर्चना आदि सम्प्रदाय के अपूर्व गौरव कार्य हुए हैं, जो अपने आपमें सफल प्रयास की उपलब्धि है ।

श्री सुखराम साकेत शताब्दी (20 फरवरी 2003) ई. के पावन अवसर पर अग्रपीठाधिश्वर श्री स्वामी राघवाचार्यजी महाराज के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञान के अजस्र स्रोत एवं आशिर्वचन का सारांश

आज कागा के इस पावन धाम में महापुरुषों की समाधि स्थली में दाँन्तड़ा के पीठाधिश्वर श्री निर्मलरामजी के सानिध्य और श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज के परम पावन संयोजकत्व में, आप सबके बीच में स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत तिथि का शताब्दी वर्ष और स्वामी अचलरामजी महाराज की दीक्षा शताब्दी के वर्ष पर हम सब भिन्न-भिन्न प्रान्तों से, भिन्न-भिन्न स्थानों से यहाँ आये हैं। आप सब के मन में यह जिज्ञासा हो सकती है कि हम यहाँ क्यों आये हैं ? हम लोग रोटी व फल खाते या दूध पीते हैं। इससे हमारा शरीर पुष्ट होता है, शक्तिशाली बन जाते हैं, किन्तु उस रोटी-दाल, फल-फ्रूट से हमारी आत्मा भी बलवान हो जाती है, ऐसा कोई निश्चय नहीं है। बहुत खाने वालों को हमने देखा है, बड़े अत्याचार, दुराचार करते हैं, वे इसलिये करते हैं कि शरीर को सुख पहुँचाने का उद्देश्य उन्होंने साधा, शरीर को ही मुख्य मान करके इस जीवन में आकर भी उनकी आत्मा अतृप्त ही रह जाती है। आत्मा को भी भोजन जब तक आप नहीं दोगे, तो चाहे कितने ही पैसे वाले बन जाओ, कोठी, गाड़ी वाले बन जाओ, किन्तु आपकी आत्मा ज़िन्दगी भर रोती रहेगी, कभी भी आपको सुख की नींद नहीं आयेगी और आप इसलिये यहाँ आये हैं कि उस खुराक को पाथेय बना कर, जीवन में उतारेंगे, उस नाम के जप की उपासना पद्धतियों को अपनायेंगे और रोज आत्मा को खुराक भी देंगे। आपका शरीर भले कमजोर रहे, लेकिन आपकी आत्मा बलवान हो जाएगी। जब आत्मा बलवान हो जायेगी तो आप भीषण कलिकाल में भी एक श्रेष्ठ नागरिक या श्रेष्ठ मनुष्य की तरह अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं।

आप सबको मालूम है स्वामी सुखरामजी महाराज के पास बहुत बड़ा वैभव नहीं था, किन्तु उन्होंने अपनी आत्मा को इतनी खुराक दी वो इतना बलवान बना दिया कि लोग उनके चरणों में शान्ति प्राप्त करने के लिये आज तक जाते हैं। जितने भी पूर्वाचार्यों का वर्णन हुआ, उन सबने अपनी आत्मा को बलवान बनाया। उन्होंने कभी भी अपने शरीर को बलवान बनाने की चिन्ता नहीं की इसलिये भारत की इस पावन धरा पर जन्म लेने के बाद यदि हम सब लोग केवल भौतिक पदार्थों की उन्नति देह सौष्ठव के लिये चिन्तन करेंगें, तो आपको बता देना चाहता हूँ, कितना ही व्यापार अर्जन कर लो, आपको कभी भी आत्म शान्ति की प्रतीति नहीं हो सकती है। लोगों को नींद की गोली लेकर सोना पड़ता है। क्योंकि उन्होंने शरीर को तो पुष्ट किया परन्तु आत्मा की तृप्ति के लिये कोई प्रयास नहीं किया, आत्मा की सन्तुष्टि के लिये कोई चिन्ता नहीं की। हम सब लोग अध्यात्म की खुराक से आत्मा को परितृप्त नहीं करेंगे तो आत्मा रोएगी। इसलिए मानव योनि की परम सार्थकता इसी में है कि हम लोग बचपन से ही आत्मा को खुराक देना सीखें। यह अध्यात्म का मार्ग ऐसा नहीं है कि बुढ़ापे में अपनाया जावे। कुमार अवस्था से ही आत्मा की खुराक अर्थात् अध्यात्म चिन्तन का मार्ग अपना कर आत्मा को बलवान बना लेना चाहिए कि **'लाभालाभो जयाजयो'** की विषम परिस्थितियों में भी अपनी साम्य अवस्था को प्राप्त करके, अपना जीवन दिव्य बना लें। यही जीवन की सार्थकता है, यह सब सत्संग से होता है। **'बिनु सत्संग न हरि कृपा, तेहि बिन मोह न भाग'** इसलिये सत्संग करना जरूरी है। परन्तु हमारे साथ विषम परिस्थिति है। सत्संग से विवेक व सुखानन्द की प्राप्ति होती है, किन्तु अभी हम सब लोग बैठे सत्संग की बात सुन रहे हैं। हमें दूसरे लोक को चयन करने में, अध्यात्म में पैठना होगा, किन्तु यह कब तक ? जब तक हम यहाँ बैठे हैं। जब हम घर जायेंगे और

कुसंग यदि हमारे साथ हो गया तो जितना हमने यहाँ किया वह सब का सब बेकार हो जायेगा । एक रस ज्ञान हो जाय तो परमात्मा और जीव में अन्तर क्या है ? जीवात्मा की एक कमी है । सत्संग को प्राप्त करके हमारा ज्ञान उदित हो जाता है और कुसंग को प्राप्त करके हमारा ज्ञान लुप्त हो जाता है । ध्यान में यह रखना है कि हमें यहाँ से जाने के बाद इस ज्ञान को बचाकर कैसे रखें । यहाँ तो इतने संतों का सानिध्य है, श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज का पावन सानिध्य है, यहाँ तो हमें मोह घेर नहीं रहा, यहाँ तो हमको चेतना मिल रही है, किन्तु घर में श्री रामप्रकाशाचार्य जी नहीं मिलेंगे । घर में तो वही रोना मोह जंजाल की बातें चालू होने वाली हैं । यह आपका सौभाग्य समझिए कि श्री रामप्रकाशाचार्य जी ने समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ उन महापुरुषों की वाणियों का जो बड़ा गूढ है, मुझे भी अर्थ समझ में नहीं आता, एक बार मैं मठ में बैठा था, एक दोहा लिखा हुआ था, उसका अर्थ मुझे नहीं लग रहा था, मुझे यह शर्म नहीं लगी कि मैं एक वेदान्ताचार्य हूँ और एक संत से पूछ रहा हूँ कि इस का अर्थ बता दो, क्योंकि महात्माओं की वाणियाँ अत्यन्त गूढ़ है । किस भाव से वह क्या कहना चाहते हैं ? श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज को ठाकुर जी ने एक विलक्षण प्रतिभा दी है, इसकी साधना का परिणाम हो या पूर्वाचार्यों की कृपा हो, किन्तु विलक्षण प्रतिभा प्राप्त है कि गूढ से गूढ हिन्दी साहित्य के अर्थों का ऐसा समुचित अनुवाद करते हैं कि बात बिल्कुल बैठ जाती है । हम यहाँ से जायेंगे किन्तु आपके लिये पाथेय के रूप में, जीवन भर सत्संग करने के लिये आपने ग्रन्थों की टीका कही है । महापुरुषों के जो अनुभूत पद थे, सुखरामजी महाराज के जीवन में जो अनुभूत क्षण थे, उस अनुभव वाणी को आपने लेखनीबद्ध किया और श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज ने उसको अर्थ के साथ सम्बद्ध कर दिया, कितना बड़ा सत्संग है यह, सुखरामजी महाराज को साकेतवास हुए सौ वर्ष बीत गये, अब वे इस ढाँचे के रूप में हमारे सामने नहीं आयेंगे, किन्तु हम चाहें कि सुखरामजी महाराज का सानिध्य जिस समय, जितने बज कर जितने मिनट पर चाहे, रोज प्राप्त कर सकते हैं, उनके साहित्य ग्रन्थ के माध्यम से । आज रामानन्दाचार्य जी, तुलसीदासजी, कबीरजी, शंकराचार्य जी धरती पर नहीं है, किन्तु उन्होंने जो वाणियाँ अथवा जो साहित्य लिखा है उसको पढ़िए और आप घर बैठे, इतने बड़े महापुरुषों का सत्संग घर में प्राप्त कर सकते हैं । वाणियों का चिन्तन इसलिये करेंगे कि हमारे जीवन में कभी कुसंग कब्जा नहीं करें और इसलिये पावन धारा से प्रभावित होकर श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज ने जो दिव्य कार्य किया है वह आप सब लोगों के जीवन का पाथेय हैं । इस पाथेय को लेकर चलिये, कभी भी भ्रम या कष्ट के दिन में आपका मार्ग दर्शन करेगा । जो आदमी लोकिक सिद्धि वाले साधु को ढूँढता है, वह परमार्थ से भटक भी सकता है । लौकिक सिद्धियाँ भटका देती है । जादूगर बहुत रोमांच भरे काम दिखा देता है । सबसे बड़ी उपलब्धि अपनी आत्मा को परमात्मा के नजदीक बैठाना है । आत्मा और परमात्मा का ऐक्य स्थापित करना है, यह बहादुरी का काम है । इसलिये इस दिशा में करूणा करके श्री रामप्रकाशाचार्य जी ने इन ग्रन्थों का जो लोकार्पण करवाया है । इन ग्रन्थों के माध्यम से मानों आपको एक संदेश देना चाहते हैं कि घर में भी सुखरामजी महाराज से मिलना चाहो तो उनका साहित्य पढ़ो, रोज सत्संग करो । जब-जब मन भ्रमित हो जाए, जब आत्मा को खुराक नहीं मिले तो वाणी का पाठ करो । इसका मतलब यह नहीं है कि केवल आरती करते रहो और उसको मन में नहीं उतारोगे तो आरती कोई काम वाली नहीं है । आरती का मतलब है - महापुरुषों की वाणियों के प्रति सम्मान । महापुरुष जब इस धरती से जाते हैं तो अपने साहित्य के रूप में यहीं रह जाते हैं । भगवान श्री कृष्ण धरती से जाने लगे तो उद्धवजी से कहा - मैं भागवत के रूप में इसी ग्रन्थ के भीतर समाहित होकर जा रहा हूँ । जब कभी भी मेरा सान्निध्य प्राप्त करना चाहो, भागवत के माध्यम से मेरा सानिध्य प्राप्त कर सकते हैं । उसी प्रकार जितने भी पूर्वाचार्य इस सम्प्रदाय में हुए, सारे के सारे पूर्वाचार्यों

ने अपने जीवन में साधन-सार गर्भित अनुभव वाणियाँ लिखी है।'जिन्होंने अपने अनुभव से जी जीवन में उतारा है, ऐसी ओजस्वी तपोमय वाणियों का पाठ करके, उसके अर्थों का रसास्वादन करके आप अपनी आत्मा को सदा खुराक दीजिए और अध्यात्म चिन्तन से परिपुष्ट-परितृप्त करो। निश्चित रूप से आपका जीवन धन्य होगा।

मैंने यहाँ भक्तों में बहुत ही निराली निष्ठा, गुरु भक्ति और आस्था देखी। प्रातःकाल वह १२-१३ किलोमीटर का लम्बा रास्ता, वो विशाल लम्बी शोभायात्रा कोई आदमी थका नहीं, सब उत्साह से चलते रहे, चलते रहे तो चलते ही रहे। श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज भी चलते रहे। मैं तो यह सोच रहा था कि ये वृद्ध महात्मा, जो कई महिनों से इस **शताब्दी कार्यक्रम** की तैयारी कर रहे हैं, परन्तु उस शोभायात्रा में मानो अपने पूर्वाचार्यों के प्रति श्रद्धा का पुष्प समर्पित करने के लिये पैदल ही बड़े उत्साह से चले हैं। देखिए मैं एक बात बता देना चाहता हूँ कि भक्त का कभी नाश नहीं होता है, भक्त सदैव विद्यमान रहता है, क्योंकि उस महान चेतना में वह समाहित हो गये हैं, ब्रह्म का स्वरूप बन गये हैं, उनकी सत्ता सब जगह है। भक्त की भी सत्ता सब जगह है, इसलिये हम लोग यहाँ बैठे हैं। सुखरामजी महाराज, जीयारामजी महाराज और उत्तमरामजी महाराज भी हमारी बातें सुन रहे हैं, ऐसा मत सोचना कि वे अब तो यहाँ नहीं है, सब जगह वे उन्हीं की प्रेरणा व ऊर्जा से विद्यमान हैं। ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होती, हम लोगों की ऊर्जा समाप्त हो जाती है। भगवान राम लाखों वर्ष पहले हुए किन्तु ऊर्जा, उनका तपोबल, उनकी प्रज्ञा, प्रतिभा आज भी हमको प्रभावित कर रही है। भगवान कृष्ण हजारों वर्ष पहले हुए परन्तु उनकी प्रतिभा, प्रज्ञा आज भी हमारी स्मृति पटल से विलुप्त नहीं होती है। श्री सुखरामजी महाराज वर्षों पहले हुए हैं, किन्तु आज भी हमारी स्मृति पटल पर वैसे ही बैठे हुए हैं, जैसे अपनी सजीव अवस्था में थे। कौन बैठते हैं ऐसे ? जिनका जीवन तपोमय होता है, वे शताब्दियों तक भक्तों के हृदय आकाश में बैठकर प्रकाश-पुंज से प्रभावित करते रहते हैं। वे महापुरुष आज भी हमारी उपस्थिति गिन रहे हैं कि कौन भक्त कहाँ से, किस श्रद्धा भाव से आया है। निश्चित रूप से आप सब लोग इस पावन अवसर पर अपने पाथेय को प्राप्त करें, अपने जीवन को सफल करें। **श्री रामप्रकाशाचार्य जी तो मेरे अभिन्न हैं**। मेरा परिचय नहीं था कि **रेवासा परिवार** का एक इतना बड़ा भाग, इतना बड़ा परिवार और भी है, ऐसा मैं कभी नहीं जानता था, किन्तु श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज आज से बीस वर्ष पहले रेवासा पीठ में पधारे। मैं गद्दी पर बैठा ही था और आपने मुझे परिचय करवाया कि रामानन्द सम्प्रदाय में अग्रद्वारा की धारा से चौदह द्वारों के अलावा भी राजस्थान प्रान्त में **रेवासा गद्दी की विशाल परम्परा** है, अगर **उनका प्रयास नहीं होता तो आज मैं न दाँन्तड़ा वालों से मिल सकता, न ही दाँन्तड़ा वाले मुझसे मिल सकते थे**, किन्तु महाराज जी का प्रयास है कि हम सब लोग निकट आ रहे हैं, एक दूसरे का चिन्तन आदान-प्रदान कर रहे हैं और हमारी आध्यातिक परम्परा का जो वटवृक्ष है, उसका हमें पूर्णतः बोध हो रहा है। इसलिये मैं **श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज का कृतज्ञ** हूँ। दूसरी विशेषता श्री रामप्रकाशाचार्य जी में है, उनकी लेखनी बन्द नहीं होती है। लिखते ही रहते हैं, वृद्ध शरीर होते हुए भी, बस में भी सोच रहे हैं, ट्रेन में बैठे हैं तो भी लिख रहे हैं। इनकी लेखनी बन्द नहीं होती। वेद व्यास जी महाराज दिन-रात लिखा करते थे। ऐसे ही श्री रामप्रकाशाचार्य जी भी दिन-रात लिखते ही रहते हैं। आज आप सबका सौभाग्य है कि एक ऐसा श्रेष्ठ महापुरुष आपके सम्प्रदाय में आपको मार्गदर्शक के रूप में मिले हैं। मैं इन की दीर्घायु और मंगल कामना करता हूँ कि ठाकुरजी (रामजी) इनसे आध्यात्मिक क्षेत्र में निरन्तर इनकी लेखनी से लोगों को चेतना देने का काम सम्पादित करवाते रहे। आप सबकी मंगल-कामना करता हुआ वाणी को विराम देता हूँ।
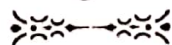
सम्प्रदाय में कृतघ्नता पूर्ण अपवाद

श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदायान्तर्गत अग्रद्वार की **सन्तदासोत गूदड़गदी आचार्यपीठ जोधपुर** की बाहुल्य विस्तार शाखोपशाखा में हुए सन्त अपनी ईर्षाग्नि भरा दम्भ प्रदर्शन करने में कृतघ्नता के कार्य से नहीं चूकते। उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) के शोद्ध पूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण पुष्ट नैतिक कार्य एवं मर्यादित गरिमाऐं स्वीकार करने में हिचकते हैं और मनमुखी कार्यों के साथ ईर्षामय नकल करने में अग्रसर कृतघ्नता कार्य करने में लगे हैं। कागजी साक्षरता की उपाधियों के होते हुए भी लेखन/शोद्धन शक्ति के अभाव में येन केन प्रकारेण हौड़ की दौर करते किसी अन्यों द्वारा लेखबद्ध कार्य/रचनाएं लिखवाते झूठी साहित्यक उपमाऐं जोड़ने में लगे हैं। जिनके पिता खड़े-खड़े खाते या मूतते हैं, उनके बेटे चलते-चलते राह में खाते-मूतते हैं, यह सदा की रीति रही है। इसी तरह जिनके गुरुओं ने गुरु-भेष, सम्प्रदाय को ढकेल कर हमेशा सन्तों-भक्तों में फूट डालने के ही जीवन भर काम किय, उनके उत्तराधिकारी-शिष्य उनसे भी आगे रहेंगे और कोई उन के पास साधन-सामग्री ही नहीं है।

साहित्य के कर्णापाटव, प्रमाद, लोभ, भ्रमादि दोषों से अनभिज्ञ यत्र तत्र से चित्र दर्शन जोड़-तोड़ कर कई अपना इतिहास रचाते या पूर्वजों के नाम बेप्रमाण सिख्रियों का उल्लेख करते हैं अथवा कई अध्यापक वृति एवं घर-गृहस्थी के प्रपंची जीवन में रहकर अपने को महन्त या घर को ही रामद्वारा घोषित करते नहीं शर्माते हैं। **आचार्यपीठ पर शोभित पीठाधिश्वर भी लोभ में आकर ऐसी अमर्यादित खिलवाड़ करने वालों को प्रोत्साहन करने में पीछे नहीं रहते हैं।** ऐसी अमर्यादित घृणित प्रतिष्ठा प्राप्त करने की लालसा में निश्चित ही एक दिन सम्प्रदाय का नियमित दर्शन पटाक्षेप/नष्ट हो जायगा, इसमें कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। **गुरु परम्पराओं की मर्यादित रक्षा करना मूल पीठाधिश्वरों का कार्य है।** उन्हें पूछा नहीं जाता कि आप की परम्परा-पहिचान, नैतिकता पालन, चद्दर दस्तूरी का आवाम इत्यादि की सम्प्रदाय पहिचान के पूर्वानुमान जाने बिना ही भेंट का सौदा तय करके ईर्षाग्नि को बढ़ावा देना अपना पतन करना है। धर्म सम्प्रदाय कोई व्यापारिक प्रतिष्ठान नहीं है कि जहाँ भाव तेज (अधिक भेंट) मिले वहाँ चले जाय। इसी कड़ी में सावधान करते आलेख है कि -

गूदड़ गदी आचार्यपीठ जोधपुर की रक्षा अन्यान्य परम्परा के पोषित संस्कारों से अनुयायीगण नहीं कर रहे हैं। वरन **श्री हरिरामजी वैरागी की सम्प्रदाय परम्परा** के साधुओं की मर्यादित रक्षा गौरवशील उत्तम आश्रम जोधपुर कर रहा है। **परम्परा के नाम से जीवित रहने वाले आश्रमधारी या कण्ठीबन्द साधुजनों के कारण ''हरिराम जी वैरागी की गद्दी'' सुरक्षित नहीं है, अपितु उनकी गद्दी पीठ के व्यवस्था सारथ्य के कारण से उनके आश्रमों की साधुता सुरक्षित है कि आज आचार्यपीठ की मर्यादित शैली पूर्ण पूर्वाचार्यों के श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (सन्त समाधियों) की संरक्षा संग सुरक्षा निर्माण के साथ पूर्वाचार्यों का शोधपूर्ण पारम्परिक ऐतिहासिक परिचय, प्रकाशन एवं पूर्वाचार्यों के प्रमाणिक रचना ग्रन्थों से प्रसारित आध्यात्मिकता पुष्ट सामाजिक, नैतिक, आर्थिक प्रगति के समर्थक वर्गविहीन समाज रचना में सहयोगी मानवता जागरण का अनुभव स्रोत शंख नाद इत्यादि सभी प्रकार से साधु-सम्प्रदाय के जीवन प्राण सर्वस्व में गरिमा सूत्र का संरक्षण यह सब उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़ गदी जोधपुर के प्राप्त लाभों से अनुप्राणित एवं सजीव है।**

ईर्षा, शोक, भय, क्रोध, अहंकार और द्वेष यह मानसिक रोग प्रज्ञापराध है।

श्री वैष्णव रामानन्द सम्प्रदाय की गूदड़ गद्दी (आचार्यपीठ) जोधपुर की मुख्य धारा या शाखोपशाखाओं के पूर्वाग्रहों से हट कर विभिक्त **साधु परम्पराओं के साधुओं एवं आस्थावान भक्तों को ऐसे भ्रमित लोगों की समस्याओं को गहराई से समझना होगा । भड़काने वाली शक्तियों के अलावा भ्रमित होने वाले लोगों का भी एक बड़ा वर्ग है ।**

सर्वसाधारण षट्दर्शन साधु भेष सम्प्रदाय को सूचित किया जाता है कि श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के शिष्य श्री बीजलदासजी के मोक्षद्वार (बीजल आश्रम) को श्रीवैष्णव सन्तदासोत गूदड़ भेष सम्प्रदाय तथा उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) एवं स्वामी उत्तमराम जी की शिष्य परम्परा प्रणाली से सदा के लिये सम्बन्ध विच्छेदित अलग कर दिया गया है । साधु सम्प्रदाय के नैतिक नियमानुसार अद्यतन कोई किसी को भी महन्त की चद्दर दस्तूरी नहीं हुई है और न आगे ही की जायेगी । **श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वारा के सन्तदासोत गूदड़ गदी उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) की गुरु परम्परा में धर्म सम्प्रदाय एवं सन्त समाज के निर्धारित मापदण्डों पर खरा न उतरने वाला साधु या भेषधारी सन्त स्वयमेव ही सम्प्रदाय से बहिष्कृत हो जाता है, तब वह सन्त पद्धति से सम्बन्धित सन्त अनुयायी या महन्त या आचार्य नहीं रहता है ।**

आस्तिक धर्म-प्राण जनता जनार्दन एवं साधु समाज सनातन विरक्त भेष परम्परा की गरिमा को ध्यान में रख कर सावधान रहें । अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये यदि कोई हठधर्मी से उपयुक्त धर्म सम्प्रदाय से अपना सम्बन्ध कथन करता है/ नाता जोड़ने की अपनत्व बात लिखता है तो वह अन्यायपूर्ण केवल स्वार्थ सिद्धि का बदियान्ति भाव है । अतः सतसंग पूजा-प्रसाद भाव पंगत भेट प्रतिष्ठा में सावधानी का व्यवहार अपनावें ।

जिन्होंने कभी पूर्वाचार्यों की स्मृति स्थल समाधि के दर्शन करके श्रद्धांजलि के दो पुष्प नहीं चढ़ाये, वे कण्ठीबन्द सद्गृहस्थ या विरक्त सन्त परम्परा के आचार्यों की प्रणाली से जुड़े रहने की बात केवल रोजी-रोटी प्रतिष्ठा की भूख मिटाने की गरज से करते हैं । जब तक शाखोपशाखा वालों द्वारा पूर्वाचार्यों के प्रति कृतज्ञता पूर्ण श्रद्धा व्यक्त नहीं की जाती, तब तक उनके द्वारा किये जाने वाले सभी कृत्य केवल चोंचले हैं, जिनसे जनता को भ्रमित करते हैं और जीवनयापन चलाते हैं, अतिरिक्त वास्तविकता कुछ नहीं ।

पारम्परिक गुरुधाम को छोड़ कर छलांग मारते दॉन्तड़ा धाम/जाटावास धाम या अन्येत्तर किसी पीठ के पीठाचार्य को बुला कर अपनी सन्तुष्ठि मान लेना भी अपना ही पतन करना है । शाखोपशाखा के माध्यम से पीठ या मुख्यधाम तक पहुँचने की परम्परा है, अन्य व्यभिचारिणी भक्ति का कोई कहीं भी विधान रहा नहीं और होगा नहीं ।

सदा से सन्तवाणी का विधान है - समझदार समझते हैं और कृतघनी मुरझते हैं । यथा -

गुरु तज गोविन्द भजे, मिटे न तन की तास । गुरु मर्यादा छूटते, अन्त नर्क में वास ।।१।।
फल टूट जल में पर्‍यो, भयो बीज को नास । गुरु तजे गोविन्द भजे, अन्त प्रलय की आस ।।२।।

कई शिक्षित कागजी घुड़दौड़ में प्रमाण-पत्र लिये अनलिये गुरु धर्म सम्प्रदाय से अबूझ भानुमति के कुनबे की भाति जोड़-तोड़ कर बुद्धि के अन्धे नकल करते इधर-उधर से सामग्री जुटा कर सम्प्रदाय की पहिचान बनाने में लगते हैं, किन्तु उन्हें यह मालूम नहीं है कि **कई गोपनीय तथ्य बिना गुरु कृपा** हरएक नहीं जान पाते, ऊपरी साखी या परम्परा के प्रणाली नाम रट लेने से क्या होता है ?

यह मन ही मनुष्य को मानव बनाता है और मन की मानव से दानव बना सकता है ।

स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में श्री वैष्णव संत स्मृति स्थल (कागा) पूर्वाचार्यगण के पूजन हेतु जाते/आते हुए संत समाज एवं पीठाचार्य श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज, दिनांक २१ फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी का महाप्रसाद प्राप्त करते सज्जन उत्तम आश्रम के सदस्यो द्वारा सामग्री वितरण दर्शन दिनांक २२ फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी के मीठे प्रसाद एवं वस्त्रों को प्राप्त करते प्रज्ञाचक्षु, कुष्ठ रोगी एवं दरिद्र नारायण भिक्षुकगण
उत्तम आश्रम के सदस्यो द्वारा सामग्री वितरण दर्शन दिनांक २२ फरवरी २००३ ई.
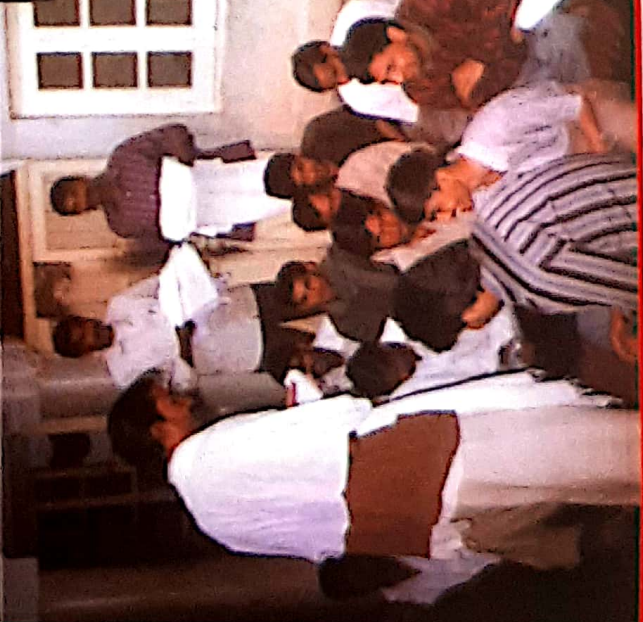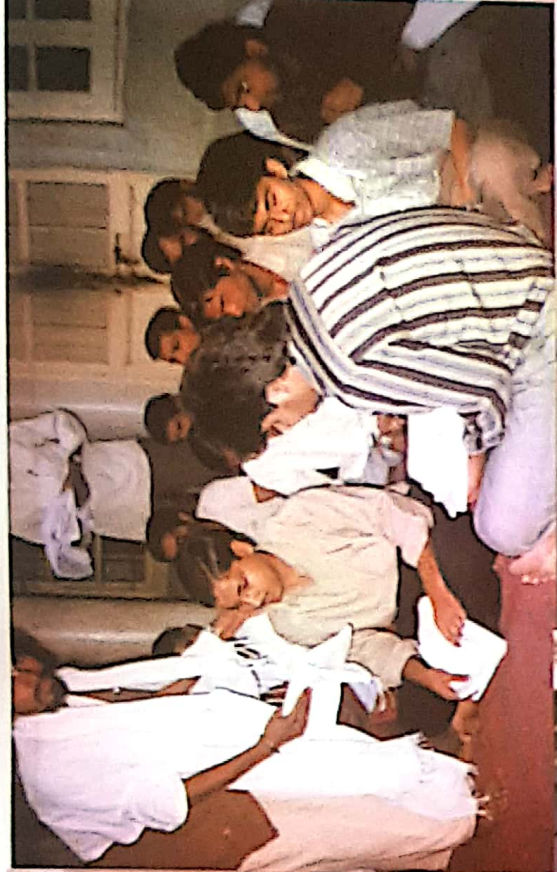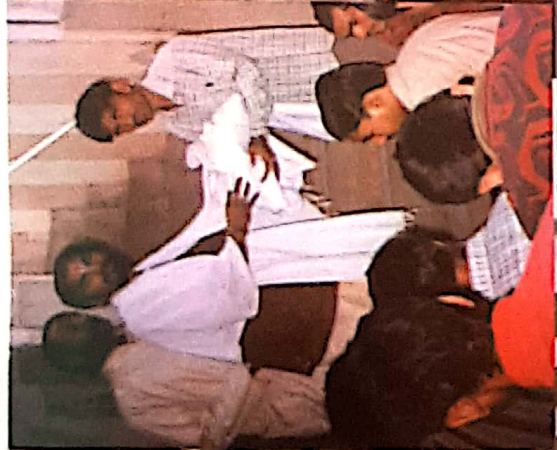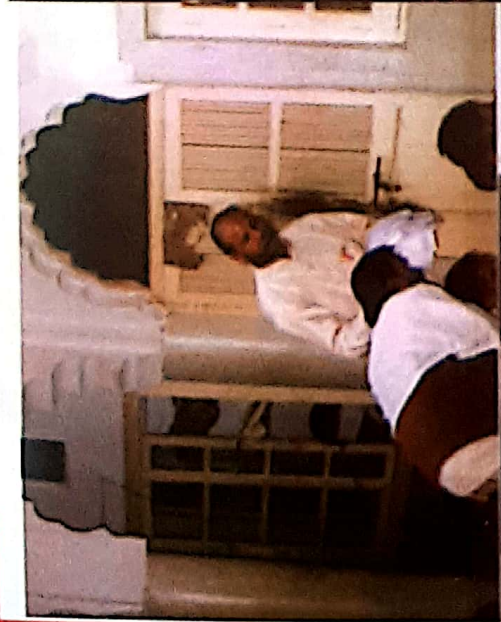
उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री हरि आश्रम, बांकाजी की जाजीवाल खीचियां में श्री संत धर्माराम वैरागी को महंताई की चद्दर ओढाते हुए स्वामी रामप्रकाशचार्य जी वैरागी एवं संत समुदाय के साथ ग्राम निवासी भक्तगण, वि. सं. २०४२ कार्तिक सुदि १२ रविवार दिनांक २४.११.१९८५ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में कलशयात्रा, तोरणद्वारो के बीच से नगर परिक्रमा दर्शन
वि. सं. २०५९ फाल्गुन वदी ४ गुरूवार, दिनांक २० फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में श्री अग्रद्वाराचार्य श्री स्वामी राघवाचार्यजी महाराज एवं गूदड़गद्दी दांतडाधाम पीठाचार्य श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज, वि. सं. २०५६ फाल्गुन वदी ४ गुरूवार, दिनांक २० फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में श्री अग्रद्वाराचार्य श्री स्वामी राघवाचार्यजी महाराज एवं गूदड़गद्दी दांतडाधाम पीठाचार्य श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज, वि. सं. २०५९ फाल्गुन वदी ४ गुरुवार, दिनांक २० फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन
श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में श्री अग्रद्वाराचार्य श्री स्वामी राघवाचार्यजी महाराज एवं
गूदड़गद्दी दांतडाधाम पीठाचार्य श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज, वि. सं. २०५९ फाल्गुन वदी ४ गुरूवार, दिनांक २० फरवरी २००३ ई.

सद्गृहस्थ कण्ठीधारी या कोई भी काषायधारी जो व्यवहारिक घर गृहस्थी चलाते हैं या भ्रष्ट गृहस्थ भोगी हैं अर्थात् व्यवहार शुद्धिहीन है, वो खेती, नौकरी या किसी पैसेदार आजीविका को भी जुटाते हैं और चेला-चेली भी मूँडते तथा संगत-पंगत में भेंट पूजा भी लेते हैं। भजन गाते ब्रह्मज्ञान की बातें भी कह लेते हैं, अद्वैत वेदान्त सम्मेलन की बात करते हैं, किन्तु आध्यात्मिक व्यवहारिक भेष सम्प्रदाय परम्परा के रहन ज्ञान या तपश्चर्या साधना, गुरु भक्ति के लाले पड़ते हैं, वे भी मोक्षदाता और जो जीवन भर कुल संसार परिवार छोड़ कर सतगुरु शरणापन्न नाक रगड़ते हैं वे भी मोक्ष के इच्छुक ? क्या है ये कि -

ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, करहि न दूसरि बात। कोड़ी लागी लोभ वश, करहि विप्र गुरु घात ।।

जो शैव भी है और वैष्णव भी है दो अश्व सवारी या दो नाव यात्रा करते हैं। शास्त्रीय मत-ग्रन्थ से हट कर अपनी-अपनी डफली पर अपना-अपना राग अलापते हैं, वे व्यभिचारिणी भक्ति धारक भी एक सत पत पातिव्रत्य भक्ति के समकक्ष आसनाधिकारी होना चाहते हैं। यह निश्चित ही अपने उपासकों के साथ अपना पतन करने में अग्रणी रहेंगे।

ऐसे कई ज्वलन्त उदाहरण देखे हैं कि उन कण्ठीबन्द तथाकथित सन्तों के जाने के बाद उनके कहे जाने वाले आश्रम, सतसंग भवन या रामद्वारा में कण्डे थापते-सुकाते या जात जमाताओं के रहने अथवा बकरियाँ बाँधने के बाड़े मात्र रह गये हैं तो उन्हें पहले ही अपना अस्तित्व एक मत परम्परा में ढाल लेना चाहिये। कई विरक्त होने के बाद भी आश्रम आय एक विशेष परिवार पालना का स्रोत बना कर पारमार्थिक कमाई को सांसारिक उपयोग में केन्द्रित कर लेते हैं, उनकी प्रगति राम भरोसे पर ही होती देखी जा सकती है।

आज के युग में जैसे-जैसे पुलिस के महकमे की वृद्धिस्तर सुरक्षा व्यवस्था बढ़ती जाती है, तैसे-तैसे चोर डकेती लूट इत्यादि की घटनाऐं भी बढ़ती जाती है। शिक्षा बाहुल्य में ज्यों-ज्यों दिन बदिन न्यायालय परिसर में वकील बढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों झगड़े उत्पात लड़ाईयों के मानसिक कल्मष बढ़ते जाते हैं। वैद्यों, हकीम, डॉक्टरों के बढ़ने से नित्य नये रोगों का आक्रमण होता जाता है। तैसे ही आज भारतीय संस्कारों के प्रचार में नये-नये सम्प्रदायों के माध्यम या विद्वान, सन्तों, पण्डितों, जगद्गुरुओं, विश्व गुरु महाराजाओं, विदुषियों से होते प्रवचन/भागवत कथाओं में हजारों लाखों की आस्तिक श्रोताओं का बाहुल्य भीड़ भरा दृश्य दृष्टिगत होता है, वैसे ही अज्ञानियों वाच्यार्थियों अनास्था के लबारियों का ताम-झाम भी बढ़ता जाता है। यह ईश्वरीय प्रकोप, प्राकृतिक विकृतियों का लदान वैज्ञानिक युग का प्रभाव है, जो स्वयं प्रचारकों द्वारा मर्यादा संयम उलंघन का परिणाम है, जिसे मर्यादित संयम स्वाध्याय सन्तोष से रोका जा सकता है।

ऐसे भी है

भेष लियो जग देखण खातिर, भेष की टेक पले नहीं पाली।
किन्हीं के चरावे टोगड़ा टोगड़ी, किन्हीं के चरावे भेड़ रू छाली ।।
जान बरात के साथ में जावत, पाँत के साथ सगों महि गाली।
"सांई दीन" कहे यह साधुता नाहि है, बाबा का बाबा रू हाली का हाली ।।१।।

अमोघ सन्त-शास्त्र घोषणा

समर्थ सतगुरुदेव और परमगुरु परमात्मा की एक मात्र संयुक्त घोषणा है और उनके महत्वपूर्ण सामर्थ्य का कथन सन्तों, ऋषि-महर्षियों, कवि-कोविद जनों तथा उपनिषद् कथाओं, सन्त-शास्त्र उपमाओं में भी यही किया गया है।

परम जिज्ञासू आध्यात्मिक साधना सहित उत्तम भक्त श्रेणी की पारदर्शिता जब पा लेता है, तब वह विश्व की सम्पन्न वैभव पूर्ति का परम कल्याणकारी पद आत्मतत्व, शान्तिनिष्ठा प्राप्त कर लेता है। वह घोषणा आप भी सदा ध्यान में रखें।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।

सतगुरु एवं परमगुरु परमात्मा **निर्मल मन** को चाहते हैं, उनके सामने छल-छिद्र, कपटपूर्ण जाल रचना की आवश्यकता नहीं चलती। सावधान ! इससे सांसारिक उपलब्धियाँ कदाचित पाई जा सकती है, किन्तु आत्म-जीवन पतनोन्मुख होते किंचित भी देर नहीं लगती।

परम प्रभु श्रीराम के द्वारा उद्घोषित वाक्य केवल प्रसंगित विषय तक सीमित नहीं है, यह सदा के लिये प्रभु भक्ति के साधक भक्तों के लिये नित्य पालन करने की आज्ञा करते हैं।

केवल ईश्वर उपासकों तक ही नहीं अपितु सतगुरु के शिष्यों, सेवकों, उपासक भक्तों, सन्तसेवी सतसंग, प्रेमीजनों के लिये भी स्पष्ट ईश्वरीय आदेश है, जिस के बिना जीव का कल्याण मार्ग प्रशस्त नहीं होता।

तज मद मोह कपट छल नाना, करऊँ सद्य तेहि साधु समाना।

वस्तुतः ईश्वर, सन्त और सतगुरु तत्वतः तीनों एक ही कारण-कार्य का विस्तार है।

ईश्वर ते गुरु में अधिक, धारे भक्ति सुजान। बिनु गुरु भक्ति प्रवीन हूँ, लहे न आतम ज्ञान ।।

गुरु-ईश्वर एक समझ के, चरणों में ध्यान लगाना। (दृष्टव्य अचलराम भजन प्रकाश)

ईश्वर-सतगुरु की उपासना का प्रकार यह है -

जननी जनक बन्धु सुत दारा, तन धन भवन सुहृद परिवारा। सब कै ममता ताग बटोरी, गुरु पद मन ही बाँध बरि डोरी ।।
समदरशी इच्छा कछु नाही, हरष शोक भय नहीं मन मांही। अस सज्जन गुरु उर बस कैसे ? लोभी हृदय बसहि धन जैसे ।।

परम प्रभु ! सतगुरु देव परम दयालु स्वभाव के होते हैं। त्याग, तप की कसौटी पर कसते गर्व प्रहारी स्वभाव का पालन करते हैं। अपने भक्त-शिष्य के अन्तः में किंचित मात्र भी मल, मेल, काम, मोह, गर्व इत्यादि विकार नहीं रहने देते हैं। जो सच्चे स्वामी परीक्षा के प्रांगण से गुजारता है, वह कनक कसौटी पर खरा उतरने से कुन्दन बनता है।

जब तक भक्त-शिष्य ईश्वर इच्छा से होने वाले परिवर्तनों से प्रसन्न नहीं रहता अर्थात् सतगुरुदेव श्री की आज्ञा अनुसरण में बिना आनाकानी के, बिना रोक-टोक किन्तु-परन्तु किये सेवा कार्य नहीं करता, तब तक उन की परीक्षा अधूरी मानते हैं। तभी तो कहा है -

पापवन्त कर सहज स्वभाऊ, भजन मोर तेहिं भाव न काऊ। जो पै दुष्ट हृदय सोई होई, मेरे सम्मुख आव कि सोई ।।

जब उपरोक्त प्रकार से खरा अहं पद से वैराग्य भरा त्याग पाते हैं, तब वे सर्वस्व दे देते हैं, क्योंकि उनकी स्पष्ट घोषणा है।

कोटि विप्र वध लागहिं जाहू, आये शरण तजहुँ नहिं ताहू। सन्मुख होय जीव मोहि जबही, जन्म कोटि अघ नासहि तबही ।।

परमात्मा और सतगुरु की संयुक्त घोषणा यही है। क्या आपमें ऐसी तितिक्षा पूर्ण परीक्षा उत्तीर्ण करने का सेवाभाव साहस है ? ऐसी उत्कट जिज्ञासा उत्पन्न होने की प्रतीक्षा का प्रयास करें, अवश्य मुक्त हो जाओगे।

प्राप्त भोगों का त्याग और भोग वासना को छोड़ना वैराग्य है।

भक्ति मार्ग में बाधक प्रक्रिया

जातिर्विद्या महत्वं च रूपं योवनमेव च । यत्नेन परित्यस्त्याज्या पंचैते भक्ति कण्टकाः ।। - श्रुति

र्थ - जाति गर्व, विद्या का मद, उच्च पदोन्मत, रूप-मोह और युवावस्था का अज्ञान, यह पाँचों भक्ति मार्ग में के समान खटकने वाले बाधक (शत्रु) हैं ।

योवन धन अविवेक, प्रभुता चारों परम रिपु । देत अनर्थ एकैक, जहँ चारों तहँ क्या कथा ।। - भृतहरि

शताब्दियों पूर्व मानव मात्र के लिये कथन किये गये महापुरुषों के वाक्य कल्याणकारी है, किन्तु उन परम प्रभु नित्यावतार घोषित होने वाले भक्ति रस के मार्गदर्शक सन्त महात्मा भी आज इन सांसारिक लिप्सा से मुक्त नहीं है । न्हें भी शिष्य-सेवकों को राजी रखने में जन्म जातीयता की बू भरी दुर्गन्ध मारती है । जाति-पान्ति, माता-पिता, ल-गौत्र आदि के साथ सांसारिक विषय भावों को त्याग कर मन्त्र भेष दीक्षा का पुनर्जन्म धारण करके सतगुरु एवं म्प्रदाय को सर्वस्व मानने वाले भी पूर्व संस्कारों की गन्ध में जीते हैं । आज बड़े-बड़े अखिल भारतीय अथवा अन्तजातीय मान्यता प्राप्त परम्पराओं के मूर्ध्दन्य पद पर विराजने वाले या उनके आश्रय में जीने वाले भी अपने कल्याण की परवाह नहीं करते वरंच संसार की प्रथा में मनोरंजित हो कर प्रसन्न रहते है । जो आन्तरिक कल्मष का परम कारण है ।

साधो भाई ! सन्त गुरु है मेरा जी । जाके दुविधा दरसे नाही, सन्त गुरु है मेरा जी ।।टेर।।
कनक कामनी तजण कठिन है, त्यागे विरला कोय । कनक कामनी त्यागी देख्या, दुविध्या दूर न होय ।।1।।
दुविध्या तजे तो आपा अबखा, तजण दुहेला लोय । आपा तजे तो बहु भीड़ आडा, काम क्रोध अरू मोय ।।2।।
मोह त्यागी वैरागी देख्या, जिन के रह गई दोय । निन्दा अरू ईरषा दोनों, महा जबर यह जोय ।।3।।
ज्ञानी देख्या ध्यानी देख्या, त्यागी देख्या टोय । निन्दा अरू ईरषा त्यागी, मिलणा मुश्किल होय ।।4।।
ऐसा सन्त मिले बिन मन भर, दुविधा मिटे न तोय । तूँ "सुखराम" त्याग पर निंधा, मिल ही सन्त निरमोय ।।5।।

- दृष्टव्य वाणीप्रकाश/भजन ७० एवं सुखराम दर्पण/७०/४६६ टीका

संसार की व्यवहारिक गति को भी शताब्दी पूर्व युगदृष्टा महापुरुषों ने साक्षात् किया था । युगदृष्टा स्वामी सुखरामजी महाराज "वैरागी" के समय या भावी संसार के साधुओं को आचरित आचरणों से नकारते कथन किया था ।

अवगत ऐसा होता है कि उन भेषधारियों के गुरुजनों ने ऐसी ही सीख दी होगी अथवा वस्तुस्थिति की शिक्षा से वंचित रह गये है, क्योंकि पूर्वाचार्यों की वाणी एवं साधु परम्परा में सम्प्रदाय की ऐसी कोई नियमावली नहीं है कि जन्म जातिगत स्पृश्य-अस्पृश्य के भेद को पालते रहो । यह श्री वैष्णव परम्परा के अतिरिक्त राजस्थान में अन्यान्य सम्प्रदाय पीठों के साथ भोजनभट्ट साधुओं में प्रचल्लन पाया जाता है, जो शास्त्रीय धर्म सम्प्रदाय के सर्वथा विरूध्द है । श्री हरि गुरु परमात्मा उन्हें सुमति प्रदान करे । युगदृष्टा भविष्य वेता पूर्व कथन किये है -

जमाना बेईमानी का, नेकी का नहीं ठिकाना है ।।टेर।।
झूँठ, हठ, छल, कपट, पाखण्ड, लोभ, मद का पसारा है । धोखा और दगाबाजी का, जगत में आम व्यवहारा है ।।1।।
ईर्षा, द्वैष घट घट में, फूट का राज्य सारा है । चोरी, व्यभिचार, बुराई का, कलि में खूब प्रचारा है ।।2।।
अधर्म, अन्याय, अनीति में, फूट का राज्य सारा है । धर्म और न्याय, नीति ने, दुनिया से लिया किनारा है ।।3।।
लुच्चे, बदमाश, धूर्तों का, इस समय खुला बाजारा है । "अचलराम" नेक पुरुषों का, मुश्किल से होत गुजारा है ।।4।।

- दृष्टव्य अचलराम भजन प्रकाश/२००

जाति पांति पूछे नहीं कोई, हरि भजे सो हरि का होई ।

- ज. गु. स्वामी रामानन्दाचार्य जी

सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो सदाशक्ता अशक्ताः पदयोर्जगत्प्रभोः । अपेक्षते तत्र कुलं बलं च नो न चापि कालो न च शुद्ध तापि वै ।।

- श्री वैष्णव मताम्बुज भास्कर ४/५०

अनुकूल-प्रतिकूल की सब अवस्थाएं निर्भर है कि हम मन का उपयोग कैसे करते हैं ।

एक लाख वर्षीय कैलेण्डर

सन् १ से १००००० वर्ष तक

अनन्तकाल चलने वाला ईसवी कैलेण्डर

रचयिता – स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'
आचार्यपीठ, जोधपुर-६
उत्तम प्रकाशनाधिकार ISBN-81-88138-04-5

(प्रथम भाग)

शताब्दी वर्षांक			
१०००००	१००	२००	३००
४००	५००	६००	७००
८००	९००	१०००	११००
१२००	१३००	१४००	१५००
१६००	१७००	१८००	१९००
२०००	२१००	२२००	२३००
२४००	२५००	२६००	२७००
२८००	२९००	३०००	३१००
३२००	३३००	३४००	३५००
३६००	३७००	३८००	३९००
४०००	४१००	४२००	४३००
४४००	४५००	४६००	४७००
४८००	४९००	५०००	५१००
५२००	५३००	५४००	५५००
५६००	५७००	५८००	५९००
६०००	६१००	६२००	६३००
६४००	६५००	६६००	६७००
६८००	६९००	७०००	७१००
७२००	७३००	७४००	७५००
७६००	७७००	७८००	७९००
८०००	८१००	८२००	८३००
८४००	८५००	८६००	८७००
८८००	८९००	९०००	९१००
९२००	९३००	९४००	९५००
९६००	९७००	९८००	९९००

न्यूनतम वर्ष							
०	२८	५६	८४	साहित्य	तत्वज्ञ	राम	आचार्य
१	२९	५७	८५	आचार्य	लेखक	संत	प्रकाश
२	३०	५८	८६	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ	राम
३	३१	५९	८७	राम	आचार्य	लेखक	संत
४	३२	६०	८८	तत्वज्ञ	राम	आचार्य	लेखक
५	३३	६१	८९	लेखक	संत	प्रकाश	साहित्य
६	३४	६२	९०	साहित्य	तत्वज्ञ	राम	आचार्य
७	३५	६३	९१	आचार्य	लेखक	संत	प्रकाश
८	३६	६४	९२	राम	आचार्य	लेखक	संत
९	३७	६५	९३	संत	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ
१०	३८	६६	९४	तत्वज्ञ	राम	आचार्य	लेखक
११	३९	६७	९५	लेखक	संत	प्रकाश	साहित्य
१२	४०	६८	९६	आचार्य	लेखक	संत	प्रकाश
१३	४१	६९	९७	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ	राम
१४	४२	७०	९८	राम	आचार्य	लेखक	संत
१५	४३	७१	९९	संत	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ
१६	४४	७२	०	लेखक	संत	प्रकाश	साहित्य
१७	४५	७३	०	साहित्य	तत्वज्ञ	राम	आचार्य
१८	४६	७४	०	आचार्य	लेखक	संत	प्रकाश
१९	४७	७५	०	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ	राम
२०	४८	७६	०	संत	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ
२१	४९	७७	०	तत्वज्ञ	राम	आचार्य	लेखक
२२	५०	७८	०	साहित्य	संत	प्रकाश	साहित्य
२३	५१	७९	०	प्रकाश	तत्वज्ञ	राम	आचार्य
२४	५२	८०	०	राम	साहित्य	तत्वज्ञ	राम
२५	५३	८१	०	संत	आचार्य	लेखक	संत
२६	५४	८२	०	तत्वज्ञ	प्रकाश	साहित्य	तत्वज्ञ
२७	५५	८३	०	तत्वज्ञ	राम	आचार्य	लेखक

(द्वितीय भाग)

महीना			वार, तारीख मिलान						
जनवरी ३१	अक्टूबर ३१		साहित्य	लेखक	तत्वज्ञ	संत	राम	प्रकाश	आचार्य
फरवरी २८	मार्च ३१	नवम्बर ३१	संत	राम	प्रकाश	आचार्य	साहित्य	लेखक	तत्वज्ञ
अप्रेल ३०	जुलाई ३१		आचार्य	साहित्य	लेखक	तत्वज्ञ	संत	राम	प्रकाश
मई ३१			लेखक	तत्वज्ञ	संत	राम	प्रकाश	आचार्य	साहित्य
जून ३०			राम	प्रकाश	आचार्य	साहित्य	लेखक	तत्वज्ञ	संत
फरवरी २९	अगस्त ३१		तत्वज्ञ	संत	राम	प्रकाश	आचार्य	साहित्य	लेखक
सितम्बर ३०	दिसम्बर ३१		प्रकाश	आचार्य	साहित्य	लेखक	तत्वज्ञ	संत	राम

दिनांक					↓	↑	↓	↑	↓	↑	↓
१	८	१५	२२	२९	रवि	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम
२	९	१६	२३	३०	सोम	रवि	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल
३	१०	१७	२४	३१	मंगल	सोम	रवि	शनि	शुक्र	गुरु	बुध
४	११	१८	२५	✿	बुध	मंगल	सोम	रवि	शनि	शुक्र	गुरु
५	१२	१९	२६	✿	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि	शनि	शुक्र
६	१३	२०	२७	✿	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि	शनि
७	१४	२१	२८	✿	शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि

देखने की विधि – प्रथम भाग में चालू शताब्दी के नीचे न्यूनतम वर्ष के दायें जो बीच मिलाप में शब्द आवे, उसे द्वितीय भाग में अभिष्ट महीने के सामने देखकर उसके नीचे ठीक निर्दिष्ट तारीख एवं वार का मिलान होता है । लो आप देख लो ।

नोट – जिस सन् में ४ का भाग पूरा लगे उस सन् में फरवरी २९ तारीख का होगा ।

श्री उत्तम आश्रम, कागा मार्ग, जोधपुर की अपूर्व भेंट

संक्राति (राष्ट्रीय) वर्ष भारतीय शकः
एक सौ चालीस सौर वर्षीय कैलेण्डर

रचयिता - स्वामी रामप्रकाशाचार्य अच्युत
श्री महन्त - उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) कागा मार्ग, जोधपुर-६
ISBN-81-88138-03-07

१९०१	२९	५७	८५	१३	म
०२	३०	५८	८६	१४	त
०३	३१	५९	८७	१५	सं
०४	३२	६०	८८	१६	श
०५	३३	६१	८९	१७	का
०६	३४	६२	९०	१८	म
०७	३५	६३	९१	१९	रा
०८	३६	६४	९२	२०	त
०९	३७	६५	९३	२१	सं
१०	३८	६६	९४	२२	का
११	३९	६७	९५	२३	प्र
१२	४०	६८	९६	२४	म
१३	४१	६९	९७	२५	रा
१४	४२	७०	९८	२६	सं
१५	४३	७१	९९	२७	श
१६	४४	७२	२०००	२८	का
१७	४५	७३	०१	२९	प्र
१८	४६	७४	०२	३०	रा
१९	४७	७५	०३	३१	त
२०	४८	७६	०४	३२	सं
२१	४९	७७	०५	३३	श
२२	५०	७८	०६	३४	प्र
२३	५१	७९	०७	३५	म
२४	५२	८०	०८	३६	रा
२५	५३	८१	०९	३७	त
२६	५४	८२	१०	३८	श
२७	५५	८३	११	३९	का
२८	५६	८४	१२	४०	प्र

भाद्रपद (सिंह) 31	मार्गशीर्ष (वृश्चिक) 30	सं	त	रा	म	प्र	का	श
आषाढ़ (मिथुन) 31	चैत्र (मीन) 31	त	रा	म	प्र	का	श	सं
वैशाख (मेष) 31	पौष (धन) 30	रा	म	प्र	का	श	सं	त
आश्विन (कन्या) 30		म	प्र	का	श	सं	त	रा
श्रावण (कर्क) 31	माघ (मकर) 30	प्र	का	श	सं	त	रा	म
ज्येष्ठ (वृषभ) 31	कार्तिक (तुला) 30	का	श	सं	त	रा	म	प्र
फाल्गुन (कुम्भ) 30		श	सं	त	रा	म	प्र	का

१	८	१५	२२	२९	र	श	शु	गु	बु	मं	सो
२	९	१६	२३	३०	सो	र	श	शु	गु	बु	मं
३	१०	१७	२४	३१	मं	सो	र	श	शु	गु	बु
४	११	१८	२५	卐	बु	मं	सो	र	श	शु	गु
५	१२	१९	२६	卐	गु	बु	मं	सो	र	श	शु
६	१३	२०	२७	卐	शु	गु	बु	मं	सो	र	श
७	१४	२१	२८	卐	श	शु	गु	बु	मं	सो	र

बगैर कैलेण्डर चलते फिरते कण्ठस्थ करने का ईसवी कैलेण्डर सीखिये

दोहा छन्द

एक मई, दो अगस्त है, चार दिसम्बर, जून ।
अप्रेल, जुलाई छः लखो, पांच सितम्बर मून ।।१।।
फरवरी, मार्च अंक तीन है, और नवम्बर मास ।
अक्टूम्बर, जनवरी सात है, इष्ट अंक लख खास ।।२।।

विधि - इष्ट वर्ष अंक लीजिये, ता चौथाई और ।
इष्ट तारीख औ मास अंक, जोड़ लीजिये गौर ।।३।।
चारों अंक को जोड़ कर, एक घटा अंक धार ।
भाग सात से जो बचे, सोई रवि ते वार ।।४।।

इष्ट वर्ष चौथाई में, न्यून वर्ष तज देव ।
"रामप्रकाश" सन् चार में, वार मास का भेव ।।५।।

सूर्य छाया द्वारा समय घटि ज्ञान समझना

तीन अंगुल की शंकु की, छाया अंगुल प्रमाण ।
तिगुना करके भाग दे, चौसठ अंक सुजाण ।।६।।
आवे अंक जो भजन फल, सोई घटिका दण्ड ।
प्राप्त भाज्य के अंक में, चौसठ भाग पल मण्ड ।।७।।
ढाई घटि का होत है, घण्टा एक प्रमाण ।
ढाई पल का यों बने, एक मिनिट अवसाण ।।८।।

नोट – प्रतिवर्ष १४ जनवरी को मकर संक्रान्ति (माघ महीना) की पहली तारीख का मिलान होता है; इससे आगे का वार एवं ईसवी तारीख से संक्रान्ति महीने की तारीख से मिलान करें ।

पचास वर्षीय वार्षिकोत्सव सारणी दर्शन

प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल **महेशनवमी** को **रात्रि सतसंग** तारीख एवं सन् एवं दूसरे दिन **दशमी को गुरु समाधियों का दर्शन-पूजन** पर्वोत्सव वैष्णवाराधन मनाये जाने की सूचना-सुविधा हेतु सतसंग सहित विज्ञप्ति

संवत	वार	सन्	मास	सतसंग तारीख	संवत	वार	सन्	मास	सतसंग तारीख
२०५१	शनि	१९९४	जून	१८ को रात्रि सतसंग	२०५२	बुध	१९९५	जून	७ को रात्रि सतसंग
२०५३	सोम	१९९६	मई	२७ को रात्रि सतसंग	२०५४	शनि	१९९७	मई	१४ को रात्रि सतसंग
२०५५	बुध	१९९८	जून	३ को रात्रि सतसंग	२०५६	द्वि. मंगल	१९९९	जून	२२ को रात्रि सतसंग
२०५७	शनि	२०००	जून	१० को रात्रि सतसंग	२०५८	गुरु	२००१	मई	३१ को रात्रि सतसंग
२०५९	बुध	२००२	जून	१९ को रात्रि सतसंग	२०६०	सोम	२००३	जून	९ को रात्रि सतसंग
२०६१	शुक्र	२००४	मई	२८ को रात्रि सतसंग	२०६२	गुरु	२००५	जून	१६ को रात्रि सतसंग
२०६३	सोम	२००६	जून	५ को रात्रि सतसंग	२०६४	शुक्र	२००७	मई	२५ को रात्रि सतसंग
२०६५	गुरु	२००८	जून	१२ को रात्रि सतसंग	२०६६	सोम	२००९	जून	१ को रात्रि सतसंग
२०६७	रवि	२०१०	जून	२० को रात्रि सतसंग	२०६८	शुक्र	२०११	जून	१० को रात्रि सतसंग
२०६९	बुध	२०१२	मई	३० को रात्रि सतसंग	२०७०	मंगल	२०१३	जून	१८ को रात्रि सतसंग
२०७१	शनि	२०१४	जून	७ को रात्रि सतसंग	२०७२	बुध	२०१५	मई	२७ को रात्रि सतसंग
२०७३	सोम	२०१६	जून	१३ को रात्रि सतसंग	२०७४	शुक्र	२०१७	जून	२ को रात्रि सतसंग
२०७५	गुरु	द्वि.२०१८	जून	२१ को रात्रि सतसंग	२०७६	मंगल	२०१९	जून	११ को रात्रि सतसंग
२०७७	रवि	२०२०	मई	३१ को रात्रि सतसंग	२०७८	शनि	२०२१	जून	१९ को रात्रि सतसंग
२०७९	गुरु	२०२२	जून	९ को रात्रि सतसंग	२०८०	सोम	२०२३	मई	२९ को रात्रि सतसंग
२०८१	शनि	२०२४	जून	१५ को रात्रि सतसंग	२०८२	बुध	२०२५	जून	४ को रात्रि सतसंग
२०८३	मंगल	द्वि.२०२६	जून	२३ को रात्रि सतसंग	२०८४	शनि	२०२७	जून	१२ को रात्रि सतसंग
२०८५	गुरु	२०२८	जून	१ को रात्रि सतसंग	२०८६	बुध	२०२९	जून	२० को रात्रि सतसंग
२०८७	सोम	२०३०	जून	१० को रात्रि सतसंग	२०८८	शुक्र	२०३१	मई	३० को रात्रि सतसंग
२०८९	गुरु	२०३२	जून	१७ को रात्रि सतसंग	२०९०	सोम	२०३३	जून	६ को रात्रि सतसंग
२०९१	शुक्र	२०३४	जून	२६ को रात्रि सतसंग	२०९२	गुरु	२०३५	जून	१४ को रात्रि सतसंग
२०९३	सोम	२०३६	जून	२ को रात्रि सतसंग	२०९४	द्वि. रवि	२०३७	जून	२१ को रात्रि सतसंग
२०९५	शुक्र	२०३८	जून	११ को रात्रि सतसंग	२०९६	बुध	२०३९	जून	१६ को रात्रि सतसंग
२०९७	मंगल	२०४०	जून	१९ को रात्रि सतसंग	२०९८	शनि	२०४१	जून	८ को रात्रि सतसंग
२०९९	बुध	२०४२	मई	२८ को रात्रि सतसंग	२१००	सोम	२०४३	जून	१५ को रात्रि सतसंग

विशेष नोट – वि.सं. २०७५, २०८३, २०९४ में ज्येष्ठ महिने दो रहेंगे। अतः दूसरे शुद्ध ज्येष्ठ की शुक्ल ९ को रात्रि सतसंग रहेगा, यहाँ ९ तिथि के दिन आने वाली तारीखों की सूचि है, अगले दिन दशमी होगी।

ध्यान रहे – पहले निज पर शासन, फिर अनुशासन, यही प्रशासन, सो दृढ़ आसन।

उत्तम आश्रम की भविष्य सुरक्षा के आजीवन संरक्षक सदस्य

श्री वैष्णव आद्याचार्य जगद्गुरु रामानन्दाचार्यजी महाराज की गुरु–शिष्य वैरागी सन्त परम्परा के अन्तर्गत अमद्वार स्तम्भ सन्तदासोत **गुदड़ गुरुगदी उत्तम आश्रम** (आचार्यपीठ) जोधपुर के महन्त द्वारा स्वार्जित निजी सम्पति की सुरक्षा हेतु एक आस्थावान वर्गविहीन श्रद्धालू उपासकों का धार्मिक इष्ट उपासना हेतु प्रन्यास गठित करके श्री महन्त के **स्वत्वाधिकार की मर्यादा का स्थायित्व** बनाया है। इसके संरक्षक सदस्यों की अमर सेवा शुल्क द्वारा चल-अचल सम्पति के रख रखाव एवं परोपकार वृति से परमार्थ सेवा पूजा-प्रसाद व्यवस्था का संचालन किया गया है। **आप भी अपनी आस्था जगाऐं और सदा के लिये एक दिन में एक समय की आरती–पूजा, प्रसाद, सेवा में भाग ले सकते हैं।** समय की माँग-मँहगाई के दौर में आश्रम खर्च बढ़ोतरी के कारण सदस्यों की सेवा को वृध्दिस्तर करते प्रातः/सायं दो सत्र में कर दी गई है। नये सदस्यों को सायंकाल की पूजा-आरती का सेवा समय मिलेगा। अद्यतन जो **अजस्र–अमर सेवा के आजीवन संरक्षक सदस्य** अपनी सेवा दे रहे हैं, उनकी नामावली प्रस्तुत की जा रही है। इनके अतिरिक्त किसी जाति/व्यक्ति/समाज को आश्रम कार्य में परामर्श देने, कार्य अनुशंसा/समीक्षा करने/करवाने का कोई प्रकार से कुछ भी किसी को अधिकार नहीं है, ना रहेगा।

व्यवस्थापक – (प्रन्यासकर्ता) सन्त रामप्रकाशाचार्य ''अच्युत'' स्वत्वाधिकारी

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
१.	चन्दनाराम जोगचण्ड/श्री मूलारामजी जोगचण्ड	VPO डेलासर, वाया लाठी, जैसलमेर	चैत्र सुदि १ प्रातः
२.	भगवानाराम (अध्यापक)/श्री गुल्लाराम इणखिया	V.P.O. झोरड़ा, जोथियासी-३४१०२३	चैत्र सुदि १ सायं
३.	ईश्वरदेव वर्मा/श्री चन्द्रारामजी तालनिया	उत्तरादा मोहल्ला, रामगढ़ शेखावाटी	चैत्र सुदि २ प्रातः
४.	सुगनाराम (अध्यापक)/श्री नेनूरामजी गेहडवाल	V.P.O. श्यामसर वाया जोथियासी	चैत्र सुदि २ सायं
५.	मोहनलाल बारूपाल/श्री जोधारामजी बारूपाल	बारूपाल भवन, पोस्ट बान्धन	चैत्र सुदि ३ प्रातः
६.	मांगीलाल सुथार/श्री नेतारामजी बरड़वा	V.P.O. दईयॉकोयर, वाया पीलवा-३४२३०६	चैत्र सुदि ३ सायं
७.	मूलाराम लोहिया/श्री ठाकुररामजी लोहिया	पोस्ट कालियां, वाया श्रीगंगानगर	चैत्र सुदि ४ प्रातः
८.	पूनाराम सुथार/श्री हरिरामजी सलूण	V.P.O. जालोड़ा, वाया-फलोदी-३४२३०१	चैत्र सुदि ४ सायं
९.	दुर्गादत्त बाँगड़ी/श्री नन्दारामजी बाँगड़ी	ओमप्रकाश क्लॉथ स्टोर, चुरू	चैत्र सुदि ५ प्रातः
१०.	राणाराम सुथार/श्री नैनाराम जोपिंग	P.O. पोकरण-३४५०२१, हॉल-लातूर	चैत्र सुदि ५ सायं
११.	सीताराम महीचा/श्री नारायणरामजी	फतेहपुर शेखावाटी, जिला सीकर	चैत्र सुदि ६ प्रातः
१२.	केशूराम सुथार/श्री उर्जारामजी भदरेचा	V.P.O. चौबड़िया-३४१०२५ (नागौर)	चैत्र सुदि ६ सायं
१३.	बिहारीलाल गोसांई/श्री किसनारामजी गोसांईवाल	बिजलीघर के पास, नागौरीगेट, जोधपुर	चैत्र सुदि ७ प्रातः
१४.	बगताराम सुथार/श्री मोडारामजी कुलरिया	V.P.O. दासानिया-३४२०२५, (शेरगढ़)	चैत्र सुदि ७ सायं
१५.	बलदेवकुमार कोडेचा/श्री धीराराम कोडेचा	कोडेचा निवास, बायतु पन्नाजी	चैत्र सुदि ८ प्रातः
१६.	भँवरलाल सुथार/श्री रामकिशनजी बरड़वा	V.P.O. दईयाँकोयर, तह.-फलौदी	चैत्र सुदि ८ सायं
१७.	मोहनराम झूरिया/श्री भागीरथराम जी	VPO छोटी खाटू, (नागौर)	चैत्र सुदि ९ प्रातः
१८.	देवाराम सुथार/श्री चनणारामजी माकड़	V.P.O. चेराई, (ओसिया) ३४२३०६	चैत्र सुदि ९ सायं
१९.	विरदाराम माधव/श्री जस्सारामजी माधव	पोस्ट कोलीवाड़ा, सुमेरपुर-३०६९०२	चैत्र सुदि १० प्रातः
२०.	तगाराम सुथार/श्री मोडूरामजी कुलरिया	विद्यानगर, वडगांवशेरी, पुणे	चैत्र सुदि १० सायं

रोगों और व्याधियों के घर तथा जरा और मरण से ग्रसित इस असार मानव शरीर में एक क्षण भी सुख प्राप्त नहीं होता।

क्रमांक नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
२१. लूम्बाराम सोलंकी/श्री अचलारामजी सोलंकी	स्टेशन के सामने, पोस्ट विशनगढ़	चैत्र सुदि ११ प्रातः
२२. गिरधारीराम/श्री जैसारामजी त्रिराणिया	V.P.O. कसम्बी, वाया नागौर	चैत्र सुदि ११ सायं
२३. डूँगाराम डॉगी डाकपाल/श्री नेमारामजी डॉगी	डॉगी निवास, गूढ़ा बालोतान, (जालौर)	चैत्र सुदि १२ प्रातः
२४. नारायणलाल सुथार/श्री कँवरलालजी बरड़वा	V.P.O. दईयाँकोयर, वाया-पीलवा	चैत्र सुदि १२ सायं
२५. मदनलाल चिराणिया/श्री नरसारामजी	१८६ बी, नेहरूनगर, पानीपेच, जयपुर	चैत्र सुदि १३ प्रातः
२६. मनोहरलाल कालड़ा/श्री चेतरामजी	V.P.O. धारणिया-१२५०५० (हरियाणा)	चैत्र सुदि १३ सायं
२७. मातादीन गर्वा/श्री बक्सारामजी गर्वा	गर्वा निवास, पोस्ट स्लामपुर, (झुंझुनू)	चैत्र सुदि १४ प्रातः
२८. दामोदर जोशी/श्री बस्तीमलजी जोशी	बालाजी नगर, धनकवड़ी, पुणे-४३	चैत्र सुदि १४ सायं
२६. मोतीराम माधव/श्री रूगारामजी माधव	पोस्ट कोलीवाड़ा, वाया सुमेरपुर	चैत्र सुदि १५ प्रातः
३०. मगराज जोशी/श्री बस्तीमलजी जोशी	बालाजी नगर, धनकवड़ी, पुणे-४३	चैत्र सुदि १५ सायं
३१. तुलसीराम भाटी/श्री नत्थुरामजी भाटी	पोस्ट कक्केलाव, वाया बनार-३४२०२७	वैशाख वदि १ प्रातः
३२. लालूराम पंवार/श्री पुंजारामजी पंवार	V.P.O. गडरारोड-३४४५०१	वैशाख वदि १ सायं
३३. रामस्वरूप साबू/श्री श्यामलाल साबू	प्रकाश किराणा स्टोर, क्रागारोड, जोधपुर	वैशाख वदि २ प्रातः
३४. खासाराम/श्री नरसाराम जी राठौड़	V.P.O. कालन्द्री, जिला सिरोही	वैशाख वदि २ सायं
३५. हनुमानराम चौहान/श्री परसारामजी चौहान	चक ८ ए, वाया अनूपगढ़-३३५७०१	वैशाख वदि ३ प्रातः
३६. भींयाराम परिहार/श्री चुन्नीराम जी परिहार	चक 7 BLD, विजयनगर-३३५७०४	वैशाख वदि ३ सायं
३७. संत भोमाराम/गुरु संत सूण्डारामजी	चक ८ ए, वाया अनूपगढ़-३३५७०१	वैशाख वदि ४ प्रातः
३८. भूराराम सापेला/श्री गिरधारीरामजी सापेला	V.P.O. राजोला, वाया सोजतरोड़	वैशाख वदि ४ सायं
३६. केसराराम भाटी/श्री चूनीरामजी जेसाभाटी	१६ एन.पी. वाया मोहननगर	वैशाख वदि ५ प्रातः
४०. पूरणराम सापेला/श्री गिरधारीराम जी सापेला	V.P.O. राजोला खुर्द-३०६१०३	वैशाख वदि ५ सायं
४१. मंगलाराम चौहान/श्री गणपतरामजी चौहान	चक १६ एन.पी., वाया मोहननगर	वैशाख वदि ६ प्रातः
४२. देवीराम जोधावत/श्री कालूराम जी जोधावत	एम.डी. कॉलोनी, नाका मदार, अजमेर	वैशाख वदि ६ सायं
४३. मनोजकुमार सोनगरा/श्री राधाकिशनजी सोनगरा	पोस्ट विदियाद, वाया मकराना	वैशाख वदि ७ प्रातः
४४. निर्मलकुमार चावला/श्री मोहनलाल जी चावला	नागौरी गेट, जोधपुर-३४२००६	वैशाख वदि ७ सायं
४५. रोड़ारामजी रावल/श्री हीरालालजी रावल	श्री आयकर निरीक्षक, नागौर-३०१००१	वैशाख वदि ८ प्रातः
४६. हीरालाल वर्मा (रिटायर्ड R.C.S.)	कृषि उपज मण्डी के पीछे, सीकर	वैशाख वदि ८ सायं
४७. चुन्नीलाल महीचा/श्री गीगराजजी महीचा	टीबड़ा मोहल्ला, फतेहपुर शेखावाटी	वैशाख वदि ६ प्रातः
४८. हनुमानराम पँवार/श्रीरामचन्द्रजी	चक १६, एन.पी. श्रीगंगानगर	वैशाख वदि ६ सायं
४६. खींवाराम मंडिवाल/श्री छोटूरामजी	बड़ा भोजासर, वाया पाटोदा, सीकर	वैशाख वदि १० प्रातः
५०. शंकरराम बालाण/श्री मानारामजी	फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)	वैशाख वदि १० सायं
५१. नरसिंहराम भाटी/श्री नत्थुरामजी भाटी	V.P.O. कक्केलाव, वाया बनार-३४२०२७	वैशाख वदि ११ प्रातः
५२. नारायणलाल कुलरिया/श्री सांवतारामजी	V.P.O. डेरिया नागाणा (बाड़मेर)	वैशाख वदि ११ सायं
५३. हीराराम माधव/श्री केसारामजी माधव	उत्तम कसीदा सेण्टर, कोलीवाड़ा-३०७०२	वैशाख वदि १२ प्रातः
५४. जोतराम पल/श्री मामचन्दजी पल	V.P.O. बिहारीपुरा, भादरा (हनुमानगढ़)	वैशाख वदि १२ सायं

जिस दिन सांसारिक रुचि मिटेगी, उसी दिन सत्यशः पारमार्थिक रुचि पूरी हो जायगी।

क्रमांक नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
५५. संत देवाराम प्रज्ञाचक्षु/संत श्रीरणछारामजी	रणजीत आश्रम, बालोतरा-३४४०२२	वैशाख वदि १३ प्रातः
५६. श्रीमती सरस्वतीदेवी पत्नी श्री नरसिंहदासजी स्वामी	वार्ड नं. ४, भादरा - ३३५५०१	वैशाख वदि १३ सायं
५७. खूमाराम बोचिया/श्री पूरारामजी बोचिया	V.P.O. बोपारी-३०६०२३, पाली	वैशाख वदि १४ प्रातः
५८. बलराम सरस्वा/श्री राजारामजी सरस्वा	V.P.O. आलमगढ़ - १५२११६	वैशाख वदि १४ सायं
५९. श्रीमती सुशीलादेवी/पत्नि श्री शीशरामजी दहिया	V.P.O. चूडीना, खेतड़ी, झुंझुनू	वैशाख वदि ३० प्रातः
६०. दुदाराम पुंछल/श्री हिन्दुजी	V.P.O. बागरा (जालोर)	वैशाख वदि ३० सायं
६१. हरिश्चन्द्र चौहान/श्री सुन्दररामजी चौहान	चक ८ ए, वाया अनूपगढ़-३३५७०१	वैशाख सुदि १ प्रातः
६२. प्रकाश कलाल/श्री माधुलालजी	प्रकाश टेण्ट हाऊस, किला रोड, जोधपुर	वैशाख सुदि १ सायं
६३. मोहनलाल गोयल/श्री गंगारामजी गोयल	महामन्दिर, दलेचाबस्ती, जोधपुर	वैशाख सुदि २ प्रातः
६४. सेवाराम कूमावत/श्री धूड़ारामजी सिवोटा	V.P.O. बोसूरी वाया नागौर-३०१००१	वैशाख सुदि २ सायं
६५. रामरख पँवार/श्री रामचन्दजी पँवार	चक १९ एन.पी., मोहननगर-३३५७०६	वैशाख सुदि ३
६६. काछबाराम चड़िया/श्री हुक्मारामजी चड़िया	चाचा-३४२३०१ हॉल - मुम्बई	वैशाख सुदि ४
६७. मोहनलाल बूढड़/श्री गिरधारीरामजी बूढड़	३०७ बी विंग, भायन्दर ईस्ट थाना	वैशाख सुदि ५
६८. जुगताराम बूढड़/श्री तुलसारामजी सुथार	V.P.O. तेना-३४२०२८	वैशाख सुदि ६
६९. भींयाराम बूढ़ड़/श्री विसनारामजी बूढड़	V.P.O. तेना, हाल - कुर्ला (मुम्बई)	वैशाख सुदि ७
७०. मोहनलाल एम/श्री मूलारामजी जोपिंग	V.P.O. केतुकला, हाल- भायन्दर	वैशाख सुदि ८
७१. पुरखाराम/श्री मनसुखराम माँडण	भूता इण्डस्ट्रियल स्टेट, अन्धेरी, मुम्बई	वैशाख सुदि ९
७२. भैराराम आसदेव/श्री डूँगररामजी आसदेव	प्लॉट १/१६, एरण्डवाणा, पूना-४	वैशाख सुदि १०
७३. फूसाराम आसदेव/श्री पूनारामजी आसदेव	V.P.O. चाचा-३४२३०१, हाल-कोथरूड़,	वैशाख सुदि ११
७४. शंकरलाल चिनिया/श्री प्रेमहंसजी चिनिया	V.P.O. कूकड़ा, वाया-भीम, अजमेर	वैशाख सुदि १२
७५. श्रीमति लेहरांदेवी/पत्नि श्री शम्भूरामजी	कुलरिया भवन, V.P.O. तिबना, (तेना)	वैशाख सुदि १३
७६. गुमानाराम पड़मा/श्री रूपारामजी पड़मा	V.P.O. ऊँचपदरा, हाल - कोथरूड़	वैशाख सुदि १४
७७. भगाराम पाखरवड़/श्री लाभूरामजी पाखरवड़	पोस्ट देचू - ३४२३१४	वैशाख सुदि १५
७८. जोतराम दोंदल/श्री सेरारामजी दोंदल	६ KSD, मोकमवाला-३३५०५१	ज्येष्ठ वदि १
७९. पृथ्वीराज भाटी/श्री कान्हारामजी भाटी	१९ एन.पी., मोहननगर - ३३५७०६	ज्येष्ठ वदि २
८०. रेशमाराम चौहान/श्री डलारामजी चौहान	खादी ग्रामोद्योग, रामगढ़-३४५०२२	ज्येष्ठ वदि ३
८१. अशोक्कुमार भाटी/श्री माणकलालजी भाटी	तेजानगर, भदवासिया, जोधपुर	ज्येष्ठ वदि ४
८२. सीतारामजी पालीवाल/श्री लक्ष्मीनारायणजी गर्ग	काकेलाव, हॉल-रातानाडा, जोधपुर	ज्येष्ठ वदि ५
८३. जेठाराम कुलरिया/श्री दीपारामजी कुलरिया	P.O. खोखसर वाया बाड़मेर हाल-पूना	ज्येष्ठ वदि ६
८४. अचलाराम जोपिंग/श्री दुर्गारामजी जोपिंग	V.P.O. झाबरा (पोकरण) हाल -पूना	ज्येष्ठ वदि ७
८५. भोमाराम माकड़/ श्री तेजारामजी माकड़	चेराई -३४२३०६ हाल-शान्ताक्रुज, मुम्बई,	ज्येष्ठ वदि ८
८६. मोहनलाल माण्डण/श्री भानीरामजी माण्डण	वड़ा मडला वाया देचू-३४२३१४	ज्येष्ठ वदि ९
८७. माधोसिंह भाटी/श्री उदयसिंहजी भाटी	जबरदस्त हनुमानपुरा, बालोतरा	ज्येष्ठ वदि १०
८८. रूड़ाराम चौहान/श्री लेखरामजी चौहान	चक ८ ए.टी.बी., वाया अनूपगढ़	ज्येष्ठ वदि ११
८९. देशराज डूडी/श्री सहीरामजी डूडी	चक ८ K.M., कलवानी, रावतसर	ज्येष्ठ वदि १२

जितने भी विकार हैं, वे सब नाशवान् वस्तु को महत्व देने से ही पैदा होते हैं। - धर्मशास्त्र

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
९०.	अमीलाल कड़वासरा/श्री लिखमारामजी चौधरी	चक ८ K.M., वाया रावतसर	ज्येष्ठ वदि १३
९१.	श्रीमती लक्ष्मीदेवी/श्री नारूरामजी नागौरा	गली नं. ८, सिन्धुनगर, किलारोड, जोधुपर	ज्येष्ठ वदि १४
९२.	कमलसिंह राणा/श्री कर्मसिंहजी राणा	राणा किराणा स्टोर, तलवाड़ाझील	ज्येष्ठ वदि ३०
९३.	सोनाराम गाडी/श्री सूजारामजी गाडी	मदासर वाया नेड़ाण, सॉकड़ा-३३५०२६	ज्येष्ठ सुदि १
९४.	किशनाराम गाडी/श्री भगूरामजी गाडी	मदासर वाया नेड़ाण, सॉकड़ा-३३५०२६	ज्येष्ठ सुदि २
९५.	चूनाराम गाडी/श्री भगूरामजी गाडी	मदासर वाया नेड़ाण, सॉकड़ा-३३५०२६	ज्येष्ठ सुदि ३
९६.	गणपतलाल छापुनिया/श्री मनसारामजी (सैनिक)	बड़ा कारंगा, फतेहपुर-३३२३०१	ज्येष्ठ सुदि ४
९७.	संत जोधारामजी/स्वामी उत्तमरामजी महाराज	V.P.O. चान्धन - ३४५०२६	ज्येष्ठ सुदि ५
९८.	फूलरामजी महीचा/श्री गीगारामजी महीचा	शास्त्री भवन, फतेहपुर शेखावाटी	ज्येष्ठ सुदि ६
९९.	आशाराम शास्त्री/श्री फूलरामजी महीचा	शास्त्री भवन, फतेहपुर शेखावाटी	ज्येष्ठ सुदि ७
१००.	हरिप्रसाद बारूपाल/श्री बन्नारामजी बारूपाल	ऊगूणा मोहल्ला, राजलदेसर-३३१८०२	ज्येष्ठ सुदि ८
१०१.	स्वामी रामप्रकाशाचार्य/स्वामी उत्तमरामजी वैष्णव	स्वत्वाधिकारी-उत्तम आश्रम, (आचार्यपीठ)	ज्येष्ठ सुदि ९
१०२.	श्री महन्त/श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज	उत्तम आश्रम, आचार्य पीठ, जोधपुर	ज्येष्ठ सुदि १०
१०३.	अन्नपूर्णा बाई (अंजना)/स्वामी उत्तमरामजी वैष्णव	उत्तम आश्रम, कागामार्ग, जोधपुर	ज्येष्ठ सुदि ११
१०४.	वि. जानकीशरण/स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी	उत्तम आश्रम, कागारोड़, जोधपुर	ज्येष्ठ सुदि १२
१०५.	संत लाडूरामजी/श्री उत्तमरामजी महाराज	उत्तम आश्रम, जोधपुर व डेलासर	ज्येष्ठ सुदि १३
१०६.	जगदीशप्रसाद महीचा/श्री भूरारामजी महीचा	जहाँगीर का कुंआ, फतेहपुर शेखावाटी	ज्येष्ठ सुदि १४
१०७.	रामस्वरूप बुन्देला/श्री हीरालालजी बुन्देला	शिकारगढ़, जोधपुर-३४२०१०	ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा
१०८.	बीजाराम सेजु/श्री तुलसीरामजी सेजू	पोस्ट दूदोड़, वाया मारवाड़ जंक्शन	आषाढ वदि १
१०९.	मनीराम दॉदल/श्री शेरारामजी दॉदल	स्कूल के पास, पोस्ट मोकमवाला	आषाढ वदि २
११०.	मोतीराम परिहार/श्री ईशररामजी परिहार	७ बीएलडी चक वाया श्रीविजयनगर	आषाढ वदि ३
१११.	उत्तमाराम पँवार/श्री पूँजारामजी पँवार	पोस्ट खरला, वाया श्री करणपुर	आषाढ वदि ४
११२.	हरिराम जयपाल/श्री नारायणदास जयपाल	V.P.O. खरलाँ, वाया श्रीकरणपुर	आषाढ वदि ५
११३.	राजूराम राठौड़/श्री ईश्वररामजी राठौड़	१८/१२०, चौ. हा. बोर्ड, जोधपुर	आषाढ वदि ६
११४.	कालूराम माली/श्री खेमराजजी माली	V.P.O. दुदलई, वाया रामपुरा-४५८४४१	आषाढ वदि ७
११५.	खेताराम परमार/श्री दोलारामजी परमार	आथूणी बस्ती, बागरा, जालोर	आषाढ वदि ८
११६.	मनीराम भाटी/श्री पूर्णनाथ जी भाटी	मोहननगर, हाल - सुखचैनपुरा	आषाढ वदि ९
११७.	संत आत्माराम सूरदास/श्री संत बखतारामजी	रामद्वारा, पोकरण-३४५०२१	आषाढ वदि १०
११८.	संत निरंजनराम (पूर्व सरपंच हुक्माराम)	चक ३ एस.टी.आर. नईमण्डी, घड़साना,	आषाढ वदि ११
११९.	देवाराम भाटी/श्री शेषारामजी भाटी	V.P.O. सियाठ, हाल - विक्रम सीमेण्ट फैक्ट्री, खोर,	आषाढ वदि १२
१२०.	शंकर पन्नु (पूर्व सांसद)/श्री जीवणरामजी पन्नु	पोस्ट आरायण, वाया श्रीकरणपुर	आषाढ वदि १३
१२१.	मांगीलाल धनगर/श्री भगवानाराम गूजर	दुदलई वाया रामपुरा, मन्दसौर (म. प्र.)	आषाढ वदि १४
१२२.	द्वारकाराम इणकिया/श्री उदारामजी इणकिया	सूलीडूँगर अम्बेडकर कॉलोनी, जैसलमेर	आषाढ वदि ३०
१२३.	माणकलाल ढेवाणा/श्री भागीरथरामजी ढेवाणा	जीवागंज, मन्दसौर, मध्य प्रदेश	आषाढ सुदि १
१२४.	श्रीमती कस्तूरी देवी/पत्नी श्री माणकलालजी	ढेवाणा निवास, मन्दसौर, (म.प्र.)	आषाढ सुदि २

कामनापूर्वक किया गया सब कार्य असत् है, उसका फल नाशवान् होगा।

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
१२५.	गोपालदास ढेबाणा/श्री माणकलालजी ढेबाणा	ढेबाणा निवास, जीवागंज, मन्दसौर	आषाढ सुदि ३
१२६.	श्रीमती कंकूबाई सामरिया/पत्नी श्री पेसूरामजी	गली नं. ७, सिन्धु नगर, जोधपुर	आषाढ सुदि ४
१२७.	मोमनराम पुआर/श्री रामकरणजी पुआर	V.P.O. तलवाड़ा झील-३३५५२५	आषाढ सुदि ५
१२८.	मोहनलाल जोपिंग/श्री पुरखारामजी जोपिंग	V.P.O. झाबरा वाया मणियाणा	आषाढ सुदि ६
१२९.	नखताराम इणकिया/श्री तिलोकारामजी इणकिया	अधिकारी दूरभाष, चान्धन/जैसलमेर	आषाढ सुदि ७
१३०.	पुरखाराम जयपाल/श्री बगसारामजी जयपाल	अध्यापक-डेलासर वाया लाठी-३४५०३१	आषाढ सुदि ८
१३१.	लालूराम इणकिया/श्री बखतारामजी इणकिया	बुनकर बस्ती, शूलीडूँगर, जैसलमेर	आषाढ सुदि ९
१३२.	विनोदकुमार धौलपरिया/श्री रामचन्द्रजी	सिंधी जटिया कॉलोनी, जोधपुर	आषाढ सुदि १०
१३३.	गोपाराम बुनकर/श्री आसुरामजी जोगल	भाखरी वाला बास, समदड़ी-३४४०२१	आषाढ सुदि ११
१३४.	जजेन्द्र कुमार शर्मा/श्री रामचन्द्रजी कुलरिया	न्यू पीलवा हाऊस, जोधपुर	आषाढ सुदि १२
१३५.	सुखरामजी बरड़वा/श्री हेमारामजी बरड़वा	दईयाकौर, पीलवा'३४२३०९	आषाढ सुदि १३
१३६	स्वामी रामप्रकाशाचार्य/स्वामी उत्तमरामजी वैष्णव	उत्तम आश्रम, कागा मार्ग, जोधपुर	आषाढ सुदि १४
१३७.	संत शुकदेवदास/स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी	उत्तम आंश्रम, कागारोड, जोधुपर	आषाढ पूर्णिमा
१३८.	ओमप्रकाश एडवोकेट/श्री गोविन्दरामजी सिंघारिया	सिन्धी जटिया कॉलोनी, जोधपुर	श्रावण वदि १
१३९.	बिरमाराम बारोटिया/श्री सुरजारामजी बारोटिया	अम्बेडकर कॉलोनी, रतनगढ़ (चुरू)	श्रावण वदि २
१४०.	ठाकुरराम इणकिया/श्री रेशमारामजी इणकिया	V.P.O. बोहा वाया देवा-३४५००१	श्रावण वदि ३
१४१.	बाबूलाल दादावत/श्री मोतीरामजी दादावत	V.P.O. पोमावा वाया सुमेरपुर	श्रावण वदि ४
१४२.	गोपीराम बरड़वा/श्री मोतीरामजी बरड़वा	दईयांकौर, लीलोलाई नाडी, पीलवा	श्रावण वदि ५
१४३.	महावीरप्रसाद टाक/श्री कालूरामजी कूमावत	V.P.O. आलमगढ़, अबोहर (पंजाब)	श्रावण वदि ६
१४४.	फकीरचन्द नोखवाल/श्री कालूरामजी कूमावत	आलमगढ़, अबोहर-१५२११६	श्रावण वदि ७
१४५.	श्रीमती दीपोदेवी/पत्नी श्री कालूरामजी कुलरिया	खोखसर, हाल - कर्वेनगर, पूना	श्रावण वदि ८
१४६.	सुगनाराम पाखरवड़/श्री लाभूरामजी पाखरवड़	V.P.O. देचू-३४२३१४, शेरगढ़	श्रावण वदि ९
१४७.	रामूराम पाखरवड़/श्री दीपारामजी पाखरवड़	V.P.O. देचू-३४२३१४	श्रावण वदि १०
१४८.	चौथाराम कुलरिया/श्री प्रहलादरामजी	V.P.O. कलाऊ, शेरगढ़-३४२३१४	श्रावण वदि ११
१४९.	जीवणराम माण्डण/श्री गिरधारीरामजी	V.P.O. मडलाकला-३४२३१४	श्रावण वदि १२
१५०.	घेवरराम पाखरवड़/श्री लाभूरामजी पाखरवड़	V.P.O. देचू-३४२३१४	श्रावण वदि १३
१५१.	आदूराम मंगलाव/श्री राणारामजी मंगलाव	V.P.O. ढेलाणा, (फलोदी)-३४२३०१	श्रावण वदि १४
१५२.	रेवन्तराम माकड़/श्री जग्गूरामजी माकड़	V.P.O. चेराई-३४२३०६ हाल - मुम्बई	श्रावण वदि ३०
१५३.	जीतूभाई पोपट/श्री मानसिंह कोटेजा राजपूत	५०२ बी, RO, P.No. ७, मुम्बई-६७	श्रावण सुदि १
१५४.	टामूराम बूढड़/श्री मगनारामजी सुथार	V.P.O. तेना-३४२०२८	श्रावण सुदि २
१५५.	मगनाराम बूढड़/श्री घेवररामजी बूढड़	V.P.O. जुड़िया-३४२०२२ शेरगढ	श्रावण सुदि ३
१५६.	कमलसिंह कोटेशा/श्री मानसिंहजी राजपूत	P.O. जसाई - ३४४००१	श्रावण सुदि ४
१५७.	जोगाराम कुलरिया/श्री सांगारामजी सुथार	V.P.O. होपारडी-३४२३०१ फलोदी	श्रावण सुदि ५
१५८.	खेमाराम डोयल/श्री सदासुखजी डोयल	V.P.O. सगरा-३४२३१४	श्रावण सुदि ६
१५९.	रामदेव दानोदिया/श्री हरिरामजी	बड़ा भोजासर वाया पाटोदा, सीकर	श्रावण सुदि ७

जो व्यक्ति बिना पाथेय लिए लम्बे मार्ग पर चल देता है, वह मार्ग में चलते हुए भूख-प्यास से पीड़ित होकर कष्ट पाता है।

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
१६०.	चेतनप्रकाश मोयल/श्री मांगीलालजी	नागौरीगेट, रामोल्ला, कागाडांडी, जोधपुर	श्रावण सुदि ८
१६१.	चैनाराम कुलरिया/श्री आम्बारामजी कुलरिया	V.P.O. कलाऊ-३४२०२२ सेतरावा	श्रावण सुदि ९
१६२.	बृजलाल पटवारी/श्री चाननरामजी धृट	V.P.O. ताखरांवाली, गोलूवाला-३३५८०२	श्रावण सुदि १०
१६३.	चान्दूराम लीलड़/श्री मोबतारामजी	V.P.O. भैरवा वाया चान्धन, जैसलमेर	श्रावण सुदि ११
१६४.	नखताराम कुलरिया/श्री मगनारामजी कुलरिया	V.P.O. लालपुरा वाया देचू-३४२३१४	श्रावण सुदि १२
१६५.	भँवरलाल सेलवाल/श्री अर्जुनरामजी बुनकर	V.P.O. पेमासर, उदासर (बीकानेर)	श्रावण सुदि १३
१६६.	पन्नालाल लाखा/श्री डूँगरलालजी लाखा	प्लॉट १४७, बलदेव नगर, जोधपुर	श्रावण सुदि १४
१६७.	श्रीमती दुर्गादेवी/पत्नि श्री छोगारामजी बूढड़	V.P.O. तेना-३४२०२८	श्रावण सुदि १५
१६८.	भँवरलाल नागल/श्री बूलारामजी बूढड़	बालुसिंह की ढाणी, गणियाणा-३४५०२४	भाद्रपद वदि १
१६९.	रामवदन प्रजापत/श्री द्वारकारामजी	बन्दतोला, मुम्बई	भाद्रपद वदि २
१७०.	प्रहलादराम जोपिंग/श्री भगवानारामजी जोपिंग	V.P.O. छीतर-३४३५३५	भाद्रपद वदि ३
१७१.	भूराराम जोपिंग/श्री मूलारामजी जोपिंग	V.P.O. शहर-३४४००१	भाद्रपद वदि ४
१७२.	दिनेश भाई परमार/श्री मनसुख भाई परमार	अन्सर नगर, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई	भाद्रपद वदि ५
१७३.	कैलाश मिस्त्री/श्री नारायण जी प्रजापत	दईसर, मुम्बई	भाद्रपद वदि ६
१७४.	उम्मेदराम कुलरिया/श्री शोगारामजी	V.P.O. नागाणा-३४४०२६	भाद्रपद वदि ७
१७५.	लालूराम धीर/श्री जेठारामजी धीर	V.P.O. सोमेसर-३४२०२५	भाद्रपद वदि ८
१७६.	खंगाराम बूढड़/श्री भूरारामजी बूढड़	P.O. शेरगढ़-३४२०२८	भाद्रपद वदि ९
१७७.	मोहनलाल अड्डावनिया/श्री हजारीरामजी	ए/८२१-८२२, जे.जे. कॉलोनी, दिल्ली	भाद्रपद वदि १०
१७८.	श्रीमती अगरादेवी/पत्नि श्री भानीरामजी माण्डण	बड़ा मड़ला, देचू-३४२३१४	भाद्रपद वदि ११
१७९.	श्रीमती मगीदेवी/धर्मपत्नि श्री लाभूरामजी	देचू-३४२३१४	भाद्रपद वदि १२
१८०.	भीमराव/श्री निवरूती पोल	भाईन्दर ईस्ट, मुम्बई-७८	भाद्रपद वदि १३
१८१.	भगवानाराम देवपाल/श्री कालूरामजी देवपाल	छपरपाड़ा, जैसलमेर, हॉल-कुड़ी भगतासनी	भाद्रपद वदि १४
१८२.	रामकिशन चौहान/श्री अर्जुनरामजी	तलवाड़ा झील-३३५५२५	भाद्रपद वदि ३०
१८३.	श्रीमती लहरोंदेवी/पत्नि श्री भीयारामजी बूढड़	V.P.O. गुमानसिंहपुरा, शेरगढ़	भाद्रपद सुदि १
१८४.	मुलतानाराम इणकिया/श्री छतारामजी इणकिया	V.P.O. कोटड़ी, पीथला-३४५००१	भाद्रपद सुदि २
१८५.	मोहनलाल माकड़/श्री सहजारामजी सुथार	प्लॉट नं. ६५, चांदना भाकर, जोधपुर	भाद्रपद सुदि ३
१८६.	साध्वी मानाबाई/शिष्या संत सूण्डारामजी	गोविन्दराम चक, 7 BLD श्रीविजयनगर	भाद्रपद सुदि ४
१८७.	संत पूरणप्रकाश वैष्णव/स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी	पूर्ण उत्तम आश्रम कृषिमण्डी के पीछे, रावतसर	भाद्रपद सुदि ५
१८८.	शिवकुमार हुड्डा/श्री हनुमानरामजी हुड्डा	V.P.O. गाँगियासर-३३२३०१	भाद्रपद सुदि ६
१८९.	मिस्त्री मिश्रीलाल/श्री नत्थुरामजी दिवर	हरि इन्जिनियरिंग वर्क्स, मन्दसौर, म.प्र.	भाद्रपद सुदि ७
१९०.	श्रीमती कंचन देवी/पत्नि श्री मिश्रीलालजी दिवर	मन्दसौर-४५८००२	भाद्रपद सुदि ८
१९१.	रामकृष्ण परिहार/श्री फोजाराम परिहार	नेहरू कॉलोनी, वार्ड २६, बालोतरा	भाद्रपद सुदि ९
१९२.	मानाराम जोगसन/श्री मालाराम जोगसन	खेड़ रोड, हीरा पन्ना गली, बालोतरा	भाद्रपद सुदि १०
१९३.	श्रीमती हेमीदेवी/पत्नि श्री मूलारामजी माण्डण	बड़ा मड़ला, हॉल - मुम्बई	भाद्रपद सुदि ११
१९४.	रामनिवास महीचा/श्री अर्जुनरामजी महीचा	जहाँगीर कुआ के पास, फतेहपुर शेखावाटी	भाद्रपद सुदि १२

सदैव अप्रमत्त रहकर मृषावाद का त्याग करना तथा सतत उपयोग के साथ हितकारी सत्य बोलना बहुत कठिन है।

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
१९५.	श्रीमती शान्तिदेवी/पति श्री मदनलाल चिराणिया	भेरूपुरा, हॉल-पानीपेच, जयपुर	भाद्रपद सुदि १३
१९६.	मिस्त्री भगवानाराम/श्री शेरारामजी बूढड़	V.P.O. शेरगढ़-३४२०२२	भाद्रपद सुदि १४
१९७.	श्रीमती शान्तिदेवी/पति श्री भगवानारामजी	बूढड़ भवन, V.P.O. शेरगढ़	भाद्रपद सुदि १५
१९८.	श्री राजबब्बर अभिनेता (पूर्व सांसद)	२० नैपथ्य जुहू, गुलमोहर रोड, मुम्बई	आश्विन वदि १
१९९.	हेमारामजी जोपिंग/श्री पूनमारामजी जोपिंग	V.P.O. सरवड़ी, कल्याणपुर, बाड़मेर	आश्विन वदि २
२००.	मोहनराम गेंपल/श्री पूनारामजी सुथार	V.P.O. कुशलावा, फलोदी, जोधपुर	आश्विन वदि ३
२०१.	अनोपाराम मंगलाव/श्री जेतारामजी मंगलाव	V.P.O. ढेलाणा, लोहावट (जोधपुर)	आश्विन वदि ४
२०२.	रूपाराम जोपिंग/श्री फूसारामजी जोपिंग	V.P.O. सरवड़ी, वाया कल्याणपुर	आश्विन वदि ५
२०३.	बालूराम जोपिंग/श्री फूसारामजी जोपिंग	V.P.O. सरवड़ी पुरोहितान	आश्विन वदि ६
२०४.	लिखमाराम बूढड़/श्री हमीरारामजी बूढड़	V.P.O. तेना, शेरगढ़-३४२०२८	आश्विन वदि ७
२०५.	इन्द्राराम जोपिंग/श्री राणारामजी जोपिंग	V.P.O. भूँगरा, (शेरगढ़)-३४२०२८	आश्विन वदि ८
२०६.	जोगाराम छड़िया/श्री शेरारामजी छड़िया	V.P.O. चावा-३४२०२२	आश्विन वदि ९
२०७.	चनणाराम बूढड़/श्री मंगलारामजी बूढड़	P.O. फलसूण्ड वाया पोकरण	आश्विन वदि १०
२०८.	श्रीमती नारायणीदेवी/पत्नी श्री पदमारामजी माण्डण	V.P.O. मड़ला खुर्द, (मड़लाकला) देचू	आश्विन वदि ११
२०९.	श्रीमती जतनो सुथार/पत्नी दुर्गारामजी पाखरवड़	V.P.O. परालिया, (कोरणा) ३४४०२७	आश्विन वदि १२
२१०.	खैराजराम भदरेसा/श्री बगतारामजी भदरेसा	V.P.O. बोंधेवा वाया फलसूँड	आश्विन वदि १३
२११.	शंकरलाल जयपाल/श्री अमराराम जयपाल	महामन्दिर दलेचा, शिवशक्ति नगर,जोधपुर	आश्विन वदि १४
२१२.	श्रीमती देवीसुथार पत्नी श्री दौलारामजी पाखरवड़	कानोडिया वाया देचू-३४२३१४	आश्विन वदि ३०
२१३.	नीम्बाराम/रायमलराम पँवार/श्री रूगारामजी	V.P.O.सौडाकोर,वाया लाठी-३४५०३१	आश्विन सुदि १
२१४.	मुहम्मद यूसुफ बेलिम/श्री हाजी मुहम्मद भिश्ती	राजमहल के पास, गुलाबसागर, जोधपुर	आश्विन सुदि २
२१५.	भीखाराम इणकिया/श्री पूरनारामजी इणकिया	बालों की ढाणी, ओसियाँ-३४२३०३	आश्विन सुदि ३
२१६.	शिशुपाल चिनिया/श्री बदरूरामजी चिनिया	V.P.O. गोलसर, जिला चुरू-३३१००१	आश्विन सुदि ४
२१७.	गोविन्दराम भाटी/श्री नत्थुरामजी भाटी	इन्द्रा मार्केट, श्री विजयनगर-३३५७०४	आश्विन सुदि ५
२१८.	पूसाराम टेलर/श्री कानारामजी जयपाल	P.O. लोहावट-३४२३०२	आश्विन सुदि ६
२१९.	टीकूराम बारूपाल/श्री प्रहलादरामजी	धायसर, हॉल-चौ. हा. बोर्ड, जोधपुर	आश्विन सुदि ७
२२०.	मानाराम परिहार/श्री आसूरामजी परिहार	V.P.O. कागाऊ, हॉल - बालोतरा	आश्विन सुदि ८
२२१.	दुल्हीचन्द मेव/श्री मालाराम जी मेव	V.P.O. बड़वासी, नवलगढ़ (झुंझुंनू)	आश्विन सुदि ९
२२२.	विशनाराम माकड़/श्री सहजाराम जी माकड़	चेराई, (जोधपुर) - ३४२३०६	आश्विन सुदि १०
२२३.	विजाराम बामणिया/श्री मुलतानरामजी बामणिया	V.P.O. ओढाणिया, (पोकरण)	आश्विन सुदि ११
२२४.	संत धर्मारामजी/स्वामी रामदासजी "वैरागी"	हरि आश्रम, जाजीवाल खींचियाँ	आश्विन सुदि १२
२२५.	संत तिलोकराम/स्वामी चेतनराम जी	रामद्वारा, P.O. मेड़ता सिटी-३४१५१०	आश्विन सुदि १३
२२६.	श्रीमती लेहरांदेवी/पति श्री भेरारामजी बूढड़	V.P.O. गुमानसिंहपुरा, शेरगढ़	आश्विन सुदि १४
२२७.	भेराराम बूढड़/श्री मोडारामजी बूढड़	V.P.O. गुमानसिंहपुरा-३४२३१४	आश्विन सुदि १५

अग्नि यहाँ जितनी उष्ण है, उससे भी अनेक गुनी उष्णता हमने नरकों में भोगी है ।

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
२२८.	जयप्रकाश कुलरिया/श्री पेपारामजी कुलरिया	V.P.O. सुखमड़ला, पीलवा-३४२३०६	कार्तिक वदि १
२२६.	पेमाराम बरड़वा/श्री कुम्भारामजी बरड़वा	पाबुसर, दासानिया, हाल-लातूर	कार्तिक वदि २
२३०.	पोपाराम डोयल/श्री दीपारामजी डोयल	V.P.O. सेतरावा (जेतसर)-३४२०२५	कार्तिक वदि ३
२३१.	घीसूलाल पँवार/श्री जोगारामजी पँवार	महामन्दिर, तीसरीपोल, दलेचां, जोधपुर	कार्तिक वदि ४
२३२.	साध्वी सज्जनी बाई/शिष्या संत देवारामजी	रामद्वारा, समदड़ी रोड, बालोतरा	कार्तिक वदि ५
२३३.	रतनाराम माकड़/श्री चुन्नीलालजी, चेराई वाले	डिफेंस कॉलोनी, न्यू समा रोड, बड़ौदा	कार्तिक वदि ६
२३४.	रावलराम बामणिया/श्री राजूरामजी बामणिया	V.P.O. लोड़ता वाया सेतरावा	कार्तिक वदि ७
२३५.	पूनाराम बूढड़/श्री धौंकलरामजी बूढड़	सामराऊ, त. औसियां, जोधपुर	कार्तिक वदि ८
२३६.	मोहनलाल बामनिया/श्री लाधूरामजी बामणिया	P.O. सेतरावा - ३४२०२५	कार्तिक वदि ६
२३७.	मूलाराम जोपिंग/श्री हनवन्ताराम सुथार	बुड़किया, हॉलं-भालेकर वस्ती, पूना	कार्तिक वदि १०
२३८.	घीसूलाल बागराणा/श्री गुल्लारामजी बागराणा	मकान नं. ४२, रामोल्ला रोड, जोधपुर	कार्तिक वदि ११
२३६.	रूपाराम धनदे/श्री चोखारामजी धनदे, अधिकारी	जल विभाग सेवारत, V.P.O. चेलक	कार्तिक वदि १२
२४०.	पोकरराम पँवार/श्री खुशालरामजी पँवार	V.P.O. सोडाकोर वाया लाठी	कार्तिक वदि १३
२४१.	अनिलकुमार टाटिया/कैलाशचन्द्र टाटिया	ई-८३, शास्त्रीनगर, जोधपुर	कार्तिक वदि १४
२४२.	श्रीमती चूनींदेवी/पत्नि श्री केसरारामजी पाखरवड	सोमेशर वाया सेतरावा-३४२०२५	कार्तिक वदि ३०
२४३.	अनिल कुमार सिंवर/श्री रामसिंहजी सिंवर	V.P.O. मोडाखेड़ा, (आदमपुर), हिसार	कातिक सुदि १
२४४.	श्रीमती संतोष देवी/पत्नि श्री पूर्णमलजी महीचा	फतेहपुर शेखावाटी-३३२३०१	कार्तिक सुदि २
२४५.	पूर्णमल बरवड़/श्री बोदूरामजी बरवड़	भेरूपुरा, हॉल-भोजासर बड़ा, सीकर	कार्तिक सुदि ३
२४६.	सालगराम परिहार/चमारामजी परिहार	वार्ड २८, बालोतरा-३४४०२२	कार्तिक सुदि ४
२४७.	रमेशकुमार रूईल/श्री बेगारामजी रूईल	चक ८ के.एम., रावतसर (हनुमानगढ़)	कार्तिक सुदि ५
२४८.	मांगीलाल कड़ेला/श्री जस्सारामजी कड़ेला	म.नं. ३४, तीसरी पोल, महामन्दिर, जोधपुर	कार्तिक सुदि ६
२४६.	मिश्राराम गाडी/श्री किशनारामजी गाडी	मदासर वाया नेडाण-३४५०२६	कार्तिक सुदि ७
२५०.	रेवन्तराम माण्डण/श्री उदारामजी माण्डण	V.P.O. बुड़किया, (सेतरावा) शेरगढ़	कार्तिक सुदि ८
२५१.	सागरमल मलोवा/श्री मुन्नारामजी मलोवा	ढोलास, हॉल-बजाजनगर, जयपुर	कार्तिक सुदि ६
२५२.	कर्णसिंह मेघवाल/श्री देवाराम गोठवाल	पहाड़सर, (राजगढ़) चूरू	कार्तिक सुदि १०
२५३.	नखताराम कुलरिया/श्री कालूरामजी कुलरिया	V.P.O. खोखसर -३४४०३२	कार्तिक सुदि ११
२५४.	श्रीमती मूमलदेवी/पत्नि श्री नखतारामजी	V.P.O. खोखसर, (पचपदरा)	कार्तिक सुदि १२
२५५.	पिन्नुलाल जयपाल/श्री नथुरामजी जयपाल	कागा कॉलोनी, जोधपुर, हॉल-जयपुर	कार्तिक सुदि १३
२५६.	नारायणराम बूढड़/श्री सदासुख जी बूढड़	V.P.O. सामराऊ, (ओसियाँ) लोहावट	कार्तिक सुदि १४
२५७.	कालूराम कुलरिया/श्री भेरारामजी	V.P.O. खोखसर वाया पचपदरा	कार्तिक सुदि १५
२५८.	राजेन्द्रकुमार तँवर/श्री कानारामजी तँवर	V.P.O. लावण्डा वाया ठेडी-३३१०२४	मार्गशीर्ष वदि १
२५६.	पूर्णमल महीचा/श्री फूलरामजी महीचा	फतेहपुर शेखावाटी-३३२३०१	मार्गशीर्ष वदि २
२६०.	श्रीमती मोहनीदेवी/पत्नी श्री झाबरमलजी पीपलवा	अम्बेडकर नगर, रतनगढ़-३३१०२२	मार्गशीर्ष वदि ३
२६१.	संत जयरामदास/स्वामी उत्तमरामजी वैष्णव	V.P.O. राजमथाई वाया पोकरण	मार्गशीर्ष वदि ४

यहाँ जितनी शीतलता (ठण्डी) है उससे भी अनन्तगुनी शीत वेदना हमने नरकों में सहन की है।

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
२६२.	भगवानाराम चौहान/श्री भीकारामजी चौहान	V.P.O. बांसी, वाया सुमेरपुर, पाली	मार्गशीर्ष वदि ५
२६३.	ओमप्रकाश धूंबड़ा/श्री टीकमरामजी धूंबड़ा	V.P.O. सराना, हाल समदड़ी-३४४०२१	मार्गशीर्ष वदि ६
२६४.	भँवरराम गर्ग/श्री आसुरामजी गर्ग	V.P.O. बोड़वा वाया बायतु, बाड़मेर	मार्गशीर्ष वदि ७
२६५.	हेमराज बेगड़/श्री लालचन्द बेगड़ (पेण्टर)	राम महोल्ला, मेघवाल बस्ती, जोधपुर	मार्गशीर्ष वदि ८
२६६.	शेख मुहम्मद सद्दीक (पारा)/श्री गनी मुहम्मदजी	पारा कम्प्यूटर्स, जोधपुर-३४२००१	मार्गशीर्ष वदि ९
२६७.	सुरेशचन्द्र (आर.ए.एस.)/श्री भगवानसिंह जी	हाल-उपखण्ड अधिकारी, बालोतरा	मार्गशीर्ष वदि १०
२६८.	सुमेरचन्द्र कुलरिया/श्री कालूरामजी कुलरिया	V.P.O. खोखसर - ३४४०३२	मार्गशीर्ष वदि ११
२६९.	प्रेमप्रकाश शाह/स्व. भँवरलालजी शाह	म. नं. १०३-७वीं सी. रोड, जोधपुर	मार्गशीर्ष वदि १२
२७०.	रामलाल पालीवाल/श्री सीतारामजी पालीवाल	डिफेन्स लेब रोड, रातानाडा, जोधपुर	मार्गशीर्ष वदि १३
२७१.	मंगलाराम माकड़/श्री सोनारामजी सुथार	काकेलाव वाया बनाड़, जोधपुर-३४२०२७	मार्गशीर्ष वदि १४
२७२.	दानाराम कुलरिया/श्री कालूरामजी कुलरिया	V.P.O. खोखसर, (बाड़मेर)	मार्गशीर्ष वदि ३०
२७३.	श्रीमती मोतादेवी/धर्मपत्नी श्री सुखारामजी बरड़वा	चौ. हा. बोर्ड १९/६११, जोधपुर-८	मार्गशीर्ष सुदि १
२७४.	शंकरलाल मंडीवाल/खीवांरामजी मंडीवाल	बड़ा भोजासर, वाया पाटोदा (सीकर)	मार्गशीर्ष सुदि २
२७५.	राजेन्द्रप्रसाद (राजू)/श्री राणाराम पँवार	मसूरिया, पुलिस चौकी के पीछे, जोधपुर	मार्गशीर्ष सुदि ३
२७६.	चन्द्राराम (रामचन्द्र)/श्री हजारीराम कुलरिया	मु. पोस्ट लालपुरा, देचू-३४२३१४	मार्गशीर्ष सुदि ४
२७७.	घनश्यामदास रूईल/श्री बेगारामजी रूईल	चक ८ के. एस., सरदारपुरा, रावतसर	मार्गशीर्ष सुदि ५
२७८.	प्रतापभानु कड़ेला/श्री जस्सारामजी कड़ेला	V.P.O. बीसलपुर, (बनाड़) जोधपुर	मार्गशीर्ष सुदि ६
२७९.	कान्तिभाई मेवाड़ा/श्री विरसनदास मेवाड़ा	बाबूभाई चाल नटवरनगर, मुम्बई-६०	मार्गशीर्ष सुदि ७
२८०.	रावताराम जोपिंग/श्री भगवानारामजी जोपिंग	V.P.O. सीतर वाया कवास, बाड़मेर	मार्गशीर्ष सुदि ८
२८१.	बाबूलाल बरड़वा/श्री खानूराम जी बरड़वा	P.O. खिरजां, V.P.O.तिबना (शेरगढ़)	मार्गशीर्ष सुदि ९
२८२.	हीरालाल मेहरड़ा/श्री जेठारामजी मेहरड़ा	पोस्ट ८ एस., जी.एम.. (सूरतगढ़)	मार्गशीर्ष सुदि १०
२८३.	बंशीलाल कटारिया/श्री हरिरामजी कटारिया	सोजतीगेट के अन्दर, बिलाड़ा-३४२६०२	मार्गशीर्ष सुदि ११
२८४.	रमेशकुमार धोबड़ा/श्री रायचन्दजी धोबड़ा	आमली वाया सांचोर-३४३०४१	मार्गशीर्ष सुदि १२
२८५.	श्रीमती हीरादेवी/पत्नि श्रीनरसिंगरामजी पालीवाल	काकेलाव, (बनाड़) जोधपुर-३४२०२७	मार्गशीर्ष सुदि १३
२८६.	श्रीमती पार्वतीदेवी/पिताश्री भेरारामजी पालीवाल	काकेलाव, बनाड़ - ३४२०२७	मार्गशीर्ष सुदि १४
२८७.	छगनाराम कुलरिया/श्री अमानारामजी कुलरिया	शिवनेरी सदन, वैतालनगर, कोथरूड़	मार्गशीर्ष सुदि १५
२८८.	शंकरलाल कुलरिया/श्री पुरखारामजी सुथार	तिबना, वाया सेना-३४२०२४	पौष वदि १
२८९.	श्रीमती सूआदेवी/धर्मपत्नी श्री लूणारामजी कूलरिया	फलसूंड-३४५०२५ हाल-कोथरूड, पूना	पौष वदि २
२९०.	चनणाराम बूढ़ड़/श्री मालारामजी सुथार	सोलंकिया तला, सेतरावा-३४२०२५	पौष वदि ३
२९१.	द्वारकाराम माकड़/श्री बखतारामजी माकड़	रामगढ़-३४५०२२ हाल-खिड़वाड़ी, पूना	पौष वदि ४
२९२.	प्रभुरामजी कुलरिया/श्री बीजारामजी सुथार	फलसूण्ड, हाल-कोथरूड़, पूना-२९	पौष वदि ५
२९३.	तुलसाराम भून्दड़/श्री मघारामजी भून्दड़	V.P.O. बायतु हाल-विवेकनगर, पूना	पौष वदि ६
२९४.	ईशाराम बरड़वा/श्री सूजारामजी सुथार	आसरलाई वाया सेतरावा-३४२०२५	पौष वदि ७
२९५.	चुन्नीलाल सुथार/श्री आईदानरामजी कुलरिया	V.P.O. डेरिया नागाणा, कल्याणपुर	पौष वदि ८

मेरी अपनी आत्मा ही वैतरणी नदी है, आत्मा ही कूट शाल्मली वृक्ष है, कामधेनु है और नन्दन वन है।

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
२९६.	गणपतराम कुलरिया/श्री रघुनाथरामजी	सेतरावा-३४२०२५ (जोधपुर)	पौष वदि ९
२९७.	ओमप्रकाश सलूण/श्री जेठारामजी सुथार	सीहड़ा वाया फलोदी-३४२३०१	पौष वदि १०
२९८.	जसाराम कुलरिया/श्री मांगीलालजी सुथार	देतु किरताणिया, (सेतरावा) ३४२०२५	पौष वदि ११
२९९.	दीपाराम कुलरिया/श्री जोरारामजी सुथार	V.P.O. गुड़ा वाया तेना-३४२०२८	पौष वदि १२
३००.	हुकमाराम चड़िया/श्री हस्तीरामजी सुथार	चाबा, वाया शेरगढ़-३४२०२२	पौष वदि १३
३०१.	जगदीशराम बरड़वा/श्री अमानाराम सुथार	आसरलाई वाया सेतरावा-३४२०२५	पौष वदि १४
३०२.	भेवरलाल बरड़वा/श्री चौथारामजी सुथार	आसरलाई वाया सेतरावा-३४२०२५	पौष वदि ३०
३०३.	थानाराम बूढड़/श्री अमानारामजी सुथार	ठाडिया वाया देचू-३४२३१४	पौष सुदि १
३०४.	चम्पालाल चड़िया/श्री बाबूलालजी सुथार	देड़ा वाया सेतरावा-३४२०२५	पौष सुदि २
३०५.	जूंजाराम कुलरिया/श्री भोमारामजी सुथार	फलसूण्ड वाया जैसलमेर-३४५०२५	पौष सुदि ३
३०६.	रघुनाथराम बामणिया/श्री सांगारामजी	हॉल-डॉ. ई. मौजेस रोड़, वरली, मुम्बई	पौष सुदि ४
३०७.	मोतीराम जोपिंग/नरसिंगाराम सुथार	झाबरा, भणियाणा-३४५४५०	पौष सुदि ५
३०८.	रावलराम जोपिंग/श्री पेमारामजी सुथार	कोलू वाया फलोदी-३४२३०१	पौष सुदि ६
३०९.	बालाराम चड़िया/श्री अचलारामजी सुथार	चोरड़िया वाया सेतरावा-३४२०२५	पौष सुदि ७
३१०.	रिमणराम बूढड़/श्री सुखारामजी सुथार	सोलंकिया तला, वाया सेतरावा	पौष सुदि ८
३११.	भगाराम सुथार/श्री हमीरारामजी बूढड़	कुन्तेलिया वाया तेना-३४२०२८	पौष सुदि ९
३१२.	पदमाराम भून्दड़/श्री कलारामजी भून्दड़	जाजवा वाया बायतु-३४३५३५	पौष सुदि १०
३१३.	खीमाराम बरड़वा/श्री दानारामजी सुथार	केसूला वाया बायतु (बाड़मेर)	पौष सुदि ११
३१४.	झूमरलाल आसदेव/श्री सुगनीराम जी सुथार	१४/१०६१, चौ. हा. बोर्ड, जोधपुर	पौष सुदि १२
३१५.	खेमचन्द राठौड़/श्री हरिरामजी राठौड़	नई घड़साना मण्डी-३३५७०७	पौष सुदि १३
३१६.	श्रीमती शान्तिबाई साध्वी/श्री रूपारामजी सोलंकी	जनतावाली चक घड़साना नई मण्डी	पौष सुदि १४
३१७.	ओमप्रकाश एडवोकेट/श्री बीरबलरामजी सिंहमार	पुरानी, आबादी, श्रीगंगानगर-३३५००१	पौष सुदि पूर्णिमा
३१८.	धन्नाराम लौवा/श्री छोगारामजी लौवा	V.P.O. नाथड़ाऊ-३४२३०९	माघ वदि १
३१९.	बस्ताराम चौहान/श्री देदारामजी चौहान	सांकड़ा-३४५०२७ (पोकरण)	माघ वदि २
३२०.	गोबरराम देपाल/श्री सांवलरामजी देपाल	सरवड़ी - ३४४०२६ (बाड़मेर)	माघ वदि ३
३२१.	बाबूलाल बरड़वा/श्री शंकरराम जी	V.P.O. बरसिंगा (बाड़मेर)	माघ वदि ४
३२२.	मोतीराम राठौड़/बनाजी राठौड़	सुमेरपुर-३०६९०२ (पाली)	माघ वदि ५
३२३.	महेन्द्रसिंह गहलोत/श्री मानसिंहजी माली	महेन्द्र इलेक्ट्रिकल्स, महामन्दिररोड, जोधपुर	माघ वदि ६
३२४.	भँवरसिंह चौहान/श्री शिवसिंहजी राजपूत	विद्युत मिस्त्री, कागड़ी, जोधपुर-६	माघ वदि ७
३२५.	भगाराम नाँगल/श्री राणारामजी सुथार	V.P.O. बस्तुआ, सूण्डों का बास, बालेसर	माघ वदि ८
३२६.	संजयकुमार गुप्ता/श्री हरीश स्वरूप गुप्ता	५२६, डिफेन्स कॉलोनी, चौ.रोड, जोधपुर	माघ वदि ९
३२७.	कालूरामजी कूमावत/श्री बहादरराम जी टाक	P.O. आलमगढ़, अबोहर, (फिरोज़पुर)	माघ वदि १०
३२८.	शंकरलाल अध्यापक/श्री भेरारामजी माधव	V.P.O. कोलीवाड़ा-३०६९०२	माघ वदि ११

क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, भय, वाचालता तथा विकथाओं में सतत उपयोग रहितता होनी चाहिए।

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में सुखराम टांका सूरसागर से शोभा यात्रा मंगल कलश राममय नगर परिक्रमा प्रारम्भ दर्शन, दिनांक २० फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

अनन्त श्री स्वामी सुखरामजी महाराज 'वैरागी' की दर्शनीय तपस्थली एवं स्मृति स्थल(सुखराम टांका), सुरसागर, जोधपुर में संत समाज द्वारा साकेत शताब्दी महोत्सव पूजन, दिनांक २० फरवरी २००३, वि. स. २०५६ फागुन वदी ४ गुरूवार

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में आस्थावान भक्त समुदाय का जनसैलाब, श्री वैष्णव संत स्मृति स्थल (कागा)पूर्वाचार्यगण के पूजन हेतु शोभा यात्रा में संत समुदाय के साथ गूदड़गद्दी दांतडाधाम पीठाचार्य श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज, दिनांक २१ फरवरी २००३ ई.

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन
श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की साकेत शताब्दी में आस्थावान भक्त समुदाय के साथ श्री वैष्णव संत स्मृति स्थल (कागा) पूर्वाचार्यगण के पूजन हेतु जाते/आते हुए शोभा यात्रा में संत समाज एवं गूदड़गद्दी दांतडाधाम पीठाचार्य श्री स्वामी निर्मलरामजी महाराज, दिनांक २१ फरवरी २००३ ई.
STD

क्रमांक	नाम मय पिता, गौत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक सेवा दिन
३२९.	श्रीमती गोपीदेवी कुलरिया/पत्नि श्री सांगारामजी	V.P.O. दान्तल वाया फलसूंड, पोकरण	माघ वदि १२
३३०.	ओमप्रकाश/	इन्दौर (मध्य प्रदेश)	माघ वदि १३
३३१.	प्रकाश भाई/श्रीदरजाजी राठौड़	कालिन्द्री, सिरोही, हॉल-नडियाद	माघ वदि १४
३३२.	अध्यापक डूंगराराम बोधू/श्री वन्नारामजी बोधू	वार्ड ६, जसोल, बालोतरा	माघ वदि ३०
३३३.	भँवरलाल/श्री पोकरराम	V.P.O. कवास (बाड़मेर)	माघ सुदि १
३३४.	कँवरलाल सुथार/श्री अणदाराम जी कुलरिया	V.P.O. सरली (बाड़मेर)	माघ सुदि २
३३५.	भागीरथराम/श्री अखारामजी महीचा	मेनसर (बीकानेर)-३३४८०२	माघ सुदि ३
३३६.	अनोपाराम सुथार/श्री तेजारामजी कुलरिया	V.P.O. दशाणिया (शेरगढ़)	माघ सुदि ४
३३७.	छगनलाल परमार/श्री धर्मारामजी परमार	सहयोग वेलफेयर सोसायटी, मलाड (ईस्ट), मुम्बई	माघ सुदि ५
३३८.	रामेश्वरलाल मांकड़/श्री सांवतारामजी	V.P.O. श्रीबालाजी, (नागौर)-३४१०२६	माघ सुदि ६
३३९.	मारूति साहब शिंदे/साहबरामजी शिंदे	P.O. बारामति, महाराष्ट्र	माघ सुदि ७
३४०.	तेजाराम गोठड़ीवाल/श्री गोपालरामजी	V.P.O. सुजानगढ़, चूरू-३३१५०७	माघ सुदि ८
३४१.	डॉ. कृष्णकुमार टाक/श्री चन्दूरामजी टाक	कुमावत, V.P.O. आलमगढ़, (अबोहर)	माघ सुदि ९
३४२.	गोपीराम चान्दोरा/श्री ज्ञानारामजी कुमावत	V.P.O. आलमगढ़, (अबोहर) पंजाब	माघ सुदि १०
३४३.	श्रीमती लालीदेवी/पत्नि श्री देवीलालजी पनवा	रणसीसर, (चूरू) - ३३१००१	माघ सुदि ११
३४४.	श्री मीठालाल तलाटी/श्री अजाजी दईया	खोडियार माता मन्दिर सामने, नडियाद	माघ सुदि १२
३४५.	रूपाराम सुथार/श्री सुखारामजी वरड़वा	चौ. हा. बोर्ड १९/६११, जोधपुर-८	माघ सुदि १३
३४६.	संत बागाराम/संत रणछारामजी वैष्णव	बणजारा भवन, विशनगढ़, जालोर	माघ सुदि १४
३४७.	हिम्मताराम रॉगी/जूँजारामजी रॉगी	नेहरू कॉलोनी, बालोतरा-३४४०२२	माघ सुदि १५
३४८.	नारायणराम भूँदड़/श्री सदासुख जी भूँदड़	V.P.O. सामराऊ वाया लोहावट	फाल्गुन वदि १
३४९.	केसराराम सुथार/श्री तुलसाराम बूढड़	P.O. तिबना, वाया तेना-३४२०२४	फाल्गुन वदि २
३५०.	जगदीशराम/श्री खंगाररामजी बूढड़	V.P.O. शेरगढ़-३४२०२२	फाल्गुन वदि ३
३५१.	चौथाराम कूलरिया/श्री प्रहलादरामजी सुथार	कलाऊ वाया सेतरावा-३४२०२५	फाल्गुन वदि ४
३५२.	शेषाराम डांगी/श्री केराजी डांगी	P.O. पोमावा-३०६९०२	फाल्गुन वदि ५
३५३.	रामूराम बूढड़/श्री मंगनाराम बूढड़	V.P.O. शेरगढ़-३४२०२२	फाल्गुन वदि ६
३५४.	पूंजराजसिंह/श्री हंसराजजी राजपुरोहित	V.P.O. कानोडिया-३४२३०६	फाल्गुन वदि ७
३५५.	मोहनराम कड़ेला/श्री हेमारामजी कड़ेला	V.P.O. डेरिया-३४२३०६	फाल्गुन वदि ८
३५६.	भँवरलाल माण्डण/श्री सांगारामजी माण्डण	बड़ा मड़ला-३४२३१४, हॉल मुम्बई	फाल्गुन वदि ९
३५७.	जगदीश भाटी/श्री हरिरामजी भाटी	काकेलाव (बनाड़) -३४२०२७	फाल्गुन वदि १०
३५८.	दुर्गाराम जोपिंग/श्री डूँगरलाल जी जोपिंग	झाबरा, V.P.O. भणियाणा, (पोकरण)	फाल्गुन वदि ११
३५९.	देवाराम (अध्यापक)/रणजीतारामजी पंवार	बायतू पनजी-३४४०३४	फाल्गुन वदि १२
३६०.	भगवान भाई/श्री सुन्दरभाई ब्रह्मक्षत्रिय	गढशीशा, तालुका भुज (गुजरात)	फाल्गुन वदि १३
३६१.	अनोपाराम/ श्री सोनारामजी पाखरवड़	मु. पो. सोमेश्वर, सेतरावा-३४२०२५	फाल्गुन वदि १४

कर्म से ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय होता है, कर्म से वैश्य होता है और कर्म से शूद्र होता है।

आस्था के स्रोत

रचयिता - मेघाराम पुत्र श्री सकाजी धारू
मु. पो. धानसा, तहसील - भीनमाल, जिला - जालौर-३४३०२३

इन्द्र विजय छन्द

राम प्रकाश विनीत सुनो नित, गरीब गुलाम सलाम करे है । करहूँ दया दयावन्त सागर, चरण में आरत शीश धरे है ।।
आप बिना ईस कौन खलक में, जो ममृ मालिक पाप हरे है । रामप्रकाश के पाद में "मेघा" है जाल जगत से क्यों डरे है ।।1।।

इन्दव छन्द

करत वर्णन बारम्बार ही, थाकत हूँ गुण गावत थोरो । विधी ही किम बखान करें धी, मूर्ख हूँ पुनि हूँ मति भोरो ।।
आय सहाय करो ममृ मालिक, सफल जीवन होवत मोरो । दास 'मेघाराम' बुम्ब दिये भव, पार करो ईश आपको छोरो ।।2।।
तार लिए कई भव में आरत, और हूँ तिरण तारण पोते । काल जंजाल हलाहल थाकत, अनन्त दुर जम खावत गोते ।।
रामप्रकाश प्रभाव जहाँ जग, देखत लोकण कंचन होते । दीन 'मेघाराम' पार परै भव, द्वन्द कटे मण्डलेश्वर जोते ।।3।।
राम प्रकाश को पाद न ध्यावत, गुण न गावत जो नर मूँण्डा । भोगत द्वन्द रू फन्द परे पग, कीचड़ माया में जावत ऊँण्डा ।।
चेतन जो नर चेत गये नित, पीवत चरण अमिरस कूण्डा । दीन 'मेघाराम' क्यूंकर छोड़े, चेत गया जब सीप को ढूँण्डा ।।4।।
कंचन का नित मंदिर महल ही, अश्व कुंजर लाख करोड़ी । माल खजाना अनन्त भरा धन, सुन्दर रूप नर नार की जोड़ी ।।
पुत्र बान्धव कुटुम्ब है अति, दीन 'मेघाराम' बुद्धि ही थोड़ी । जा घट राम प्रकाश नहीं है, काम न आवत एक ही कोड़ी ।।5।।
दोहा - आरत अर्ज गुंजार ता, पूर्ण करो मम् आश । नमो कोटि प्रणाम हैं, राघव राम प्रकाश ।।6।।

त्रिभंगी छन्द

श्री रामप्रकाशा, आनन्द राशा, दीन पियासा, करंत आशा । औगुण नाशा, काटो फाशा, शब्द साँचा, हिरदे वाचा ।।
नहीं निराशा, चरणे दासा, सत्त सत्तध्यासा, आनन्द हीरा । मेघ फकीरा, आप अमीरा, सागर चीरा, करदो तीरा ।।7।।
दोहा - रचना करूँ श्रद्धा से, राघव मिलन के काज । दया करो तुच्छ दास पे, अर्ज करू महाराज ।।8।।

मनोहर छन्द

जागु तोई जप नाय, नींद ना रजनी आय, खान पान कैम भय, आप बिना धुर है ।
नाद सुनो दीन दयाल, कुकत कायर हाल, कौन विधी करो न्याल, खाली मेरो उर है ।।
दया कर कर मेहर, मूलूँ नाय अष्ठ पैहर, भूलू तोई नाय वेर, लग्न भरपूर है ।
मेघ छोड़ी सर्व आश, राघव को होऊँ दास, छन्द ही को रचियो रास, चढे संग नूर है ।।9।।

त्रोटक छन्द

दीन मेघाराम अर्ज करे जट, राम प्रकाश हरो मम संकट् । अर्ज करू कर जोड़ खड़ा, जद राजीव चरण तोर पड़ा ।।
ध्यान धरूँ पर गम नाहीं, पर मिंत नाहीं प्रभु आप मिलाई । हारत हार ही बैठ गये अब, तार तरि ममृ मिलत ही कब ।।10।।

चौपाई

वेद ढिंढोरा पुराण अट्ठारा, शास्त्र वर्ण करे षट् न्यारा । अनन्त ग्रन्थ में ज्ञान अनूठा, आप बिना सर्व भासत झूठा ।।11।।

श्लोक

गुरु गौरवेणास्ति, यो विश्ववन्द्यः समस्तैर्जनैः सुनन्द्यः । प्रभा भाति यस्य प्रकाशस्य लोके, सः गुरु सदा मे रामप्रकाशयः ।।12।।
कोऽपि संसारस्य आपोत्परार्य जीवनं मे देहि देहि । सुखाः कुर्युः आनितावानेऽमत्वं प्रणवे रामप्रकाशकाः ।।13।।

अज्ञानी के समस्त कर्म विविध अहं की अपेक्षाओं के कारण होते हैं ।

आस्था

रचयिता - शालग्राम परिहार आर. ई. एस.
नेहरू कॉलोनी, बालोतरा (राजस्थान)

भारत भू पर अवतरित, राम प्रकाश जी संत । जिनके अपार ज्ञान का, कभी न होवे अंत ॥1॥
तत्वदर्शी आचार्य, संत श्री राम प्रकाश । वेदान्त दर्शन से, किया मानव उजास ॥2॥
शताब्दी वर्ष में, रोशन किया है नाम । समाधि स्थल जीर्णोद्धार, श्रेष्ठ हुआ है काम ॥3॥
मानव कल्याण की भावना, है उत्तम विचार । ज्ञान के उपदेश से, मिटाये जन के विकार ॥4॥
रामानन्दी श्री वैष्णव है, आपका सम्प्रदाय । संतों की पीढ़ियों का, नैतिक हुआ समुदाय ॥5॥
लेखनी के धनी, किया ज्ञान प्रकाशन । अपनी विद्वता से, किया इन्द्रियों पर शासन ॥6॥
सूर्यनगरी जोधपुर, ज्ञान आश्रम धाम । आध्यात्मिक चिन्तन का, करते रहते काम ॥7॥
पूरे राष्ट्र में ज्ञान की, अलख जगाई । ज्ञान पिपासु शिष्यों की, शंका सदा मिटाई ॥8॥
सत्य स्वरूप शिक्षा, रहा आपका नारा । अपने कर्म क्षेत्र से, बदली समाज की धारा ॥9॥

जब तक और तब तक

* जब तक तुम्हें अपना लाभ और दूसरे का नुकसान सुखदायक प्रतीत होता है, तब तक नुकसान ही उठाते रहोगे।
* जब तक तुम्हें अपनी प्रशंसा और दूसरों की निन्दा प्यारी लगती है, तब तक तुम निन्दनीय ही रहोगे।
* जब तक तुम्हें अपना सम्मान और दूसरे का अपमान सुख देता है, तब तक तुम अपमानित ही होते रहोगे।
* जब तक तुम्हें अपने लिये सुख की और दूसरे के लिये दुःख की चाह है, तब तक तुम सदा दुःखी ही रहोगे।
* जब तक तुम्हें अपने को न ठगाना और दूसरों को ठगना अच्छा लगता है, तब तक तुम ठगाते ही रहोगे।
* जब तक तुम्हें अपने दोष नहीं दिखते और दूसरों में खूब दोष दिखते हैं, तब तब तुम दोष युक्त ही रहोगे।
* जब तक तुम्हें अपने हित की और दूसरे के अहित की चाह है, तब तक तुम्हारा अहित ही होता रहेगा।
* जब तक तुम्हें भोग में सुख और त्याग में दुःख होता है, तब तक तुम असली सुख से वंचित ही रहोगे।
* जब तक तुम्हें विषयों में प्रीति और भगवान में अप्रीति है, तब तक तुम सच्ची शान्ति से शून्य ही रहोगे।
* जब तक तुम्हें शास्त्रों में अश्रद्धा और मनमाने आचरणों में रति है, तब तक तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।
* जब तक तुम्हें साधुओं से द्वेष और असाधुओं से प्रेम है, तब तक तुम्हें सच्चा सुपथ नहीं मिलेगा।
* जब तक तुम्हें सत्संग से अरुचि और कुसंग में प्रीति है, तब तक तुम्हारे आचरण अशुद्ध ही रहेंगे।
* जब तक तुम्हें जगत में ममता और भगवान में लापरवाही है, तब तक तुम्हारे बन्धन नहीं कटेंगे।
* जब तक तुम्हें अभिमान से मित्रता और विनय से शत्रुता है, तब तक तुम्हें सच्चा आदर नहीं मिलेगा।
* जब तक तुम्हें स्वार्थ की परवाह है और परमार्थ की नहीं, तब तक तुम्हारा स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा।
* जब तक तुम्हें धर्म से उदासीनता और अधर्म से प्रीति है, तब तक तुम सदा असहाय ही रहोगे।
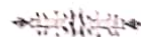
संसार में जन्म, व्याधि, जरा (बुढ़ापा) और मरण चारों महादुःख ही भवसागर है।

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्रीरामप्रकाशाचार्यजी महाराज की ध्वनिमुद्रित नई ऑडियो कैसेट्स

पूज्य आचार्य श्री की अमृतवाणी में गीता, भागवत, रामायण और वेदों का सार संकलित है। [illegible] का बार-बार श्रवण करने से जीवन में आध्यात्मिक रूपान्तरण होने लगता है, जीवन [illegible] बनने लगता है। जीवन में [illegible] उत्साह, क्रान्ति, निर्भयता, आनन्द और आत्मनिर्भरता आने लगती है। चिन्ता, हताशा, क्रोध, भय दूर हो जाते हैं। ऐसी जीवनोद्धारक योगवाणी, अमृतवाणी बार-बार सुनने के लिये पूज्य आचार्य श्री की कैसेटों का अवश्य लाभ लीजिए।

क्रम	विषय		स्थान
१.	नरसी भक्त की हुण्डी	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२.	राम भक्त निषाद	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३.	प्रेय और श्रेय का मार्ग		हनुमानगढ़
४.	परमात्मा की खोज		श्री गंगानगर
५.	भजन - स्वरचना		उत्तम आश्रम, जोधपुर
६.	भजन - स्वरचना		उत्तम आश्रम, जोधपुर
७.	भक्तों की महिमा	(प्रवचन)	उत्तम आश्रम, प्रांगण
८.	राम ते अधिक राम कर दासा	(प्रवचन)	उत्तम आश्रम, प्रांगण
९.	भगवत चिन्तन	(प्रवचन)	उत्तम आश्रम, प्रांगण
१०.	ध्रुव की अटल भक्ति	(कथा)	उत्तम आश्रम, प्रांगण
११.	शबरी के राम	(प्रवचन)	उत्तम आश्रम, प्रांगण
१२.	धर्म के दस लक्षण	(प्रवचन)	चुगलानी, सखर सिंध
१३.	जीवन में पाप और पुण्य	(प्रवचन)	चुगलानी, सखर सिंध
१४.	चार प्रकार के मनुष्य	(प्रवचन)	चुगलानी, सखर सिंध
१५.	नल दमयन्ति-१	(भागवत कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१६.	नल दमयन्ति-२	(भागवत कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१७.	आत्मा और जीवात्मा	(प्रश्नोत्तर)	घोटकी, सखर, सिंध
१८.	पाकिस्तान में हिन्दू धर्म	(प्रश्नोत्तर)	घोटकी, सखर, सिंध
१९.	पतिव्रता नारी	(प्रवचन)	घोटकी, सखर, सिंध
२०.	सत्संग स्वाध्याय	(प्रवचन)	आदलपुर, सिन्ध
२१.	नित्योपासना-१	(स्मृति)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२२.	नित्योपासना-२	(हनुमान बाहुक)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२३.	नित्योपासना-३	(सैलाणी, मुक्त पट्टा)	उत्तम आश्रम
२४.	गुरु गीता	(सस्वर)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२५.	कौमी एकता	(भाषण)	टॉउन हॉल, जोधपुर
२६.	गोपीचन्द कथा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२७.	मीनावती संवाद	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२८.	गोपीचन्द योगधारण	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२९.	गोपीचन्द मीनावती से भिक्षा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३०.	गोपीचन्द चंद्रावल संवाद	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३१.	गोपीचन्द की फकीरी भिक्षा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३२.	चन्द्रावलि की भिक्षा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३३.	गोपीचन्द चंद्रावली अंतकाल	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३४.	सूक्ष्म शरीर	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
३५.	सत्संग-सुमन-१	(प्रवचन)	[illegible]
३६.	सत्संग-सुमन-२	(प्रवचन)	[illegible]
३७.	सत्संग-सुमन-३	(प्रवचन)	[illegible]
३८.	महापुरुषों की अमृत वाणी	(प्रवचन)	[illegible]
३९.	मानस पूजा	(प्रवचन)	[illegible]
४०.	मन की वृत्ति	(प्रवचन)	[illegible]
४१.	ज्ञानी की अवस्था	(प्रवचन)	[illegible]
४२.	धर्म में अहिंसा	(प्रवचन)	[illegible]
४३.	जीवन और साधना	(प्रवचन)	[illegible]
४४.	जीवन के संचित पुण्य	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
४५.	सर्वकल्याणी सत्संग	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
४६.	ध्यानयोग	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
४७.	गृहस्थ में गीता	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
४८.	गई सो गई, अब राख ...	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
४९.	महापुरुषों की महानता	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५०.	कलियुग केवल नाम आधार	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५१.	भगवन्नाम महिमा	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५२.	अहम् ब्रह्मास्मि . . .	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५३.	कर्मों का फल भोगना ...	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५४.	शाश्वत सत्य क्या है ?	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५५.	सत्संगत सब आनन्द मूला	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५६.	व्यवहार में परमार्थ	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५७.	पुरुषार्थ परमदेव	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५८.	विधि का विधान	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
५९.	सचिव वैद्य गुरु तीन जो	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
६०.	पांच तत्व, पच्चीस प्रकृति	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
६१.	दिव्य प्रसाद	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
६२.	अमूल्य समय	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
६३.	अनाहद नाद	(प्रवचन)	रावला
६४.	महादुर्लभ सतगुरु मिलन	(प्रवचन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
६५.	प्रेम की भाषा	(प्रवचन)	गीता भवन, इन्दौर
६६.	नरसिंह भक्त की कथा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर

सतगुरु साधनोन्मुख परमात्मा का अद्वय भाव प्राप्त करना ही मुक्तावस्था है।

क्रम	विषय		स्थान
६७.	आस्था	(प्रवचन)	सोजत, पाली
६८.	उत्तम आरतियाँ	(आरती)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
६९.	अभ्यास और वैराग्य	(प्रवचन)	भड़साना, नई मण्डी
७०.	आज दिन उगो भलाई ए	(प्रवचन)	नई मण्डी
७१.	सद्गुरु सबका मूल	(प्रवचन)	भीमपुर-खारिया (जोध.)
७२.	साकेत शताब्दी समारोह, ९७	(प्रवचन)	हरियाणा
७३.	सर्वे भवन्तु सुखिनः	(प्रवचन)	हरियाणा
७४.	श्रीगुरु चरण सरोज रज	(प्रवचन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
७५.	गुरुत्व सार	(प्रवचन)	बालपुरा
७६.	नवधा भक्ति	(प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर
७७.	धर्म का सार	(रामायण प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर
७८.	मोह का नष्ट होना ही मोक्ष	(प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर
७९.	सत्य की खोज - १	(प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर
८०.	सत्य की खोज - २	(प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर
८१.	कर बिनु कर्म करहि बिधि नाना	(प्रवचन)	वजीदपुर
८२.	माँ की शिक्षा, मदन नारी	(प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर
८३.	आध्यात्मिक खजाना	(प्रवचन)	सांखरावाली (श्रीगंगानगर)
८४.	सत्संग के बिखरे मोती	(प्रवचन)	सांखरावाली (श्रीगंगानगर)
८५.	आत्मदर्शन	(प्रवचन)	सांखरावाली (श्रीगंगानगर)
८६.	चार प्रकार के जिज्ञासु	(प्रवचन)	सांखरावाली (श्रीगंगानगर)
८७.	मूर्ति पूजा, नीर क्षीर विवेक	(व्याख्यान)	सोनाणा, खेतलाजी
८८.	नकली साधुओं से सावधान	(चेतावनी)	सोनाणा, खेतलाजी
८९.	सईयो ! गुरु उत्तम हमारा ए	(कथावा)	हरियाणा
९०.	मोक्ष का सहज मार्ग	(प्रवचन)	अर्जुन आश्रम, जोधपुर
९१.	परम तप	(भक्त के लक्षण प्रवचन)	सूरतगढ़
९२.	उन्नति की ओर	(प्रवचन)	सरदारपुरा खालसा,
९३.	बड़े भाग मानुष तन पावा	(प्रवचन)	अजमेर
९४.	परमात्मा के चार धाम	(प्रवचन)	सूरतगढ़
९५.	सत्य और असत्य	(प्रवचन)	सांवतखेड़ा (हरियाणा)
९६.	पाप-पुण्य (कर्म से)	(प्रवचन)	सांवतखेड़ा (हरियाणा)
९७.	जड़-चेतन और ब्रह्म की व्याख्या		सांवतखेड़ा (हरियाणा)
९८.	परम पद की प्राप्ति	(प्रवचन)	सांवतखेड़ा (हरियाणा)
९९.	साकार और निराकार भगवान		श्री गंगानगर
१००.	सद्गुरु मिले अनन्त फल	(प्रवचन)	सरदारपुरा चक ८ के.एम.
१०१.	सनातन धर्म की जय	(धर्म व्याख्या)	मेड़तारोड (नागौर)

क्रम	विषय		स्थान
१०२.	अक्षय धन	(प्रवचन)	मोरपा (केकड़ी)
१०३.	कर्म में कुशलता	(प्रवचन)	मगराऊ (बाड़मेर)
१०४.	राम नाम महिमा	(प्रवचन)	देराठू, नसीराबाद
१०५.	सत चित् आनन्द	(प्रवचन)	नागौर
१०६.	प्रकृति की व्यवस्था का नाम ही ईश्वर है	(धर्म व्याख्या)	नागौर
१०७.	गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा)	(उपदेश)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१०८.	राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे	(प्र.)	कांदीवली (ई), मुम्बई
१०९.	बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता	(प्र.)	कांदीवली (ई), मुम्बई
११०.	हरि व्यापक सर्वत्र समाना	(प्रवचन)	कांदीवली (ई), मुम्बई
१११.	भगवान के रहने का स्थान	(प्रवचन)	कांदीवली (ई), मुम्बई
११२.	गुरु बिन भव निधि तरहिं न कोई	(प्र.)	कांदीवली (ई), मुम्बई
११३.	मानस में नवधा भक्ति	(प्रवचन)	कांदीवली (ई), मुम्बई
११४.	परमानन्द की प्राप्ति	(प्रवचन)	सूरतगढ़
११५.	गुरु शब्द का अर्थ	(प्रवचन)	सूरतगढ़
११६.	मन की वृत्ति	(प्रवचन)	रावतसर
११७.	साकेत शताब्दी समारोह	(प्रवचन) (०३ ई.)	जोधपुर
११८.	सत्य की खोज		रावतसर
११९.	आतम बोध लय चिन्तन		चक ७ बी.एल.डी.
१२०.	मानवता के आचरण		चक ७ बी.एल.डी.
१२१.	सामाजिक कुरीतियाँ और समाधान		चक ७ बी.एल.डी.
१२२.	सत्संग से भवपार		श्री गंगानगर
१२३.	भारतीय सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता		श्री गंगानगर
१२४.	पर्यावरण अध्यात्मवाद		श्री गंगानगर
१२५.	जीव की यात्रा - १		सरदारपुरा
१२६.	जीव की यात्रा - २		सरदारपुरा
१२७.	जीव की यात्रा - ३		सरदारपुरा
१२८.	पाप और पुण्य		सरदारपुरा
१२९.	भर्तृहरि कथा	(राज्य शासन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१३०.	भर्तृहरि न्याय	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१३१.	भर्तृहरि योगधारण	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१३२.	भर्तृहरि विक्रम से भिक्षा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१३३.	भर्तृहरि वैराग्य भिक्षा	(कथा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१३४.	उत्तम हेलियाँ		मोहन झाला
१३५.	उत्तम प्रभातियाँ		मोहन झाला
१३६.	उत्तम फकीरियाँ		मोहन झाला

जिन्हनुमानगढ़

स्वयं शुद्ध निरंजन स्वरूप में पंचभूत जन्य अन्य उपाधि प्रकृति (माया) कहाँ है ?

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद स्वामी श्रीरामप्रकाशाचर्यजी महाराज की नई विडियो कैसेट्स

क्रम	सन्	विषय	स्थान
१.	१९८६ ई.	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन हिन्दू धर्म व्याख्या	V.P.O. जूनेजा, जिला सांघड़, सिंध
२.	१ जून, १९९० ई.	आध्यात्मिक सत्संग शिविर – सतगुरु मूर्ति स्थापन, पंचरंग ध्वज उद्घाटन,	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३.	१ जून, १९९० ई.	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन – आचार्य सुबोध चरितामृत विमोचन	उत्तम आश्रम, जोधपुर
४.	१.२ जून, १९९०	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन – नगर परिक्रमा (शोभा यात्रा) एवं वैष्णवाराधन	उत्तम आश्रम, जोधपुर
५.	२० जून, १९९०	श्री वैष्णव गुरु पूजा दर्शन वार्षिकोत्सव - पूज्यश्री राघवाचार्य जी का प्रवचन	उत्तम आश्रम, जोधपुर
६.	२७ जुलाई, १९९०	श्रीवैष्णव षोडोपचार गुरु पूजा दर्शन श्री रामनेशाचार्य एवं श्री राघवाचार्यजी महाराज	उत्तम आश्रम, जोधपुर
७.	२० जून, १९९१	गुरु धाम पूजन दर्शन – पूर्वाचार्यों का पूजन एवं आचार्यगण का आश्रम प्रवास	उत्तम आश्रम, जोधपुर
८.	६-७ अप्रेल, १९९२	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन आचार्य श्री के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञान वाणी	उत्तम आश्रम, जोधपुर
९.	१७ सितम्बर, १९९४	श्री रामानन्दाचार्य का दिव्य चातुर्मास–कृष्ण पूजा तथा दाँतड़ा महन्तजी की पधरावणी	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१०.	६ सितम्बर, १९९७	श्री जानकी सत्संग भवन शिलान्यास (महापौर द्वारा भूमिपूजन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
११.	११ दिसम्बर, १९९७	श्री जीयारामजी साकेत शताब्दी समारोह (पूज्य अग्रद्वाराचार्य जी का आशिर्वचना)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१२.	८ फरवरी, १९९८	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन (रघुनाथ पीर, धूणा महोत्सव)	ढालोप, पाली
१३.	२१ फरवरी, १९९९	साध्वी श्री हीराबाई का वार्षिक उत्सव प्रवचन (दाँतड़ा महाराज की पधरावणी)	नागौर
१४.	६ जनवरी, २०००	आध्यात्मिक वार्षिक महोत्सव (पूज्य आचार्यश्री द्वारा प्रवचन)	कबीर आश्रम, वजीदपुर, पंजाब
१५.	१० जनवरी, २०००	संकीर्तन प्रवचन एवं शोभायात्रा (बाबा प्रेमदासजी का वार्षिकोत्सव)	कबीर आश्रम, वजीदपुर, पंजाब
१६.	२७ फरवरी, २०००	आध्यात्मिक सत्संग शिविर (सतसंग) प्रवचन - भजन	तांखरावाली, श्री गंगानगर
१७.	३ जुलाई, २०००	वार्षिकोत्सव सत्संग प्रवचन (पूज्य दाँतड़ा महन्तजी का आशिर्वचन)	रूपातरवास, नागौर
१८.	३१ मई, २००१	वार्षिकोत्सव सत्संग प्रवचन एवं शोभायात्रा (भेष दीक्षा, हरि संकीर्तन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
१९.	४ जुलाई, २००१	समाज के उत्कृष्ट कार्य (श्री अशोक गहलोत द्वारा आचार्यश्री को जयपुर में सम्मान)	रविन्द्रमंच, जयपुर
२०.	३० दिसम्बर, २००१	सत्यनारायण व्रत कथा प्रवचन	कागाऊ (बाड़मेर)
२१.	२५ फरवरी, २००२	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन स्वामी रामप्रकाशाचार्य	चक ७ BLD, श्रीविजयनगर, सूरतगढ़
२२.	२७ फरवरी, २००२	आध्यात्मिक संस्कार शिविर (सतसंग) प्रवचन - भजन	तांखरावाली, श्री गंगानगर
२३.	२८ फरवरी, २००२	आध्यात्मिक संस्कार शिविर (सतसंग) प्रवचन - भजन	तांखरावाली, श्री गंगानगर
२४.	२८ फरवरी, २००२	आध्यात्मिक संस्कार शिविर (सतसंग) प्रवचन - भजन	तांखरावाली, श्री गंगानगर
२५.	३० फरवरी, २००२	आध्यात्मिक सत्संग शिविर (सतसंग) प्रवचन - भजन	चक ७, सूरतगढ़
२६.	१८ मई, २००२	हरि संकीर्तन एवं सत्संग प्रवचन (प्रवचन दाँतड़ा, महन्तजी एवं आचार्यपीठ)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२७.	१९ जून, २००२	उत्तमरामजी की छतरी का लोकार्पण/वार्षिकोत्सव	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२८.	१९ जून, २००२	वार्षिकोत्सव सत्संग प्रवचन (पूजन एवं वैष्णवाराधन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
२९.	२० जून २००२	वार्षिकोत्सव समारोह (सामुदायिक सत्संग भवन का मुख्यमंत्री द्वारा लोकार्पण)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३०.	१८ अगस्त, २००२	गीता भागवत सत्संग प्रवचन पूज्य आचार्य श्री द्वारा वेदान्त की सटीक व्याख्या	कांदीवली (ई.) मुम्बई
३१.	१९ अगस्त, २००२	गीता भागवत सत्संग प्रवचन रामचरित मानस में धर्म की व्याख्या	कांदीवली (ई.) मुम्बई
३२.	२० अगस्त, २००२	गीता भागवत सत्संग प्रवचन रामचरित मानस में भगवान के रहने के तेरह स्थान	कांदीवली (ई.) मुम्बई
३३.	२० अगस्त, २००२	गीता भागवत सत्संग प्रवचन भागवत प्रवचन का समापन समारोह एवं हरि संकीर्तन	कांदीवली (ई.) मुम्बई
३४.	२८ अगस्त, २००२	श्रीमद् भागवत रहस्य कथा (समापन समारोह एवं पूजन दर्शन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३५.	३ अक्टूबर, २००२	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन (सतसंग) प्रवचन - भजन	सरदारपुरा खालसा (रावतसर)
३६.	४ अक्टूबर, २००२	आध्यात्मिक सत्संग प्रवचन (सतसंग) प्रवचन - भजन	सरदारपुरा खालसा (रावतसर)
३७.	२० फरवरी, २००३	स्वामी सुखराम साकेत शताब्दी समारोह (विश्व शान्ति हवन, शोभायात्रा)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३८.	२० फरवरी, २००३	स्वामी सुखराम साकेत शताब्दी समारोह (नगर परिक्रमा, पूजन दर्शन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर
३९.	२० फरवरी, २००३	स्वामी सुखराम साकेत शताब्दी समारोह (सत्संग प्रवचन)	उत्तम आश्रम, जोधपुर

संसार में सबसे अच्छा मित्र व साथी आपका अपना सात्विक निश्चय है।

गूदड़ गद्दी का सिक्का क्या है?

- स्वामी रामप्रकाशाचार्य

सनातन धर्म विशाल वट वृक्ष का परिपेक्ष्य स्वरूप है, जिस के मूल स्कन्ध में वशिष्ठ, पाराशर एवं व्यास का तपोबल फलित रूप से संरक्षित है, फलतः वेद विभाग, स्मृतियाँ, महाभारत एवं अट्ठारहें पुराण, गीता भाष्य, परम्परानुगत अथाह सत्साहित्य, विभिन्न सन्त प्रणालियों का सात्विकोपदेश का अपार बोध संचरित होता रहा। सभी सन्त मनीषी महापुरुषों की भिन्न-भिन्न शोध पृथक मान्यताएं, व्यवहारिक पहिचान एवं साधनाएं यद्यपि एक ही गन्तव्य स्थान पर पहुँचाती है, आत्म तत्व एक सत्य और पूर्ण बोध का एक मात्र लक्ष्य है, जहाँ नाना मत-पन्थ परम्पराओं की आवश्यकता नहीं है, तद्यपि दैहिक व्यवहार संचालन में मानव जीवन का प्रत्येक बिन्दु नियमों से अनुबन्धित है। जैसे प्रशासनिक विभागों में सर्वत्र नियम, प्रशिक्षण, पहिचान के प्रमाणिक चिन्ह हैं, वैसे ही सामाजिक, आर्थिक, व्यैक्तिक विकास की गतिविधियाँ भी पूर्णतः प्रभावित है। तैसे ही आध्यात्मिक अन्तर्निष्ठ एक तत्व होकर भी दम्भ-पाखण्ड प्रवृति को संयमित/रोक रखने या शास्त्रीय चर्चा-परिचर्चा कथाओं के व्यवसायीकरण को रोकने हेतु प्रबुद्ध विद्वज्जन सम्प्रदायाचार्य समूह ने पूर्वापर समय से परम्परा को नियमों सहित अनुबन्धों द्वारा अपनी-अपनी पहिचान अलग-अलग तौर-तरीकों से की है। उसी वागदाहिक शृँखला में पूर्वाचार्यों के दिये स्वरूप जगद्गुरु रामानन्दाचार्य से निर्वाहित छत्तीस द्वारों में प्रमुख (पन्द्रह द्वारों के मूल) अग्रद्वार प्रणाली में जगद्गुरु **स्वामी अग्रदेवाचार्य** जी महाराज से पाँच पीढ़ी बाद उसी परम्परा के **स्वामी सन्तदास** जी महाराज परम समर्थ नाम लिवारी, अकाट्य सिद्धान्त समर्थक सिद्ध महापुरुष दाँन्तड़ा में हुए हैं। जिन का प्रभाव अखिल राजस्थान में रामनामी मत पन्थ सम्प्रदायों के मूर्द्धन्य आद्याचार्यों पर पड़े बिना नहीं रहा। जिन्होंने अपनी जीवन शैली को गूदड़ी में ढाँप कर रखा था। हरिद्वार के कुम्भ में समुचित षड्दर्शन भेष भगवान को गुदड़ी से ही खुला भण्डारा दिया था। तभी से उनके अनुयायीजन को **गूदड/गूदड़िया** भेष के नाम से जानने लगे, ऐसे ही उन्हें **सन्तदासोत** या **"वैरागी"** भी कहते हैं। जिन्हें तत्कालीन दिल्ली बादशाह ने **गूदड़ बादशाह** के नाम का खिताब दिया था। गूदड़ी के लाल उन महापुरुष ने अपने हाथों जर्जर कन्था थेगल लगी गुदड़ी के साथ शीश पर धारण करने की टोपी भी वैसी ही बनाई। जिसे सम्प्रदायान्तर्गत साधुओं की पहिचान में **"सिक्का"** कहते हैं। जो शासकीय मुद्रा के महत्व की भान्ति साधु परम्परा के महत्व का प्रमाणित दर्शन है। **सिक्का तो सिक्का** ही होता है, हर जैसी गोल-मोल ओढनी, टोपी सिक्का नहीं हो सकता, उनका निर्माण तत्कालीन आद्य महापुरुष ने अपनी समुचित साधुशाही परम्पराओं को समेट कर तत्पूर्ति सिक्के में समाहित किया था, किन्तु उसको पहनने की इच्छा एवं पहिचान कम होने के साथ उस कलाकृति को बनाने वाला भी एकाध भाग्यशाली होगा, किन्तु कई बिना पुरुषार्थ केवल मुफ्त प्राप्ति की लालायित इच्छा जगाते है, जो वास्तविकता से परे है। इस सिक्के को प्राप्त करने के लिये वर्षों तक **भेष-सम्प्रदाय गुरु परम्परा के सन्तों की सेवा-सुश्रुषा** गुजार, सिफारिशें ली जाती थी, चूँकि इसके सारगर्भित रचनात्मक स्वरूप को जानने की अपनी ललक होती थी।

इस **सिक्का (टोपी)** की बनावट में बावन मोटे कोने के धागे चौकोर घर (खाने) होते है, जो कि **श्री वैष्णव सम्प्रदाय गत बावन द्वारा** की पहिचान करवाते हैं और **बावन गोपनीय रहस्य गुरु सूत्रों** से परिवेष्टित सच्चे साधु की पहिचान देकर कसोटी में दम्भ-पाखण्ड के भेष की निवृति परख देते हैं। उन बावन चौकोर घरों के बीच में **चार छोटे चौकोर खाने वैष्णव सम्प्रदाय** के शंख चक्र गदा पद्म के कलावतारी **चार शाखा आद्याचार्यों** के द्योतक हैं अथवा **चारों धाम** का अस्तित्व है। चारों वेद, **उपनिषद् महावाक्य** के प्रतिपादक हैं। यही **धर्म के चार स्तम्भ** स्वरूप **सत्य, दया, दान और जप** का दर्शनीय आधार है और उनके बीच-बीच एक बिन्दु रूप चिन्ह है, जो अपने इष्ट-उपासना का प्रतीक है। ऊपर कलंगी के पास चक्रवर्ती सात धागाएं सप्तपुरी की स्मृति में सर्व विश्व साम्राज्य का प्रतिपादन है। ऐसे सम्प्रदाय गत चारों धागाओं में अपने-अपने इष्ट, परम्परा प्रवाह के नियमों सहित **बावन स्थूल-शूक्ष्म** सूत्रों को अपने शीश पर धारण करके जीवन की पालना में उतारे, वही सच्चा **सन्तदासोत गूदड़िया साधु** हो सकता या होता है। केवल **सिक्का** धारण करने या **संतदासोत** अथवा **गूदड़िया** लिखने से सम्प्रदाय की धारागत पन्थ की गरिमा प्राप्त नहीं कर सकता। प्रथमतः मूल **जगद्गुरु रामानन्दाचार्य आचार्यपीठ गरिमा में आनन्द भाष्य रौप्य सिंहासन सहित दो छड़ी, छत्र साहित दो चँवर,** द्वितीय अग्रद्वाराचार्य (द्वार) **पीठ में दो छड़ी, दो चँवर,** तृतीय परिवाराचार्य (दॉन्तड़ाधाम) **पीठ में एक छड़ी, छत्तर, दो चँवर** एवं चतुर्थ **उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) में एक छड़ी, छत्तर, एक चँवर** का प्रतिबन्धित विधान है।

केवल शाब्दिक ज्ञान के लिये सतगुरु या कथा में जाना उचित नहीं है। व्यवहारिक शुद्धि एवं आचार निष्ठा चाहिये।

दीक्षा पर्वोत्सव क्यों?

- स्वामी रामप्रकाशाचार्य

भौतिकवाद की सृष्ठि में वंश परम्परा एक प्रकार के दैहिक अंश-संस्कार से बन्धा रहता है। वंशानुक्रम बिन्दु पीढ़ी में पिता-पुत्र से और नाद पीढ़ी में गुरु-शिष्य के मर्यादित सम्बन्ध का शास्त्रीय व्यवहार अनुबन्धित है। इस कारण शास्त्रानुसार वृद्ध-प्रबुद्ध के ऋण से उऋण होने के लिये युवा पीढ़ी (नाद-बिन्दु) युग्म सदैव लालायित रहती है अथवा उनके कर्तव्य में परमावश्यक कृत्य माने जाते हैं। प्रत्येक विन्दुज पुत्र या नादिक ब्रह्म पुत्र (शिष्य) अपने गुरुजनों के प्रति कर्तव्य पारायण होकर तन मन धन वाणी के चतुष्ठ्य साधन से सेवा-सुश्रुषा में खान-पान प्रभृत्य की व्यवस्था से जीवन की सफलता पाते हैं। चूँकि शरीर सम्बन्धी सांसारिक दृश्यानुभूति में प्रगतिजन्य जो कुछ ज्ञान-विज्ञान प्राप्त है, वह सब उन्हीं पूज्यों के कृपांकुर सौजन्य से ही उपलब्ध होता है। इस कारण इहलौकिक-पारलौकिक गतिविधि का निर्वाह ज्ञान भी उन्हीं से अवगत होता है। प्रत्येक सुजान बुद्धिमान सतसंग प्रेमी-विषयी, जिज्ञासु, ज्ञानीजन अपने पूर्वजों या पूवाचार्यों के प्रति शरीर रहते दैहिक व्यवहार निर्वाह करते हैं, वैसे ही शरीर दिवंगत होने पर भी वे अपना पारलौकिक कर्तव्य दर्शित करते अपनी आत्मिक सन्तुष्ठि प्राप्त करते हैं।

पारलौकिक प्रक्रिया निर्वाह करने में शास्त्रीय विधि से अनेक वैविध्य कर्म है, उनमें से मृत्युभोज, ब्रह्मभोज, गंगभोज, मौसर, औसर, सत्रहवीं, भण्डारा इत्यादि के पर्यायवाची नामों से जो कृत्य किये जाते हैं, शास्त्रों में उनके भी विभिन्न नियमोपनियम है। वस्तुतः और्ध्वदैहिक कार्यों के अतिरिक्त यह भी एक लौकिक विधि एवं शास्त्रीय प्रशस्त अनुज्ञा कही गई है।

(अ) विन्दुज सृष्टि में पिता परपिता (पितामह) आदि के लिये मृत्युभोजादि कब और क्यों करना चाहिये ? किसे करना चाहिए ? इस प्रसंग को **उत्तम प्रकाशन** से प्रकाशित **शव संस्कार दर्पण** (अन्त्येष्ठि कर्म) नामक छोटी पुस्तिका में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। जैसे -

(१) प्राचीन काल और अर्वाचीन काल के सामयिक मतभेदों से उचित-अनुचित दो पक्ष हैं। अपने-अपने तर्क पक्ष के भी दायरे न्यायोचित सीमित और उचित हैं। (क) धर्मार्थ कार्यों में उपयुक्त भोज अन्नदान का माध्यम है, जो लौकिक एवं पारलौकिक कर्मों में महत्वप्रद है। (ख) प्याऊ, धर्मशाला, छात्रावास, दवाखाना इत्यादि के माध्यम से दिवंगत महापुरुष का नाम भी अमरत्व पा सकता है।

(२) अश्रद्धा, ताना, ईर्षा, इच्छा, शौक, भाव, हीनता, निर्धनता, ऋण लेकर, दिखावा इत्यादि कारणों से किये गये लौकिक-पारलौकिक कार्य निष्फल या तामसिक गति की गणना में आते हैं, जो नहीं करने चाहिये। इनमें राजसी कार्यों को स्थान नहीं दिया है, चूंकि वह जीवित रहने के भोग्य कर्म है।

(३) माता-पिता, वृद्ध, दीन-हीन, असहाय, अबलाओं, गुरुजनों, पूर्वाचार्यों, सतगुरुओं के प्रति तन मन धन वाणी से जीवित रहते लौकिक सेवा कार्य एवं दिवंगत होने पर पारलौकिक और्ध्वदैहिक क्रियाओं को सदा सात्विक भाव पूर्ण, श्रद्धा-शक्ति के अनुसार, आस्थावान होकर शास्त्रीय मर्यादाओं में रहकर बगैर दिखावा, असूया रहित होकर हर्षोल्लास के साथ करने चाहिये।

(४) कोई भी लौकिक-पारलौकिक सेवा अनुसन्धान अपनी आर्थिक स्थिति देख कर करना चाहिये। कभी भी ऋण लेकर नहीं करना चाहिये, अन्यथा वह पुण्य ऋण देने वाले को ही जाता है।

(५) भारतीय संविधान मृत्युभोज निवारण अधिनियम के तहत ऋण देने वाला, ताना देने वाला, सम्मति देने वाला, कृत्य करने वाला कर्ता, सरपंच, ग्राम सेवक, पटवारी, तहसीलदार, पारिवारिक एवं क्षेत्रीय प्रशासनिक जन सभी अपराधीकरण की श्रेणी में आते हैं। अतः ऐसे कार्य सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामयिक, संवैधानिक

रूप से आधुनिक समय में दोषित कार्य माने जाते हैं ।

(६) किसी की मृत्यु का वार्षिक दिन मनाना भी एक मृत्युभोज के तुल्य ही संभावित कार्य है, वार्षिक बरसी के नाम से आरितक या पारिवारिक लोगों को आमन्त्रण देकर इकट्ठा करना, भोज देना भी उसी में गणना है ।

(७) शास्त्र सम्मत सर्वत्र मानसिक तीर्थ, त्याग, तप, श्रद्धा, संयम, सेवा, साधना इत्यादि के महत्व हैं ।

दृष्टव्य - सुखराम दर्पण (स्वामी सुखरामजी महाराज कृत वाणी १२/१ पद्यांश में तीर्थ व्याख्या के तीर्थ ग्राह्य है ।

(ब) अनेक विचारणीय बिन्दुओं पर समीक्षात्मक चिन्तन करने के बाद उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) में वि. सं. २०३४ आषाढ शुक्ल सूर्यनवमी शनि (२५ जून १६७७ ई.) के समय पूज्यपाद श्री स्वामी उत्तमरामजी के ब्रह्मलीन होने के अवसर पर ही घोषित कर दिया गया था कि -

(१) आज के युग में साधु-सन्त एवं सामाजिक सुधारवादी प्रबुध मनीषी कहते आये हैं और कहते जा रहे हैं कि मृत्युभोज के पर्यायवाची कोई कार्य नहीं किये जाने चाहिये तो यह वार्षिक बरसी भी उसी की गणित है ।

(२) उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ), कागामार्ग, जोधपुर में वर्तमान महन्त होने के नाते लिखित अनुशंषा, वसीयत, अन्तिम इच्छा के लेख-पत्र एवं वि.सं. २०४७ **ज्येष्ठ सुदि महेश नवमी** शुक्रवार दिनांक १ जून, १६६० ई. को जनसमूह में उच्च आचार्य गण पीठाधिश्वरों के समक्ष घोषित किया गया था कि हमारे या बाद में यहाँ होने वाले किसी भी सन्त-महन्त का न कोई सत्रहवीं, भण्डारा, मेला होगा और न ही कोई उस दिन को कभी वार्षिक त्यौहार या बरसी के रूप में ही मनाया जायेगा, केवल साधारण हरि संकीर्तन सतसंग/पूजा ही पर्याप्त है ।

(८) उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) में स्वामी उत्तमरामजी के दीक्षा दिवस को ही **प्रतिवर्ष में ज्येष्ठ सुदि महेशनवमी** को सभी पूर्वाचार्य स्मृति के स्वरूप में **दीक्षा पर्वोत्सव** मनाना उचित/स्थापन किया गया है, जो सदा के लिये वैध है ।

(क) यदि पूर्वाचार्य विद्वज्जन युगपुरुष सतगुरुओं के शब्दार्णव से दीक्षित नहीं होते तो आज कल्याणकारी युक्तियाँ हमारे तक नहीं पहुँच पाती, न ही हमारा अस्तित्व होता । अतः उस पैतृक ऋण, युगपुरुष गुरु स्मृति को उऋणता/प्रसन्नता के रूप में **वार्षिक दीक्षा महोत्सव** मनाया जाता रहा है और रहेगा, जो सभी तर्क कसौटी पर खरा संवैधानिक शास्त्रीय समाधान है । इस तरह सभी गुरु भक्तों को भी अपना मन्त्रोपदेश दीक्षा दिवस मनाना चाहिये । जन्म या मरण दिवस को लख चौरासी के सभी जीव सामान्य रूप से भोगते हैं, जिसका आध्यात्मिक महत्व या सामाजिक कोई शास्त्रीय औचित्य नहीं है ।

अवश्य पधारिये

प्रतिवर्ष ज्येष्ठ सुदि (शुक्ल) महेशनवमी की रात्रि सतसंग और अगले दिन गंगादशमी को **श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल में पूर्वाचार्यों की समाधियों पर पुष्पार्पण, आराधना, गद्दी पूजन एवं वैष्णवाराधन के लिये आप सभी साधु सन्तों सहित अमर सेवा सदस्य, भावुक, सतसंग, प्रेमीजन सादर आमन्त्रित हैं** । पावन गुरु अवसर पर परम्परानुयायी भक्तजनों-सन्तों को अवश्य पधार कर धर्म यश पुण्य भागी बनना चाहिये ।

सीमित साधन और अस्वस्थ स्वास्थ्य के व्यस्त जीवन के अकेलापन में समयाभाव इत्यादि अनेक कारणों से आप सभी तक पहुँच कर परामर्श करने, आमन्त्रित से निमन्त्रित करके चर्चा करने, योजना-विचार इत्यादि में हम अपने आपको पूर्णतया असमर्थ पा रहे हैं । इसलिये प्रस्तुत पत्र को अग्रणीय प्राथमिकता को आव्हान, **आमन्त्रण एवं हमारा प्रत्यक्ष आगमन-मिलन वत इस निवेदन पत्र को स्वीकार करेंगे। ऐसी आशा के साथ मंगल कामनाएँ संप्रेषित है ।**

निर्गुण सतगुरु आरती

जगमग जगमग होवे आरती, सतगुरु देव तुम्हारी है । सन्त गुरु परब्रह्म ईश्वर को, आर्त अर्ज हमारी है ।।टेर।।
थाल धरातल सुशोभित सुन्दर, मंजुल शोभा न्यारी है । सूर्य शशि तारागण ज्योति, दीप लगे हद भारी है ।।१।।
सिन्धु नदी तीर्थ जल झारी, परम सुखद गंग कारी है । पुष्प अपार विविध बहू पूजन, कमल गुलाब की क्यारी है ।।२।।
भूमि रज कुंकुम बहु रंगा, तिलक बना तैयारी है । वृक्ष गन्ध केसर मन भावन, बीज सहित बयारी है ।।३।।
षट् रस मेवा बहु भांति के, भोग लगे रस वारी है । वाणी पाँच जीव तन धर की, वन्दन करत हजारी है ।।४।।
शास्त्र वेद पुराण स्मृति, सिद्धान्त वेदान्त विचारी है । ऋषि मुनि अवतार सन्त जन, गावत स्तुति भारी है ।।५।।
सुर नर असुर गान्धर्व किन्नर सो, लगी भीड़ संसारी है । अनुपम अखण्डी अविरल आरती, हर दम साँझ सवारी है ।।६।।
दश बाजे शंख और शहनाई, लाग रही झणकारी है । विश्व रूप वैराट भाव में, श्रद्धा भक्ति पुकारी है ।।७।।
जागत सोवत ऊठत बैठत, दण्डवत परिक्रमा गारी है । श्वास उश्वास का जीवन धन सो, तन मन अर्पण थारी है ।।८।।
"उत्तमराम" समर्थ सत स्वामी, सच्चिदानन्द अपारी है । "रामप्रकाश" प्रणाम विधिवत्, सतगुरु की बलिहारी है ।।९।।

श्री सत गुरु परम्परा उत्तम आरती

ॐ जय गुरु देव हरे, स्वामी जय गुरुदेव हरे । आर्त जिज्ञासु ध्यावे (हित से), संकट दूर करे ।।टेर।।
"संतदास" संशय को काटे, समता रूप धरे । "कृपाराम" कृपा के सागर, प्याला ज्ञान भरे ।।१।।
"केवलराम" केवल मत पूर्ण, भ्रान्ति भ्रम हरे । "चतुरराम" चतुर मति शोधन, निर्मल बोध झरे ।।२।।
"दौलतराम" विश्व की दौलत, अखण्ड भण्डार सरे । "गंगाराम" गंगवत निर्मल, पाप रु ताप चरे ।।३।।
"हरिराम" हरे अघ सारा, शिव के रूप खरे । "जीयाराम" जीवन गति मुक्ति, सांख्य वेदान्त गरे ।।४।।
सो "सुखराम" सर्व सुखसागर, सत चित अनन्द अरे । "अचलराम" अचल अज आतम, अनन्त अखण्ड छरे ।।५।।
"उत्तमराम" उत्तम सत केवल, अपना आप परे । गूदड़-ज्ञान वैराग्य साधना, भूमि अवतरे ।।६।।
रामानन्द स्वामी की गद्दी, सत अवधूत जरे । धीरज धारणा राघव प्रेम को, विशिष्ठाऽद्वैत करे ।।७।।
गुरु प्रणाली योग अनादि, जानत मुक्ति तरे । "रामप्रकाश" प्राणाम प्रेम से, हरदम ध्यान वरे ।।८।।
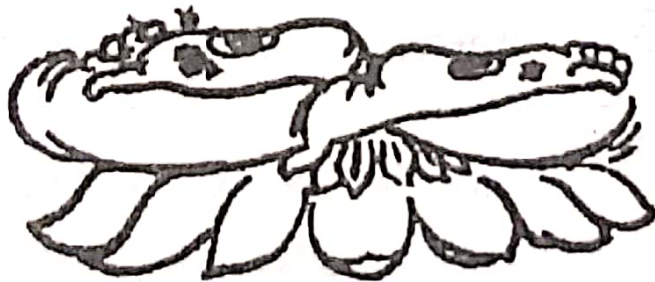
सतगुरु परम्परा मंगलाचरण

"हरिराम" ज्ञान गुरु गादि, सदा अचल अभंग ।
तिन के शिष्य "जीयारामजी", सो सुख रूप असंग ।।
सो "सुखराम" असंग, "अचलराम" ब्रह्मज्ञानी ।
"उत्तमराम" ब्रह्मरूप सो, ब्रह्मवेता सुखदानी ।।
तत्व पिछाण्यो आप में, ताहि प्रसाद विराम ।
"रामप्रकाश" भ्रम तम हन्यो, ज्ञान गादि हरिराम ।।१।।

"हरिराम" गुरुदेव को, "जीयाराम" प्रणाम ।
सुखसागर "सुखरामजी", "अचलराम" निष्काम ।।
"अचलराम" निष्काम, अद्वय अनन्त अपारा ।
"उत्तमराम" सोई तत्व लहि, भ्रान्ति भेद विडारा ।।
"रामप्रकाश" निष्ठाकरी, गुरु गद्दी विश्राम ।
वारम्वार कर जोड़ के, नमो नमो हरिराम ।।२।।

पाराशर "हरिरामजी", "जीयाराम" श्री व्यास ।
शुकदेव "सुखरामजी", अनुभव रूप आभास ।।
अनुभव रूप आभास, परीक्षित "अचलरामा" ।
जनमेजंय "उत्तमरामजी", गुरु पद सरिया कामा ।।
"रामप्रकाश" जन शरण में, निश्चय किया अपार ।
धन धन गूदड़ "गंग" को, "हरिया" ता शिष्य पार ।।३।।

"हरिराम" हर को नमो, "जीयाराम" जगदीश ।
सो "सुखराम" अनूप है, "अचलराम" शुद्ध ईश ।।
"अचलराम" शुद्ध ईश, फूल-नारायण दोई ।
"उत्तमराम" रू दया में, अचल भेद ना कोई ।।
उत्तम शिष्य गूदड़ गुरु, "रामप्रकाश" प्रणाम ।
बारम्बार कर जोड़ के, नमो नमो "हरिराम" ।।४।।

वेद, शास्त्र, सन्तवाणी और सतगुरुदेव की आज्ञा का पालन ही कल्याण मार्ग है ।

दूधाधारी सन्त श्लोक

उपकृतिरेव खलानां दोषस्य गरीयसो भवति हेतुः । अनुकूलाचरणेन हि कुप्यन्ति व्याधयोऽत्यर्थम् ।।

दुष्टों के साथ उपकार करना ही महान दोष का कारण होता है । जैसे रोग के अनुकूल आचरण करने से वह रोग और भी अधिक बढ़ता है ।

न परंफलति हि किंचित् खल एवानर्थमावहति यावत् । मारयति सपदि विषतरुराश्रयमाणं श्रमापनुदे ।।

किसी से फल या लाभ मिलने से पूर्व ही, दुष्ट व्यक्ति अनर्थकारी उपद्रव कर बैठता है, जिस प्रकार श्रम दूर करने के लिऐ विषवृक्ष का आश्रय लेने पर, वह विषवृक्ष आश्रय लेने वाले को मार डालता है ।

स्वार्थनिरपेक्ष एव हि परोपघातोऽसतां व्यसनमेव । अशनायोत्थया वा विरमति फणिनो न दन्दशतः ।।

दूसरों को बिना प्रयोजन ही पीड़ित करने का दुर्जनों को व्यसन होता है । जिस प्रकार अपनी भूख और प्यास के बिना भी सर्प किसी को काटना नहीं छोड़ता ।

एकीभावं गतयोर्जलपयसोर्मित्रचेतसोश्चैव । व्यतिरेककृतौ शक्तिर्हंसानां दुर्जनानां च ।।

घुलमिल कर एक हुए दूध और पानी को तथा एक हृदय बने हुए दो मित्रों को अलग कर देने की शक्ति क्रमशः हंस और दुर्जनों में होती है ।

शल्यमपि स्खलदन्तः सोढुं शक्येत हालाहलविषम् । धीरैर्न पुनरकारणकुपितखलालीकदुर्वचनम् ।।

शरीर के भीतर धँसते हुए विष बुझे बाण या काँटे को धीर पुरुष सहन कर सकता है, किन्तु बिना कारण क्रोधित हुए दुष्ट के मिथ्या दुर्वचन को सहन नहीं किया जा सकता अर्थात् दुर्जन के वचन जहरीले बाण से भी अधिक असह्य होते हैं ।

* भगवान् विष्णु का आश्रय ही संसारासक्त मन वाले लोगों के लिए संसार चक्र का नाश करने वाला होता है । इसी को बुद्धिमान् लोग ब्रह्मनिर्वाण सुख कहते हैं । अतएव तुम लोग अपने-अपने हृदय में स्थित भगवान् का भजन करो ।
* राग एवं क्रोध के समान आग नहीं, द्वेष के समान भूत-पिशाच नहीं, मोह के समान भयंकर जल नहीं और तृष्णा के समान भीषण नदी नहीं ।
* कौन तेरी स्त्री है ? कौन तेरा पुत्र है ? यह संसार अतीव है । तू कौन है ? कहाँ से आया है ? हे भाई ! इस तत्त्व पर सदा विचार कर ।
* स्वयं आत्म पर जय से बढ़कर अन्य कोई विजय नहीं है । वही है समस्त स्थायी सुखों का आधार ।
* जो बन्दगी सम्पूर्ण हृदय के साथ न हो वह निष्फल है ।

शारीरिक स्वास्थ्य और विश्राम के लिये गहरी नींद बहुत ज़रूरी है ।

श्रेष्ठ साधक के लक्षण

- आकाश में पतंगें लाखों में से एक दो ही कटती हैं। इसी तरह साधक साधना करते हैं, पर उनमें एक या दो ही भवबन्धन से मुक्त हो पाते हैं।
- योगी दो प्रकार के होते हैं - गुप्त योगी और व्यक्त योगी। जो गुप्त योगी होते हैं, वे गुप्त रूप से साधना-भजन किया करते हैं, लोगों को बिल्कुल पता नहीं चलने देते और जो व्यक्त योगी होते हैं, वे योगदण्ड आदि बाह्य चिन्ह धारण करते हुए लोगों के साथ आध्यात्मिक विषयों की चर्चा किया करते हैं।
- पौधों में साधारणतः पहले फूल आते हैं, बाद में फल। परन्तु लौकी, कुम्हड़े आदि की बेल में पहले फल और उसके बाद फूल होते हैं। इसी तरह साधारण साधकों को तो साधना करने के बाद ईश्वर लाभ होता है, किन्तु जो नित्यसिद्ध होते हैं, उन्हें पहले ही ईश्वर साधना का लाभ हो जाता है, साधना पीछे से होती है।

धन्यवाद

श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (कागा) **के निर्माण कार्यों** में श्रीमान् **रजत कुमार मिश्र, जिला कलेक्टर, जोधपुर, श्रीमान् राजेन्द्र सोलंकी,** अध्यक्ष नगर विकास न्यास, जोधपुर, श्रीमान् **डी. आर. गौड़** (XEn विद्युत विभांग), नगर विकास न्यास, जोधपुर, श्रीमान् **रमेशचन्द्र माथुर** (JEn विद्युत विभाग) नगर विकास न्यास, जोधपुर, श्रीमान् घनश्याम पँवार (सहायक अभियन्ता निर्माण) नगर विकास न्यास, जोधपुर द्वारा प्रशासकीय पत्राचार कार्य स्वीकृति में बाधाओं का निराकरण करने में सभी का परम सहयोग रहा ।

समाधियों पर पत्थर चुनाई, सीमेण्ट प्लास्टर कार्य में **मोहनराम** पुत्र श्री हेमाराम कड़ेला, डेरिया (निवासी) एवं **शिवकुमार** पुत्र श्री पैंपाराम लौवा, **शम्भुराम** पुत्र श्री खेराजराम लौवा, नाथड़ाऊ (निवासी), **किशोरराम** पुत्र श्री मोहमतराम भाटी (सामराऊ), **मोहनराम** पुत्र श्री गंगाराम परिहार (देवातु) द्वारा आवश्यकतानुसार अपना काम छोड़कर भी निर्माण/कारीगरी में रात-दिन सश्रम श्रमदान किया ।

श्रीमान् डॉ. **खेतलखानी, पूर्व प्रथम महापौर, नगर निगम,** जोधपुर, जिन्होंने **सुखराम शताब्दी** की अभूतपूर्व विशाल शोभायात्रा को हरी झण्डी दिखा कर नगर परिक्रमा का शुभारम्भ किया, उनके हार्दिक भावों का सराहनीय कार्य रहा ।

युग पुरुष अनन्त श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की रचना प्रकाशन/शताब्दी पर्वोत्सव/शोभायात्रा/वैष्णवाराधन इत्यादि में स्मृति जन्य सेवाऐं देने वाले सभी भक्त-भावुक भी इसमें हमारे साथ रहे हैं । ऐसे ही प्रशासन मण्डल में नगर निगम जोधपुर/जलदाय विभाग जोधपुर/ पुलिस परिमण्डल का भी सहयोग पूर्णरूपेण रहा ।

एतिहात कार्य प्रणाली **साकेत शताब्दी उत्सव आयोजन** में **ज्ञात–अज्ञात** (गुप्त-प्रकट) जिन महानुभाव सज्जनों का तन मन धन से सहयोग रहा, वे सभी परम धन्यवाद के पात्र हैं । परम सतगुरु देव से आशान्वित प्रार्थना करते हैं कि ऐसे आस्थावान भक्त श्रद्धालुओं को सक्षम शक्ति सहित परम दीर्घायु प्रदान करें कि उनसे नित्य परोपकार सेवा कार्य होते रहें ।

उत्तम आश्रम
स्वास्थ्य सेवा केन्द्र प्रांगण
कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर - ६
सीतानवमी, २०६० वि. सं.
सम्पर्क सूत्र -
फैक्स ☎ २५४७०२४
मोबाइल - ९८२९१ 07699

शुभाभिलाषी
स्वामी रामप्रकाशाचार्य "अच्युत"
श्रीमहन्त/अध्यक्ष
(१) सन्तदासोत साधु संस्थान
(२) मानव कल्याण समिति
दिनांक १० मई २००३, शनिवार

श्री वैष्णव रामावत सम्प्रदाय में गूदड़गद्दी जोधपुर के संस्थापक
अनन्त श्री हरिरामजी महाराज "वैरागी" की शिष्य पीढ़ि में
श्री श्री १०८ श्री समर्थ स्वामी जीयाराम जी महाराज के परम शिष्य तृतीय पीठाधिश्वर
सर्वश्री स्वामी सुखराम जी महाराज "वैरागी" की निर्वाण शती संग
परम शिष्य गद्दी पीठाचार्य श्री स्वामी अचलराम जी महाराज "वैरागी"
की दीक्षा शताब्दी के पर्वोत्सव में श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज
सहित समस्त आचार्यगण की स्मृति में आस्थावान सभी भक्तगण को हार्दिक शुभकामनाएं
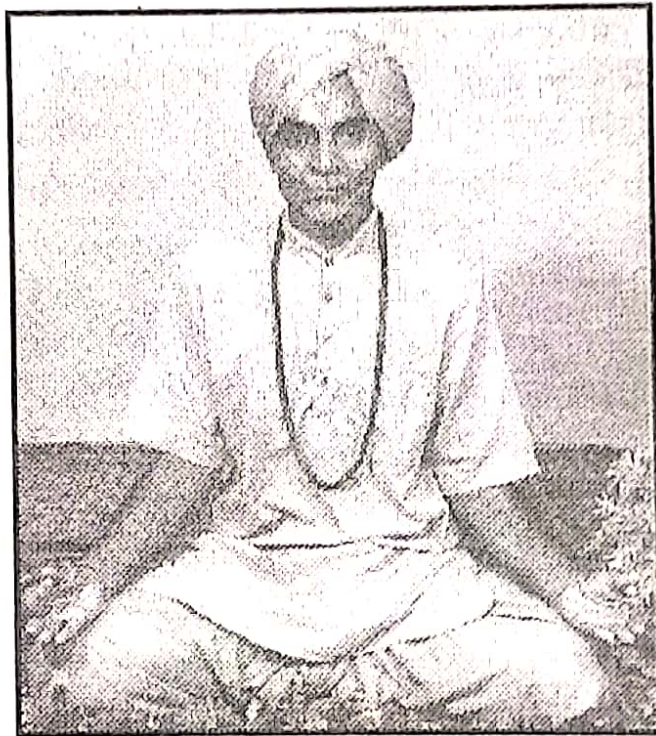
श्री स्वामी रणछोरामजी के पौत्र शिष्य एवं
श्री स्वामी सीतारामजी महाराज के शिष्य

संत केवलराम जी महाराज

संस्थापक – केवल अपरोक्ष आश्रम
मैलाचौक, सोजतसिटी–306104
सम्पर्क सूत्र – 02960–221082

श्री स्वामी केवलरामजी महाराज के शिष्य
संत ओमाचार्य (व्यवस्थापक)
संत पूरणराम

साध्वी पानीबाई आश्रम
मु. पो. कारोलिया वाया मारवाड़ जंक्शन–306001

शिष्य संत मोहनराम पौत्र शिष्य संत प्रतापराम
राम प्याऊ, पोस्ट पीपलिया कलां–306307

संगत कीजे साधु की, मुख से सुमिरो राम। सांची पत हृदय रखो, यही गृहस्थ का काम ।। – हरिसागर ६/१३

सत्यंवद
सदा सत्य बोलो
श्री वैष्णव विभिन्न गुरु
परम्परा मूल दर्शन
धर्मचरः
धर्माचरण करो
अनन्त श्री जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्यजी महाराज
स्वामी अग्रदासजी महाराज
प्रधान स्वामी संतदासजी महाराज
श्री स्वामी हरिरामजी महाराज वैरागी
श्री स्वामी सुखरामजी महाराज
श्री स्वामी
तत्वज्ञ श्री स्वामी रामप्रकाशजी महाराज
संगच्छद्ध्वम्
मिलकर चलो
उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ)
जोधपुर दर्शन
संवदध्वम्
मिल कर बोलो
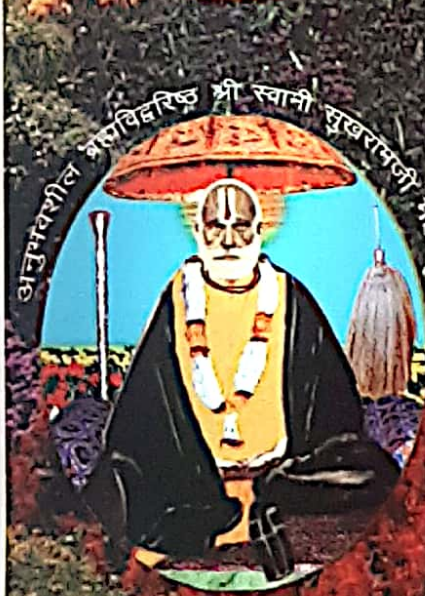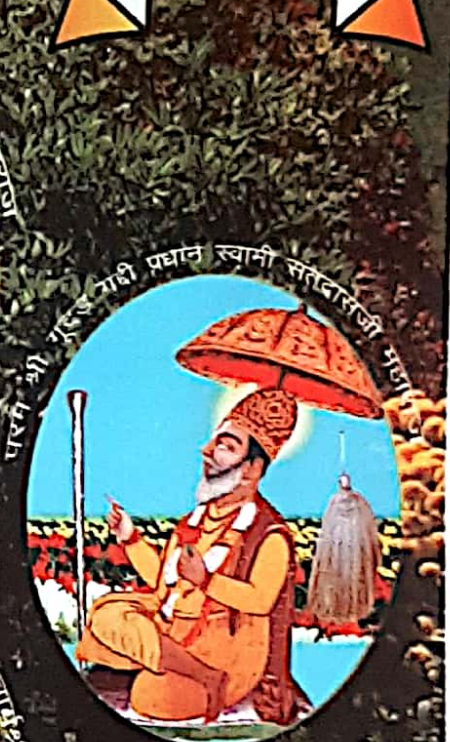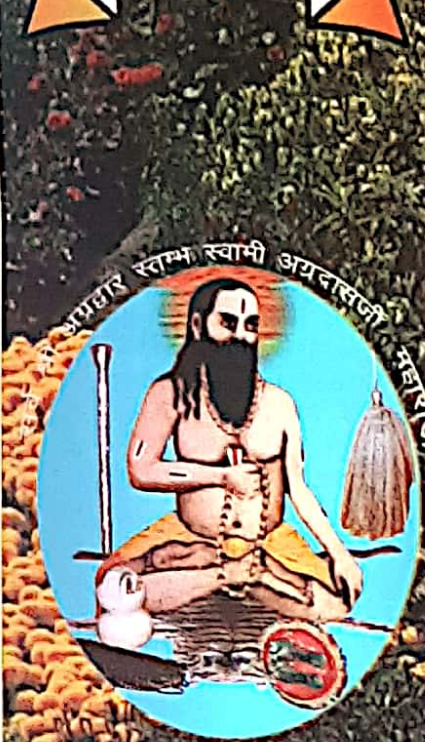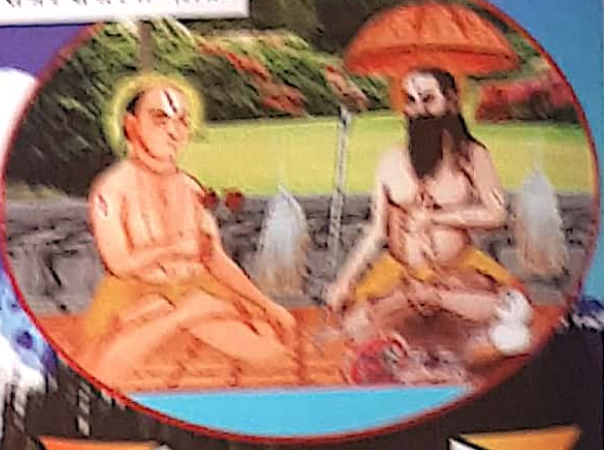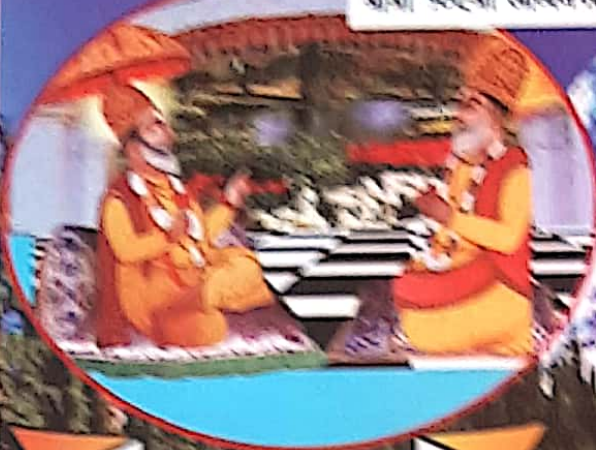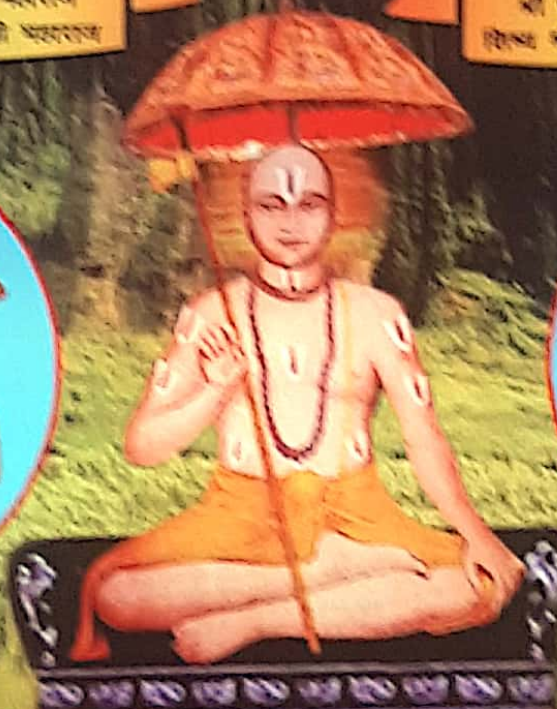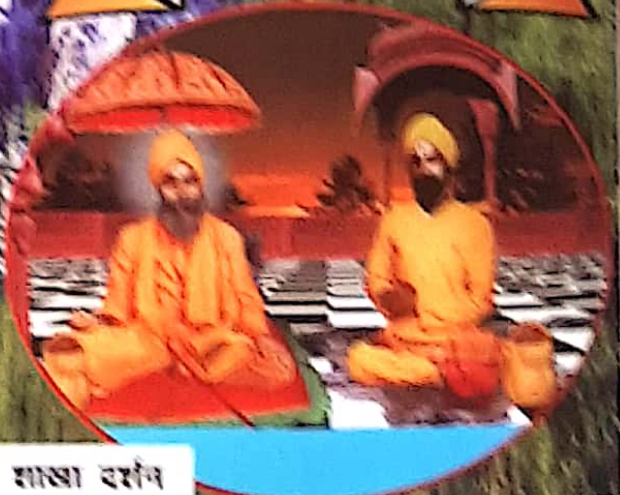
पीठ महिमा
श्रीराम
उत्तम आश्रम जोधपुर शाखा दर्शन

उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ) गूदड़गद्दी, जोधपुर का प्रगतिशील दर्शन

श्री सुखराम साकेत शताब्दी शोभा यात्रा सूरसागर से श्री वैष्णव संत स्मृति स्थल कागा में रात्री जागरण, साहित्य लोकार्पण, पूर्वाचार्य समाधि पूजन दर्शन

श्री सुखराम टांका पूजा मन्दिर एवं समाधि दर्शन

श्री स्वामी मुखिया घोवाजी के साथ
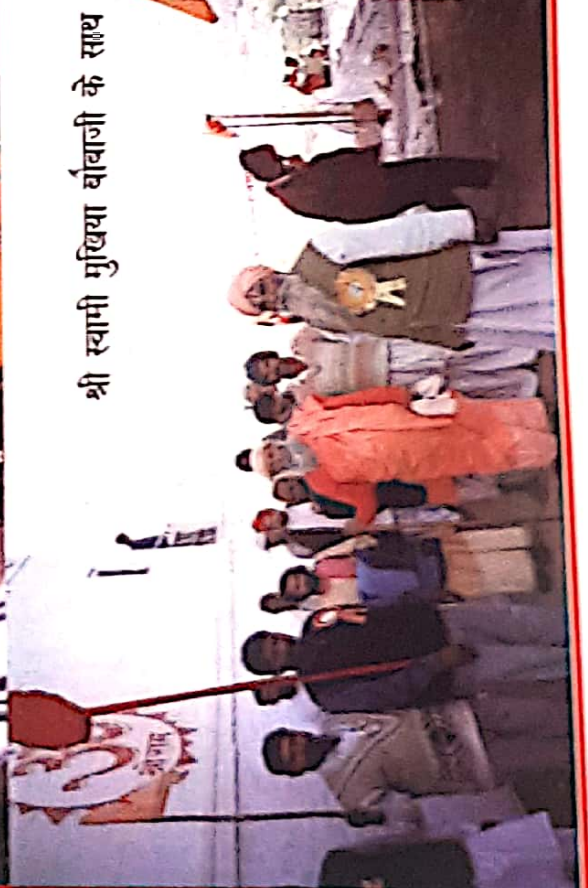
श्री स्वामी सुखरामजी महाराज साकेत शताब्दी सुरसागर से कागामार्ग स्थित प्रांगण तक के शोभा यात्रा का मंगलमय द्रश्य दर्शन

श्री सतगुरुवै नमः

अनन्त श्री स्वामी सुखरामजी महाराज "वैरागी" कृत श्री

उत्तम वाणी प्रकाश

अर्थात्

सुखराम दर्पण
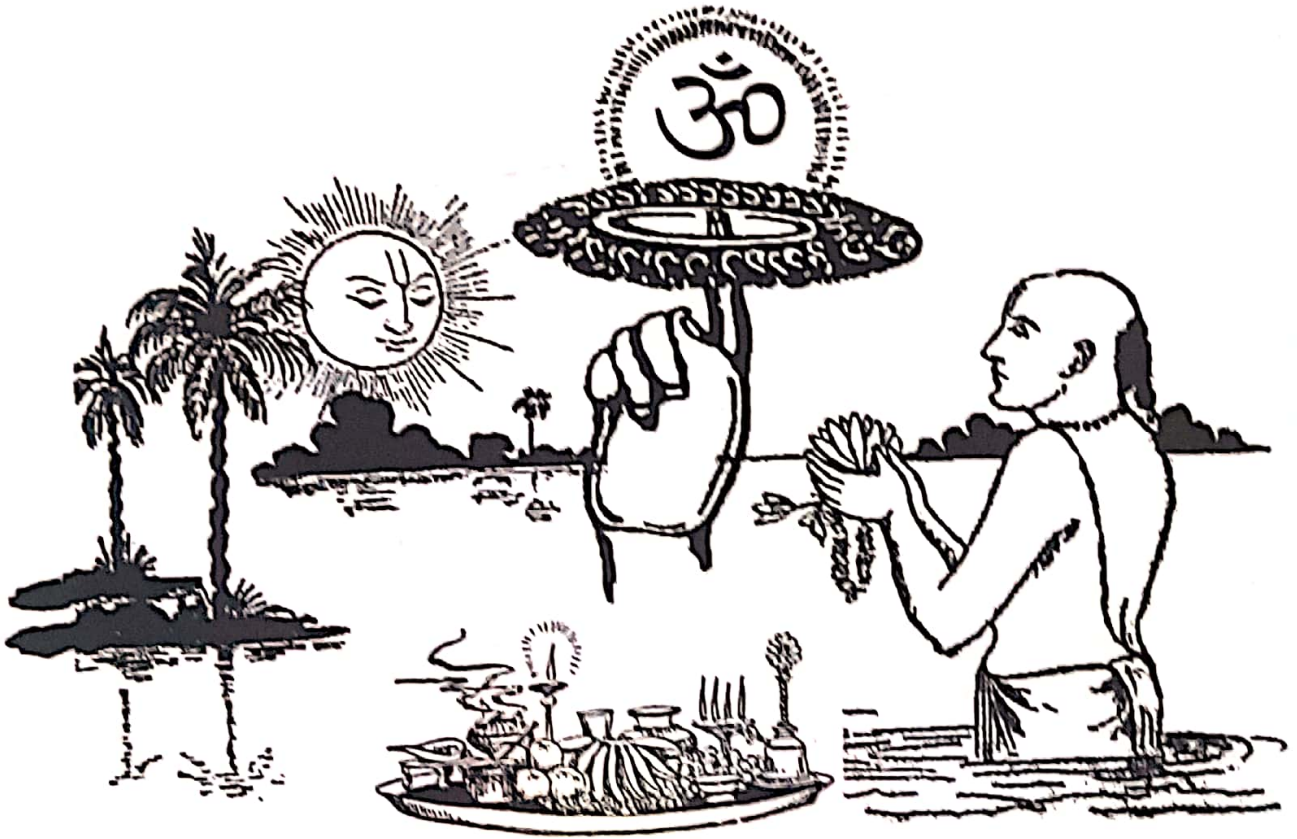
टीकाकार

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "अच्युत"

श्री महन्त - उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)

कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर – ३४२००६

उत्तम आश्रम, जोधपुर का प्रसिद्ध उत्तम साहित्य

ग्रन्थ	विवरण
१. आचार्य सुबोध चरितामृत	श्री सम्प्रदाय शोद्ध ग्रन्थ, ११८ गुरु शिष्य परम्परा पीढि दर्शन
२. सन्तदास अनुभव विलास	श्री दान्तड़ा धाम गुरु स्मृति वाणी, स्वामी सन्तदासजी महाराज कृत
३. हरिसागर	पच्चीस अंगों में ज्ञान भण्डार, स्वामी हरिरामजी वैरागी कृत
४. वाणी प्रकाश	आचार्यपीठ गुरु परम्परानुगत छः महात्माओं की अनुभव वाणी
५. अचलराम भजन प्रकाश	भक्ति ज्ञान वैराग्य का अनूठा भण्डार, ४२ भजन, सैलाणी सहित
६. उमाराम अनुभव प्रकाश	अचलरामजी महाराज द्वारा संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण
७. उत्तमराम भजन प्रकाश	(ग्लेज कागज) द्वितीयावृति विविध राग-रागनियों में अद्वय भजन
८. अवधूत ज्ञान चिंतामणि	विविध प्रक्रिया भजन, झूलना, इन्दव, दोहा, चौपाई
९. पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन)	गद्य-पद्य सहित सम्पूर्ण विवरण, काव्य-षोड्श कर्म, सचित्र विधि
१०. भारतीय समाज दर्शन	सनातन धर्म शास्त्र प्रमाणों साहित वर्ण व्यवस्था का प्राचीन एवं अर्वाचीन रूप
११. नशा खण्डन दर्पण	गद्य-पद्य में विवरण सहित २६ नशों की त्याग विधि, इतिहास, आदर्श शिक्षा
१२. विश्वकर्मा कला दर्शन	भूमि परीक्षा, विविध वेदान्त शब्दकोष, प्रश्नोत्तर, कला, मुहुर्त, पूजन अनुच्छेद
१३. रामप्रकाश शब्दावली	प्रश्नोत्तर भजन, वेदांत पदार्थ शब्द कोश
१४. रामप्रकाश शब्द सुधाकर	७ द्वीप, ४६ खण्ड भूगोल सहित अनुपम भजन, हरि गर्भ चेतावनी
१५. उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका	बेजोड़ गुरु-शिष्य के अनुभव युक्त २५१ भजन
१६. रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह	अनेक सन्तों की अद्वितीय २१ राम रक्षाऐं, साधन विधि सहित
१७. गुढार्थ भजन मंजरी	नियम सहित अनेक दृष्टान्त वं राश्यार्थ एवं कूटार्थ, गूढार्थ के २१६ दोहा, सटिप्पणी
१८. दैनिक चिन्तन डायरी	मानव जीवन में शिक्षा प्रद मनन योग्य, ३६५ दिनों में उत्तमोपदेश पठन
१९. आध्यात्मिक नीति निबन्ध	शिक्षाप्रद, विविध नैतिक उपदेश लेख पत्र
२०. स्वयं सिद्ध श्रीराम पूजा नवस्तोत्र	रामचरित मानस से संकलित मानस कामना सिद्ध, नित्य पाठ उद्धृत
२१. रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग)	छः सौ प्रश्नोत्तर, अनेक विधि विधानों सहित उपदेश दोहा
२२. एक लाख वर्ष का पत्राकार कैलेण्डर/ बासठ वर्षीय कैलेण्डर पेपर वेट में	ईसवी सन्, मास, तारीख, वार सहित
२३. उत्तम बाल योग रत्नावली	गद्य-पद्य में योग-वेदान्त साधना, कर्म, स्वर, ज्योतिष का योग
२४. स्वाध्याय वेदान्त दर्शन	सारूक्तावलि, विचारमाला, विचारचन्द्रोदय, विचार सागर, मूल ५ पाठ ग्रन्थ संग्रह
२५. देवीदान सुगम उपचार दर्शन	आयुर्वेदिक औषधि कल्पतरू
२६. सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)	स्वामी अचलरामजी द्वारा लिखित घरेलू जड़ी बूटियों का इलाज
२७. सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)	घरेलू जड़ी बूटियों द्वारा स्त्री-पुरुष गुप्त रोगों पर इलाज एवं निघण्टू कोष
२८. उत्तमराम अनुभव प्रकाश	३२१ भजन, वेदान्त, स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी द्वारा रचित
२९. उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली	कण्ठस्थ करने में सुलभ ७४८ दोहा छन्द एवं अनेक सारणियों सहित ज्योतिष
३०. वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन	भावरसामृत, वोधप्रकाश वैराग शतक सहित तीन मूल ग्रन्थ संग्रह
३१. उत्तमवाणीप्रकाश अर्थात् सुखरामदर्पण	स्वामी सुखरामजी का अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका सहित शताब्दी ग्रन्थ
३२. उत्तमवाणीप्रकाश अर्थात् सुखरामदर्पण परिशिष्ट भाग (दो खण्ड)	आध्यात्मिक सन्तवाणी वेदान्त शब्द कोष

उत्तम प्रकाशनाधीन — ISBN 81-88138-00-2 + ISBN 81-88138-01-0 (परिशिष्ट भाग)

सम्पर्क करें :- **उत्तम आश्रम**, कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

अपने शहर के प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता से खरीदें या डाक से मंगवाईये।

उत्तम प्रकाशन का उत्तम उपहार

उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका - इसमें स्वामी उत्तमरामजी महाराज के प्रचल्लित मुख्य चयनित भजन जो अधिकाधिक संगीत प्रेमी गाते हैं, वह संकलित प्रकाशन हैं । आगे स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी कृत वेदान्त सिद्धान्त की अपूर्व आध्यात्मिक भजनों में अद्भुत उपदेश सामग्री है ।

सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश - इसमें पूर्व प्रकाशित वाणी प्रकाश (छः महात्माओं की अनुभव वाणी) में छपे स्वामी सुखरामजी महाराज कृत चौरासी भजनों की प्रशंसनीय एवं दर्शनीय व्याख्या को **अलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका** द्वारा एक-एक शब्द के अनेकार्थ अन्वय, टिप्पणी, भावार्थ करके **शताब्दी ग्रन्थ** को रचयिता के निर्वाण हुए सौ वर्षों की स्मृति में पुष्पांजलि समर्पण है ।

परिशिष्ठ भाग दो खण्ड - यह सुखराम दर्पण का शेष भाग है, जो अलग जिल्द में दिया है, इसमें अनेकानेक सधुकड़ी भाषा में पद-काव्य भजनों के रचयिता अन्यान्य विभिन्न सम्प्रदायों के भारत प्रसिद्ध सन्तों की रचनाओं में आये कठिन शब्दार्थ जो साहित्य बाजार में प्रसिद्ध एवं उपलब्ध शब्द कोषों के कतिपय शब्दाऽभाव या अनुपलब्ध हैं । उन शब्दों पर सदैव सतसंग में शोद्ध के पिपासु गण सदैव वाद-विवाद, जिद्दोबहस में लगे रहते हैं । उनके लिये सर्वसुलभ निर्णायक तत्वबोध संकलित करके प्रस्तुत किये हैं ।

स्वाध्याय वेदान्त दर्शन - इस ग्रन्थ में पूर्वाचार्यों द्वारा नीति-बोध से प्रारम्भिक वेदान्त शास्त्र प्रवेशार्थ **सारुक्तावलि** (कवि सन्त हरदयालजी कृत), **विचारमाला** (सन्त अनाथदासजी कृत), **विचार चन्द्रोदय** (पण्डित पीताम्बरदासजी कृत), **विचार सागर** (स्वामी निश्चलदासजी कृत) एवं **ज्ञान कटारी** (कवि हरिसिंहजी कृत) इन पाँच ग्रन्थों का मूल पद्यात्मक संग्रह है और अन्त में भजन दिये हैं, जो पाठकों की सरल सामग्री है ।

वेदान्त भूषण वैराग्य दर्शन - इसमें भृतहरि महाराज कृत **वैराग्य शतक** का कवि हरदयालजी द्वारा अनुवादित भाषा काव्य के **तेरह अध्यायों** में विषय विगत करके कथन किया गया है । कवि संत गुलाबसिंहजी कृत **भावरसामृत** भक्ति, ज्ञान, नीति, पुण्य फल, संगदोष, प्रभु का प्रभुत्व और विधाता के दोषित कार्यों को भली प्रकार से कथन किया है । कवि सम्राट संत संगतसिंह जी कृत **बोध प्रकाश** ग्रन्थ में ज्ञान-साधनों का स्पष्ट विगत करते हुए तत्व **चिन्तन वेदान्त प्रवेश** किया है । इन तीन ग्रन्थों का अद्भुत संकलित प्रकाशन है ।

यह सभी श्री श्री १०८ श्री स्वामी श्री सुखरामजी महाराज की निर्वाण शताब्दी एवं परम पूज्यपाद परमगुरुदेव समर्थ स्वामी अचलरामजी की भेष दीक्षा शती पर भावाजंली में पुष्प अर्पित प्रकाशन है ।

सम्पर्क करें :- **उत्तम आश्रम (आचार्यपीठ)** कागा तीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

फैक्स © ०२९१ - २५४७०२४

अपने शहर के प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता से खरीदें या डाक से मंगवाईये।

सर्वाधिकार उत्तम प्रकाशनाधीन - ISBN 81-88138-04-5

MAKING AND COMPOSED BY BSP & MONAJ DIGITAL NETWORKS PRIVATE LIMITED #2639337, 2552182, JODHPUR